काठ का उल्लू और कबूतर

(हास्य-व्यंग का नवीन शिल्प-उपन्यास)

●

केशव चन्द्र वर्मा

साहित्य भवन लिमिटेड

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : सन १९५५ ईस्वी

चार रुपया

मुद्रक : रामआसरे कक्कड़, हिन्दी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद

इस पुस्तक में आये हुए सभी
पात्र और घटनाएँ कल्पित हैं। कोई
रिसर्च-बुद्धि कहीं कोई समानता
ढूँढ़ भी निकाले तो उसे मात्र
आकस्मिक ही समझना चाहिये।

५० ए०, टैगोर टाउन
एलाहाबाद
अगस्त ४, १९५५.

प्रिय विजयी,

यह उपन्यास उस 'थर्ड-ट्रांसमिशन' को सौंप रहा हूँ जो हमारे तुम्हारे अनन्त-गप्पाकाश के बीच रात-रात भर लहराता ही रहता था।

सस्नेह
केशव

भूत-पड़ोसी
श्री विजय देव नारायण साही
को सप्रेम।

पढ़ने से पहिले चंद हिदायतें

● इस किताब को आप एक ऐसी किताब मान कर पढ़ें जिसका जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है और यह गप्पों का एक संकलन मात्र है !

● इस किताब को आप सिर्फ एक कहानी मानिये—अखबार नहीं !! अखबार मानेंगे, तो आप उसमें खबरें ढूढ़ेंगे—वह इनमें न पाकर आप को घोर निराशा होगी; और चूँकि निराशावादी प्रयोग अब नहीं होते, इसलिये आप खीझकर कहेंगे यह क्या मज़ाक है !!

● इस किताब को पढ़ते वक्त कोई ज़रूरी नहीं है कि आप को हँसी ही आए—रुलाई भी आ सकती है ! मगर उससे घबराइएगा नहीं ! इस 'दवा' की दोनों प्रतिक्रियाएँ उचित बताई गई हैं ।

● इस किताब को दो साल पहिले लिखा गया था मगर अल्मारी के गर्भ से अब कहीं आप के हाथों में पहुँची है—इसलिये अगर कहीं अचार का मज़ा आये तो ख़ामख्वाह बिगड़ियेगा नहीं । आखिर वह भी एक स्वाद है !

× × ×

और जब शहर के घंटाघर ने सहसा टन् टन् करके दस का घंटा बजा ही दिया तो बहुत से जिद्दी-दिमाग़ लोगों को मजबूरन यह मान लेना पड़ा कि अब ऐसा वक्त आ गया है जब हर भलेमानुस को अपने बिस्तर पर पहुँच ही जाना चाहिए। घड़ियाल के मुतवातिर टनाटन की आवाज़ सुनकर अड़ियल परीक्षार्थी दीनदयाल ने अपनी मैथमेटिक्स की किताबों के आगे सर टेक दिया और मन ही मन इस वक्त हल किए हुए सवाल को अपनी तेज़ कल्पना के बल से इम्तहान के परचे में छपा हुआ देखते हुए बत्ती गुल करने के लिए उठ खड़े हुए। सड़क पर रामलाल हलवाई की दूकान के सामने पड़ी हुई बेंच अब एकदम खाली हो गई थी। अपनी जलती हुई भट्ठी के कोयले की आँच का उपयोग करने के लिए वह अब उसी के किनारे आकर बैठ गया था। हाथ पाँव सिंक रहे थे फिर भी जाड़े की रात तो हर तरह से जाड़े की ही रात थी! रामलाल हलवाई आज बहुत खुश था। तीन चार दिन की बनी हुई मिठाइयाँ रोज़ ताज़ा बता बता कर कहीं आज जाकर खत्म कर पाया था। इसी खुशी में अपने मन पर पत्थर रखकर उसने एक ईमरती बेचने से बचा ली थी जिसे उसने आज ही अकेले में अपनी श्रीमती को देने को सोचा था। सहसा उसे ध्यान आया कि जितनी आँच वह इस्तेमाल कर रहा था उससे कहीं अधिक पैसों का तो तेल ही गैस में जला जा रहा था। दस का घंटा वह सुन चुका था। सिनेमा देखकर लौटने वाले अपने साथ रावड़ी के कुल्हड़ ले जा चुके थे। सोच समझ कर उसने गैस गुल करने के लिए नीचे उतारा। कटाकट जाड़े वाले दिन थे। सरदी बढ़ती ही जा रही थी। ऐसी ही रात में दस बज चुके थे। हर आदमी, कोई किस्से कहानी पढ़ सुनकर, कोई बत्ती गुल करके, कोई खाट के नीचे आँच लगाकर, रज़ाई को इस तरह दबा कर कि उसमें से हवा जाने के लिए कहीं भी दराज़ न रह जाय, हर तरफ़ हर कोई सोने का ही उपक्रम कर रहा था।

ग़रज़ यह, कि सब तरफ़ सन्नाटे का आलम छा जाने की पूरी तैयारी हवा में दिखाई पड़ती थी। रात थोड़ी और आगे बढ़ी। कभी कभी रिक्शे वालों की तेज़ घंटियों के अलावा और सभी आवाज़ें अब डूबने सी लगीं थीं। आसमान में ठंडक की वजह से तारे भी दुबके दुबके से दिखाई पड़ रहे थे। एका एक पंखों की तेज़ फटफटाहट से आसमान का सन्नाटा टूट गया। एक कबूतर आसमान

में बेतरतीब चक्कर लगा रहा था। उसकी उड़ान से लगता था कि वह इस जगह में बिल्कुल नया है और यहाँ के बसेरों का उसे कुछ भी ज्ञान नहीं है! वह इधर उधर अपने डैने मार रहा था लेकिन कहीं भी इस जाड़े में उसके दुबकने की जगह दीख नहीं पड़ रही थी। सब तरफ़ दरवाज़े बंद। सब खिड़कियाँ बंद। सब तरफ़ घना अँधेरा। हर तरफ़ से ना उम्मीदी का आलम!

एकाएक एक रोशनदान से कुछ रोशनी आती दिखाई पड़ी। उसके मन में उम्मीद की मीठी लहर दौड़ पड़ी। कबूतर रोशनी की ओर बेतहाशा दौड़ पड़ा। उसकी मुराद पूरी हुई। मकान मालिक ने चोरों का ध्यान न करते हुए स्वास्थ्य का अधिक ख्याल किया था यानी अपना रोशनदान पूरा खोल रक्खा था। कबूतर के जी में जी आया। वह रोशनदान पर जा बैठा।

उसने देखा एक औरत जिसके एक अधपकी सी दाढ़ी भी है, एक कुर्सी पर बैठी हुई कुछ लिख पढ़ रही है। कबूतर की हिम्मत और बढ़ी। वह उड़कर अब कमरे की चहार दिवारी में आ गया। कमरा नए ढंग के मकान का अगला हिस्सा था। कबूतर की समझ से कमरा बड़े अजीब ढंग का था और उसे उतने ही अजीब ढंग से सजाया गया था। कमरे में सोफे भी थे और गद्देदार गोल मटोल तकिए भी। कमरे में जगह कम थी लेकिन फर्नीचर का ढेर था। कमरे में कुछ ऐसी रोशनी वाले बिजली के लट्टू लगे थे जिनसे तरह तरह की रोशनी वक्त ज़रूरत निकल सकती थी। एक तरफ एक रेडियो-सेट रक्खा हुआ था जिस पर इस ढंग से ओहार पड़ा हुआ था कि जैसे किसी नवेली बहू के मुँह से अभी घूँघट न हटाया गया हो। कबूतर जब थोड़ा और आगे बढ़कर एक अड्डे पर बैठने लगा तो उस जगह की दीवार हिलने लगी। गौर से उसने देखा तो पता चला कि कमरे की दीवारें और पर्दे एक ही रंग के थे और यह हिलने वाली चीज़ दीवार नहीं बल्कि एक पर्दा ही था। कमरे में कई अलमारियाँ भी थीं जिनमें अनगिनत किताबें भरी हुई थीं। किताबों को देखकर कबूतर को शक हुआ कि यह आदमीनुमा औरत वकील होगी लेकिन उन अल्मारियों पर इतनी गर्द थी कि उसे विश्वास हो गया कि यह रोज़ खोली मूँदी नहीं जातीं जिसका एक अर्थ यह है कि यह शख्स वकालती पेशे का नहीं हो सकता! कमरे में कुछ तस्वीरें भी थीं। इनमें कुछ पर तो सिर्फ़ चिड़िए चिरौंटों की शक्लें बनी हुई थीं। कबूतर को विश्वास हो गया कि इस मकान मालिक में हमारी जात बिरादरी के लिए थोड़ा सम्मान है! कमरे में इन सामानों के अलावा उसने कैलेंडरों की

पूरी लाइन लगी हुई अलबत्ता देखी ! इन कैलेंडरों पर किसी में किसी बिस्कुट कम्पनी और किसी शू फैक्टरी या जर्दा फैक्टरी के विज्ञापन और नोटिस छपे थे। इन सभी कैलेंडरों पर अलग अलग तस्वीरें थीं। एक पर गाँधी बाबा की तस्वीर थी, जिसे पहिचानने में कबूतर को देर न लगी। एक पर किसी दढ़ियल जोगी बाबा की तस्वीर थी जिसे कहीं उसने देखा ज़रूर था लेकिन पहिचान नहीं पा रहा था ! कैलेंडरों की इस अनोखी लाइन में और भी बहुतेरे कैलेंडर मौजूद थे। एक पर मार्क्स बाबा की फ़ोटो थी। कबूतर ने इसे बहुत जल्दी पहिचान लिया क्योंकि जिस अड्डे से वह उड़ा था वहाँ इस तरह की बहुत सी तस्वीरें थीं। एक कैलेंडर पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की तस्वीर थी जिसे कबूतर अपने बंगाल के दौरे में घर घर देख चुका था। एक कैलेंडर पर तो सिर्फ़ एक गाँव की खूबसूरत लड़की बनी हुई थी। एक पर एक राजा साहब अपने घोड़े पर सवार दिखाई पड़ते थे। एक कैलेन्डर पर सनलाइट साबुन का विज्ञापन था और उस पर लक्ष्मी का चित्र बना हुआ था। इस कैलेन्डर पर एक माला भी चढ़ी हुई थी ! सब कैलेन्डर साल साल भर के अंतर के हिसाब से लगे हुए थे !

कबूतर अपनी गर्दन घुमाता गया और जो कुछ भी नक्शा इस कमरे का देख सकता था, उसने चटपट देख डाला। इसी बीच वह औरत उठ खड़ी हुई। अपनी दाढ़ी और बालों को एक बार सम्हालते हुए उसने उठकर अल्मारी में लगे शीशे में अपना मुँह देखा और आँख पर का चश्मा उतार कर ऐनक के बक्स में रख दिया। कबूतर की निगाह तब तक उठकर कमरे के आतशदान पर जा पड़ी। उसने देखा कि आतशदान पर बहुत से ऐसे सामान सजे हुए थे जो जादूगरों के बक्से में दिखाई पड़ते हैं—तरह तरह के संख, घोंघे, सीपियाँ, शीशे की बोतलों में खरपतवार के बीच तैरती हुई कागज़ी मछलियाँ, बड़े बड़े सुराही-नुमा गुलदस्ते, और न जाने क्या क्या सामान करीने से सजाए हुए धरे थे। उसी के बीच कबूतर ने देखा कि खूबसूरत ढंग से कटा सँवारा हुआ एक काठ का उल्लू भी उसी आतशदान पर रक्खा हुआ है। कबूतर ने उस काठ के जीव को ध्यान से देखना शुरू किया तो उसे ऐसा लगा कि वह लकड़ी का उल्लू कबूतर को अपनी तरफ़ अपनी गर्दन हिला हिला कर बुला रहा है। बेचारा कबूतर डर गया लेकिन उसने फिर तत्काल ही सोचा कि जिस घर में औरतों के दाढ़ी हो सकती है, उस घर में काठ का उल्लू बोल भी सकता है !

सोच समझकर कबूतर अपनी जगह से उड़ा और उड़कर आतशदान पर आ बैठा। दाढ़ीदार औरत बग़ल के कमरे में सोने के लिए चली गई।

काठ के उल्लू ने फुसफुसा कर कबूतर से पूछा—

'ए मेरे भोले बिरादर! तू इस सुनसान अँधियारी बियाबान रात में कहाँ से आन टपका है?

कबूतर ने जवाब दिया—

'ए मेरे काठ के उल्लू दोस्त! मैं सफ़र में हूँ और अपनी रात काटने के गरज़ से तेरे दर पर आन पड़ा हूँ। तू मुझ पर रहम कर और रात भर यहीं डेरा करने की इजाज़त दे।'

काठ के उल्लू ने कहा—

'ए मेरे प्यारे दिलकश नौजवान, तूने अपनी दिलहर बातों से मेरा मन लुभा लिया है! अपने राहगीर भाई को अपने घर में आया देखकर भला मैं जाने की बात भी करने दूँगा? तू मेरी पलकों पर बसेरा कर। लेकिन मुझे यह तो बताने तकलीफ़ गवारा कर कि तू भला कहाँ से चक्कर लगाता हुआ इस शहर में आन पड़ा है?'

कबूतर ने अपना स्वागत होते देखकर चैन की साँस ली। पंखों को ढीला करते हुए उसने जवाब दिया—

'ए मेरे बुजुर्गवार दोस्त, अगर तुझे यही जानने की दरकार है तो मैं तुझे यह जरूर बताऊँगा। तुझे शायद ख़बर न मिली हो लेकिन मुझे पंडित जी ने इंदौर की नगरी में कुछ लड़कों के कहने से शाँति के नाम पर उड़ाया था और उन्हें समझाया था कि असली शाँति कबूतर उड़ाने से नहीं, बल्कि उसके लिए काम करने से आती है! खैर। मैं जो हाथों से उड़ा, तो जाने कहाँ कहाँ की खाक छानने के बाद आज इस शहर में आ पड़ा!'

काठ का उल्लू कबूतर की यह बातें सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने कबूतर को और पास खिसक आने के लिए कहा ताकि रात की सर्दी का कोई असर उसके ऊपर न हो। कबूतर ने बगल के दरवाज़े का पर्दा भी अपने पंखों की मदद से अपने ऊपर डाल लिया था और वह अपने आप को सर्दी से एकदम महफ़ूज़ समझता था।

काठ के उल्लू ने खुशी जाहिर करते हुए कहा—

'ए मेरे दोस्त ! तू कितना खुशनसीब है कि तुझे बड़े बड़े लोग उड़ाते हैं । एक मैं हूँ कि बराबर घर की चहारदिवारी में ही कैद पड़ा रहता हूँ ।'

कबूतर ने जवाब में कहा—

'ए दोस्त ! यह सच है कि मैं देस देस घूमता फिरा लेकिन तुझे बराबर एक ही जगह जमकर रहने का जो लुत्फ़ मिला, वह मुझे कभी नसीब न हुआ । तुझे तो यहाँ रहते हुए काफी दिन होगए होंगे । मेरी बिनती है कि तू कुछ अपनी आँखों देखी सुना ताकि हम दोनों की सारी रात आराम से कट जाय और सुबेरा होते होते मैं परमात्मा का नाम लेकर यहाँ से रवाना हो सकूँ ।'

कबूतर ने अपनी बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए काठ के उल्लू से यह जानना चाहा कि उसकी मालकिन क्या काम करती है !

काठ का उल्लू कबूतर की बातें सुनकर हँस पड़ा । खुस्स खुस्स करके उसकी अजीब सी हँसी उस अंधेरे वातावरण में फैल गई । कबूतर कुछ बोले बोले उसके पहिले ही काठ के उल्लू ने अपनी हँसी खत्म करते हुए कहा—

'ए मेरे भोले परदेसी कबूतर ! यह मेरी मालकिन नहीं बल्कि मालिक है ! इस घर ने तो आजतक मालकिन का मुँह भी नहीं देखा है ।'

कबूतर काठ के उल्लू की बात सुनकर एकदम भौचक्का रह गया। उसने अजब सा गोल मुँह बनाकर बड़ी जिज्ञासा के साथ पूँछा—'ए मेरे बुज़ुर्गवार काठ के उल्लू ! भला ऐसा क्यों कर हुआ कि इस घर ने आजतक मालकिन का मुँह भी न देखा ?

काठ के उल्लू ने कहा—'तूने तो बहुत दुनियाँ देखी होगी मेरे भोले बिरादर ! तेरा ऐसा पूछना वाजिब नहीं लगता ! लेकिन जब तूने मुझसे ऐसा अनोखा सवाल पूछ ही डाला है तो मैं तेरा जवाब ज़रूर दूँगा क्योंकि आज की रात तू मेरा मेहमान है और मेहमान के वास्ते सब कुछ करना चाहिए, ऐसा कहा गया है ।'

कबूतर ने हिम्मत करके एक सवाल और पेश किया ।

'ए मेरे रात काटने वाले दोस्त ! तूने मुझे यह कहानी सुनाने का जो वादा किया है, उसके लिए मैं तेरा शुक्रिया अदा करता हूँ लेकिन मैं तुझसे यह भी जानना चाहता हूँ कि इस घर में इतने पुराने कैलेंडर एक साथ क्यों लटके हैं और इस एक खास कैलेंडर पर माला क्यों पड़ी है ?'

काठ के उल्लू ने लकड़ी के भीतर मुस्कराते हुए जवाब देना शुरू किया—

'सुन कि मेरे नौजवान कबूतर ! तूने जो सवाल पूछा है, यही तो इस घर का सारा राज़ है ! यह एक ऐसा राज़ है जिसे इस नगरी के सभी लोग जानते हैं ! लेकिन तू चूँकि बाहर से आया है इसलिए तू इन तारीखी जंत्रियों के बारे में, जिन्हें तू कैलेंडर कहता है, कुछ भी न जानता होगा ! तो सुन ! ए मेरे प्यारे बिरादर कबूतर ! तेरे दिल की ख्वाहिश पूरी करने के लिए मैं तेरे रूबरू एक निहायत दिलचस्प किस्सा सुनाता हूँ !'

कबूतर ने अपने कान खड़े कर लिए और इसके लिए तैयार हो गया कि उस कमरे और कमरे के मालिक का राज़ उसके कानों में चुपचाप पहुँच जाय !

●

किस्सा सोहबत का असर

उर्फ़

देवर भौजाई के इश्क की दास्तान

काठ के उल्लू ने कहानी शुरू की।

'ए मेरे लक्का कबूतर। अपना मनचित्त लगाकर यह कहानी सुन क्योंकि यह विचित्र नगरी की कहानी है और तू जिस नगरी में आन पड़ा है वहाँ के रहने वाले इससे भी विचित्र हैं। मेरा मालिक इसी नगरी का पैदाइशी रहने वाला है, इसलिए उसके भी अजीब होने में तुझे कोई अजूबा नहीं होना चाहिए।

मेरे मालिक का नाम शिवचरन है। इस वक्त फ़िलहाल होते करते यह किसी बंक का मुनीजर बन गया है। जैसा कि तुझे पता होगा, बंक के मुनीजरों को अच्छी ख़ासी तनख्वाह मिलती है। जब से यह बंक का मुनीजर हो गया है तबसे इसके दरवाज़े पर व्यौपारियों का ताँता बँधा रहता है क्योंकि उन सब का कारबार इसी के बंक के सहारे चलता है। कितने ही व्यौपारी दूर दूर से चलकर इससे मिलने आते हैं क्योंकि यह मामूली मुनीजर नहीं, सभी बंकों में इसका बड़ा रोबदाब है! ए मेरे दोस्त! इतने से ही ताज्जुब न करना। शिवचरन बड़ा कारनामे का आदमी है। बंक की मुनीजरी के साथ साथ यह आदमी शायरी भी करता है और इस नगरी में यह शायर के नाम से भी जाना जाता है!'

अब तो कबूतर सचमुच ही आश्चर्य करने लगा। 'तो क्या बंक की मुनीजरी के साथ साथ यह आदमी शायरी भी करता है? यह तो बड़े अचरज की बात तूने बताई! कहाँ शायरी और कहाँ बंक की मुनीजरी? वाह अच्छी कही!'

'हाँ मेरे दिलरुबा कबूतर! इसमें ताज्जुब करने की बात नहीं। शिवचरन का नाम तो दूर दूर तक फैल गया है! हर व्यौपारी के यहाँ दिवाली के दिन यह अपनी शायरी में नए साल की बधाई और व्यौपार में लाभ होने की आसीस लिखकर भेजता है! बड़ा कमाल हासिल है इसे! चटपट—शायरी बनाता है, हाँ!!' अबकी काठ के उल्लू ने अपनी 'टोन' में वह रस पैदा किया जिससे पता चलता था कि वह भी शिवचरन का लोहा इस मामले में मानता था!

'मेरे मालिक के पास बहुत से लोग आते जाते उठते बैठते रहते हैं। वह सबकी बातें गुट्टर गुट्टर सुनता रहता है और कभी कभी उन सबका असर इस पर पड़ जाता है। मेरा मालिक शिवचरन इन्हीं सब की संगत से बराबर बनता बिगड़ता रहता है!

'ए मेरे रात के मेहमान ! तुझे यह पता होना चाहिए कि आदमी हमेशा संगत के सहारे ही बनता बिगड़ता है।'

कबूतर ने काठ के उल्लू की बात काटते हुए पूछा—

'ए मेरे बुजुर्गवार दोस्त ! तेरी बात मैं भला क्यूँ कर मान सकता हूँ जब तक तू मेरे सामने इस बात को साबित करके न बताए !'

काठ के उल्लू ने कहा—'ए मेरे कमसिन हसीन दोस्त ! तू मेरी बात को काट कर अपना धीरज न खो ! आदमी को खाना खाने और किस्सा सुनने में कभी जल्दी नहीं करनी चाहिए नहीं तो दोनों का लुत्फ़ ख़त्म हो जाता है। आदमी पर संगत का असर कैसे और किस तरह से आन पड़ता है, यह बात मैं तेरे रूबरू अभी बयान करता हूँ।

'मेरा मालिक शिवचरन जब चार बरस का था, तब इसके जन्मदिन पर इसके मामा ने मुझे लाकर इसे दिया था। तब से मैं आज तक इसके साथ रहा हूँ और मैं यह अच्छी तरह जान गया हूँ कि सोहबत का असर इस आदमी के ऊपर कैसे कैसे उतरता रहा है ! जैसा कि तू समझता ही होगा, आदमी का बचपना ही सबसे अच्छा और सबसे बुरा होता है ! कहा गया है कि बचपन से ही आदमी अच्छा बन सकता है और बचपन से ही आदमी में बुराई की जड़ें पुख्ता होती हैं। सो इस शिवचरन को बचपन में लट्टू नचाने, गोली खेलने, कौड़िल्ला फेंकने, ताश खेलने और पान खाने की लत एक के बाद दूसरी पड़ती ही चली गई और इस तरह बुराई की जड़ें पुख्ता हुई। मुहल्ले के लौंडों चक्कर में पड़कर शिवचरन एक दम तबाह हो गया और इसने जैसा कहा गया है, अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार कर ही चैन की साँस ली। शिवचरन को जब मार-पीट कर स्कूल भेजा भी जाय तो वह छिपकर अमरूदों की बगिया में भाग जाया करे और वहाँ जाकर दस पाँच लड़कों को बटोर-कर 'हरीगंज' खेला करे। ए प्यारे ! इस लड़के ने वहाँ लौंडों की संगत में सिगरेट पीना भी सीख लिया। सिगरेट पीने पिलाने के लिए यह घर से पैसे चुराकर ले जाता था और दिन में वही पैसे, मेरे नीचे दबा जाता था ! धीरे धीरे इसने कई साल में अपनी गाड़ी खींच खाँच कर दसवें दर्जे में ला खड़ी की !

'इस दसवें दर्जे में आकर मेरे मालिक शिवचरन की दोस्ती एक दूसरे मुतफ़न्नी लौंडे से हुई जिसका नाम था रतनलाल। यह रतनलाल उसी स्कूल में पढ़ता था और मेरे मालिक के दरजे में था। रतनलाल आवारा था। उसके

घरवालों का कोई पता न था और वह अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ रहता था। वह हमेशा महीन तंज़ेबी कुर्ता और बढ़िया छालटीन का पैजामा पहिन कर रहता था। उसे आँखों में सुरमा लगाने का भी बड़ा शौक था। अक्सर वह गले में रूमाल बाँध कर आता था जिससे उसके दरजे के लड़के बड़ा रोब मानते थे। पढ़ने लिखने में वह फिसड्डी ज़रूर था इसीलिए वह हमेशा ऐसे मास्टरों के दरजों में जाता ही न था जो उसे बेकार खड़े रहने के लिए कहते या दरजे से बाहर निकाल देते थे! रतनलाल का एक ही काम था—वह यह कि अच्छे लड़कों पर निगाह रखना और उनसे दोस्ती गाँठ करके अपना काम निकालना। होते करते एक दिन उसकी निगाह शिवचरन के ऊपर पड़ी और इसे अपने मतलब का जानकर, उसने इससे दोस्ती का स्वाँग भरना शुरू कर दिया। रतनलाल को मीठी बातें करना बड़े अच्छे तरीके से आता था और वह अच्छे लोगों को अपनी बातों से लुभा लेता था। रतनलाल शायरी भी करता था। उसकी शायरी इतनी तेज़ और पुरदर्द होती थी कि शिवचरन का मन उसकी तरफ़ बेतरह खिंचता जा रहा था। मैं मालिक की इस बेकसी को समझ समझ कर उस पर आठ आठ आँसू बहाता रहा। कहते हैं कि शायरी का दर्द ऐसा होता है जो दूसरों को बेचैन बना डालता है। सो इस शिवचरन पर भी शायरी का यह भूत तब से ऐसा चढ़ा कि आज तक उतारे न उतरा।

'शिवचरन के मन में यह समा गई कि अगर शायरी करना किसी को न आया तो उसने अपनी ज़िंदगी में कुछ भी न सीखा। हर तरह से वह इस इल्म को अपनाना चाहता था मगर वह अपने इस दर्द को किसी से कह भी नहीं पाता था। एक दिन वह अपनी हजामत बनाना भूल कर इसी चिंता में मगन था कि रतनलाल ने आकर दरवाज़े पर दस्तक दी। शिवचरन ने उठकर दरवाज़ा खोला।

'रतनलाल ने बढ़ी हुई हजामत, लाल आँखें, बिना कंघी किए हुए बालों को देखकर एकाएक पूछा 'क्यों यार शिवचरन! रात भर शायरी वायरी करते रहे क्या?'

'कहा गया है कि कभी-कभी तीर निशाने पर यूँ भी बैठ जाता है। सो वही हुआ। शिवचरन ने आज अपना दर्द उसके सामने खोल कर रख दिया और उससे कहा 'ए मेरे दोस्त। अगर तुझे मुझसे सच्ची हमदर्दी और दोस्ती है तो तुझे यह बताना पड़ेगा कि तूने शायरी करना कैसे जाना! अगर तू

मुझको भी बड़ा आदमी होते देखना चाहता है तो तुझे यह राज़ तो बताना ही पड़ेगा !'

'रतनलाल ने कहा कि ए मेरे नौनिहाल ! तेरे मन में शायर बनने की सच्ची लगन है और तू चाहेगा तो सच्चा शायर बन जायगा लेकिन उसके लिए तुझे एक बात करनी ही पड़ेगी !

शिवचरन ने पूछा--'वह क्या है ?'

रतनलाल ने कहा—'वह चीज़ है मुहब्बत ! बिना मुहब्बत किए तू शायरी नहीं कर सकता ।'

शिवचरन ने कहा—'ए रतनलाल इसको तू समझा कर बता ताकि हर आदमी इसे जान जाय और इससे मुनासिब फ़ायदा उठा सके !'

रतनलाल ने जवाब देते हुए कहा कि जब उसे शायरी करने का शौक चर्राया तो उसने अपने घर के बगल में रहने वाले डाकखाने के बड़े बाबू पंडित मोतीचंद जी की कुँवारी कन्या 'इसनेहलता' से अपना इश्क किया ।'

शिवचरन की जानकारी बढ़ाने के लिए रतनलाल ने समझाते हुए बताया 'ए दोस्त ! आजकल मुहब्बत करने का सबसे अच्छा तरीक़ा है कि घर के आसपास नज़र घुमाओ । कहा गया है कि कस्तूरी बहुत दूर नहीं रहती लेकिन हिरना उसे खोज नहीं पाता ! मुहल्ले के बाहर इश्क करने से ख़तरे बढ़ जाते हैं और मेलमिलाप की गुंजाइश कम हो जाती है । इसीलिए मैंने 'इसनेहलता' से काफ़ी दिन मुहब्बत की और उसी को सहारा बनाकर शायरी करता रहा लेकिन जब उसकी शादी हो गई और वह अपनी ससुराल चली गई तबसे मैंने शायरी करना तो छोड़ दिया क्योंकि कोई सुनने वाला ही नहीं था, लेकिन मैं 'मिश्टर देवदास' की तरह पगलाया नहीं हूँ, बल्कि दूसरी की तलाश में हूँ ! सो ए मेरे शायर-तबीयत दोस्त ! तू यह अच्छी तरह जान ले कि शायरी सिर्फ मुहब्बतनामे का दूसरा नाम है । जिसने मुहब्बत नहीं की, वह शायरी क्या ख़ाक करेगा ? और जिसने मुहब्बत की वह घंटी बजाई उसके लिए शायरी का दरवाज़ा अपने आप खुल जाता है । तो ए शिवचरन ! तुम शायर बनने के लिए मुहब्बत करना शुरू करो !'

काठ के उल्लू ने कबूतर से आगे कहा—'ए मेरे भाई, उस आवारा लड़के ने जो डोरा मेरे मालिक पर फेंका, वह उस पर एकदम जमकर बैठ गया और मेरा मालिक उसी के चक्कर में फँसता चला गया । अब सुन कि दास्तान

में यहाँ से तेरे सवाल का जवाब शुरू होता जा रहा है ! अब इस नौजवान शिवचरन ने शायरी करने के लिए एक औरत की तलाश शुरू की जो इसकी शायरी का सहारा बन सकती और इस तरह इसकी गाड़ी खिसका सकती ! धीरे-धीरे यह बड़ा निराश और नाउम्मीद होने लगा और ऐसी ही हालत में एक दिन जब यह अपने दादा के कमरे में बैठा था तब इसकी निगाह सामने के कैलेंडर पर पड़ी। बात ऐसे बन पड़ी कि उस तारीखी जंत्री पर एक मशहूर फ़िल्मी ऐक्ट्रेस 'सोनचिरैइया' की दिलकश तस्वीर बनी हुई थी ! उस तस्वीर को देख-देख कर मेरे नौजवान मालिक का दिल ऐंठने लगा और उसे लगने लगा कि वह तस्वीर उसे देख-देख कर मुस्करा रही है।

'एक दिन बहुत हिम्मत करके शिवचरन ने अपने दादा से वह तरीखी जंत्री जिसे तू कैलेंडर कह रहा है, माँग ही लिया और उसे ले जाकर बड़े इत्मीनान के साथ अपने कमरे में एक खूँटी पर लटका लिया। मेरे इस मालिक शिवचरन ने उस तस्वीर को देख देखकर बड़ी नौटङ्की रचना शुरू की और शाम होते न होते इसने एक शायरी का टुकड़ा लिख मारा—

ओ मेरी सोन चिरैइया
तुम्हें देख दिल फुदक रहा है मेरा ज्यों गौरइया !
ओ मेरी सोन चिरैइया !
तुम मुझसे मिलने आओ सपने में
ताकि देख मत पाएँ तुमको मेरे भाभी भइया !
ओ मेरी सोन चिरैइया'

अब आगे का वह हवाल तेरे सामने मैं सुनाता हूँ कि किस तरह इस टुकड़े को लिखकर वह बेइंतहा खुश हुआ और कैसे उसने सोचा कि उसकी जिंदगी सुफल हो गई ! कहा गया है कि जिस आदमी को पहिचान न हो, उसे दो बातों से हमेशा बचना चाहिए, एक तो बुरों की सोहबत से और दूसरे शायरी से ! क्योंकि ये दोनों चीजें ऐसी होती हैं जो आदमी को ऐसी खंदक में ले जाकर पटकती हैं जहाँ से उसके उभरने का कभी सवाल ही नहीं उठता ! ए भोले कबूतर, तू शायद जानता न होगा कि जिस तरह शराब पीकर आदमी को अच्छे बुरे की तमीज मिट जाती है, उसी तरह शायरी करने वाले को भी ऐसी लत पड़ती है कि वह भी अच्छे बुरे की पहचान खो बैठता है। यह क्योंकर होता है,

इस बात का सबूत तुझको अभी आगे मिलेगा जब मैं इस किस्से को तेरे सामने बयान करूँगा !

'हुआ ऐसा कि शिवचरन ने जो शायरी की तो उसे सुनाने की चुल्ल उठ खड़ी हुई ! शायर को अपनी शायरी सुनाने की उतनी ही बेचैनी रहती है जितनी नयी ब्याही लड़की को अपनी सहेलियों से ससुराल और अपने खाविंद के बारे में बातें करने की । लिहाजा इस चुल्ल को मिटाने के लिए मेरा मालिक यानी बाबू शिवचरन अपने भाई की बीवी मानी अपनी भावज के पास पहुँचा और उसके सामने ये चार लाइनें सनीमा के गाने की नकल में गाकर अदा कीं !

भावज की निगाहों में शिवचरन एक नालायक किस्म का इंसान था जो दुनियाँ के किसी भी काम के लिये नाकाबिल था । और एक बात तुझे यह भी बता दूँ कि कमाने वाले भाई की बीवी निठल्लू बैठे रहने वाले भाई का खाना पीना कभी फूटी आँखों भी नहीं देख पाती और जहाँ तक बस चलता है तहाँ तक उसे निकम्मा साबित करने में पीछे नहीं रहती ! ए कबूतर ! यही रीत सनातन से चली आई है सो इसको पलटने वाला कोई पैदा नहीं हुआ ! सो जब इस शिवचरन ने अपनी भाभी को जाकर अपनी शायरी का नमूना पेश किया तो वह बड़े चक्कर में पड़ी । पहिले तो बहुत देर तक इसकी आँखों में आँखें डालकर यह भाँपने की कोशिश की कि आज लल्ला शिवचरन ने कहीं से पैसे उड़ा कर चढ़ाई तो नहीं है । अपनी आजमाइश और इम्तिहान में पास होने के बावजूद भी बाबू शिवचरन अपनी भावज की एक हँसी से ज्यादा कुछ न पा सके !

कहते हैं कि होनी को कोई टाल नहीं पाता ! भावज की हँसी नौजवान शिवचरन के लिए एक मुसीबत बन गई । शिवचरन के शायद दिमाग में यह फ़ितूर घुसा कि भावज की हँसी के पीछे कोई राज़ जरूर छिपा हुआ है नहीं तो भला इस शायरी में हँसी की क्या बात थी । अपने शुबहा की पूरी तरह से जाँच करने के लिए इस गरीब ने अपनी शायरी का यह टुकड़ा दुबारा भावज साहिबा की खिदमत में पेश किया । उसे सुनकर वह दुबारा उसी तरह से मुस्कराई । सब तरह से जब इसने अपने मन को ढाढ़स दे लिया तो एक दिन इसने बड़ी हिम्मत के साथ दूसरा टुकड़ा रचा जिसमें इसने भाभी चम्पा का नाम ज्यूँ का त्यूँ रख दिया ! वह चटपट अपनी भावज के पास पहुँचा और उसने अपनी शायरी पेश की—

तेरी छवि को देख
गिर पड़ी मेरे उर पर शम्पा
मैं बलिहारी इस यौवन पर
ओ देवी तू चम्पा !!

शायरी सुनाने के बाद शायर को हमेशा कुछ दक्षिणा मिलती है ! और कुछ न सही तो ज़बानी तारीफ़ से ही शायर का पेट भर जाता है।

'ए मेरे दोस्त, इस देस में तो ख़ास कर शायर को अपना पेट सिर्फ तारीफों से भरने की आदत पड़ गई है और उसे रोटियों की हाजत नहीं होती ! सो इस शिवचरन की भावज ने इस 'दुलारे देवर' की यह हरकत देखकर इसे पाँच सौ बातें सुनाईं और खाना पीना छोड़कर कोप भवन ले पड़ीं। दादा ने घर लौटकर जो शिवचरन के यह लच्छन सुने और देखे तो इसे घर के बाहर निकल जाने का फौरन हुकुम सुनाया।

'ए दोस्त ! मर्द की सबसे बड़ी कमज़ोरी औरत होती है और चूँकि इस शिवचरन ने उस कमज़ोरी को छू दिया था लिहाज़ा अब इसके पास सामान बाँध कर घर से बाहर निकलने के अलावा कोई दूसरा चारा भी नहीं था ! ऐसी हालत में मेरे मालिक के पास उस रतनलाल के पास जाने के अलावा कोई दूसरा ठिकाना नहीं था क्योंकि इस सारे फसाद की जड़ वही नालायक था। रतनलाल ने शिवचरन के मुंह से जो सारा किस्सा सुना तो बड़ा खुश हुआ और उसने कहा 'ए मेरे होनहार शायर ! तेरे ऊपर तो कविता की देवी सुरसती मइया ने अपना हाथ खुद रख दिया है। मुहब्बत करके घर से निकल जाने का वरदान बिरले आदमी को मिलता है ! मुहब्बत में उसी आदमी को भगवान कामयाब करता है जिसे दुनियाँ में वह और किसी काम के लायक नहीं समझता ! ऐ शिवचरन, इस बात को दुहराना फज़ूल है कि दुनियाँ में जितने भी बड़े आदमी हुए सब को मुहब्बत में धोखा हुआ ! बल्कि इसी राज को तू यूँ समझ कि जितने भी लोगों ने बड़ा बनना चाहा उन्होंने सबसे पहिले मुहब्बत करके धोखा खाने की जी तोड़ कोशिश की क्योंकि उन्हें यह अच्छी तरह मालूम था कि यही कामयाबी की असली सीढ़ी है !

'इस तरह मेरा मालिक शिवचरन, जिसकी आँखों में घर से निकाल जाने की बेइज्जती का ख्याल आकर बार बार आँसू की बूँदें बन छलछला रहा था, शायर होने की दिलासा पाकर चुप हो गया। रतनलाल ने उसको अपने

कमरे में टिका लिया और दो दिन तक अपने साथ रक्खे रहा ! ए कबूतर, मेरा मालिक शिवचरन मेरा बड़ा ख्याल करता था और इस मुसीबत के वक्त में भी वह मुझे अपने साथ ले जाना नहीं भूला था। दो ही दिन में शिवचरन के दादा और चाचा आकर रतनलाल के घर वालों से मिले और जाने क्या सलाह तै पाई कि एक दिन मैंने यह देखा कि मुझे लेकर शिवचरन फिर पुराने घर में वापस पहुँच गया है !

'लौटने को तो यह अपने पुराने घर लौट आया लेकिन शायरी के लिए इसके मन को ऐसा खौफ़ समाया कि फिर इसकी किसी तरह हिम्मत ही नहीं होती थी कि यह दो चार अच्छर भी बैठकर जोड़े ! मगर कहा गया है कि शायरी उस मर्ज़ की तरह होती है कि जिसका अगर ज़रा सा भी हिस्सा तबीयत में कहीं बाकी रह गया तो मौका देख कर फूट निकलता है ! सो ऐसा ही हुआ।

'एक दिन ऐसा मौका आन पड़ा कि इसके कमरे में एक तारीखी जंत्री जिसे तू कैलेंडर कहता है, लाकर टाँगा गया। उस में ताजमहल का फोटू छापा गया था।

ताज महल की इस फोटू के अलावा उस तारीखी जंत्री पर किसी बीड़ी बनाने वाली कम्पनी का इश्तहार भी था ! शिवचरन की तबीयत तो शायराना तबीयत थी ही। ताजमहल की बगिया देखकर इसे अमरूदों की बगिया की याद आई और अपना बचपना सामने आ गया ! इसने फिर एक शायरी की जिसमें यह ख्याल अदा किया कि ताजमहल के चारों तरफ़ ज़रूर अमरूदों की बगिया लगाई गई होगी और जो आग शाहजहाँ के दिन में लगी हुई थी, वह ज़रूर किसी हुक्के या बीड़ी का सुलगता हुआ धुवाँ था, जो उसके कलेजे में बैठ गया था। कुछ भी हो, मुहब्बत की आग तो हो ही नहीं सकती क्योंकि उसमें पिट जाने का अंदेशा बना रहता है। जैसा कि मैं तुझसे अभी अभी कह चुका हूँ शायरी कर लेने के बाद फिर सुनाने की चुल्ल समाती है ! सो पिछली बार की तरह इसबार भी शिवचरन के मन में शायरी सुनाने की जबर्दस्त हाजत शुरू हुई। घर में तो शायरी करने और सुनाने का इतना खौफ़ था कि यह साँस भी नहीं लेता था। मगर क्या करे, शायरी का सुनाना भी निहायत ज़रूरी था ! लिहाज़ा हज़रत दौड़ कर उस बीड़ी वाले के पास पहुँचे जिसका इश्तहार उस तारीखी जंत्री पर था, जिसे तू कैलेंडर कहता है !

दूकानदार ने जब इस शिवचरन की शायरी सुनी तो वह बड़ा खुश हुआ और उसने अपने मुनीम को हुकुम दिया कि जब भी बाबू शिवचरन उसकी बीड़ी पर शायरी करके लाएँ तब तब उन्हें एक बंडल बीड़ी का इनाम दिया जाय। शिवचरन बीड़ी का बंडल पाकर बड़ा मगन हुआ क्योंकि वह बंडल ही उसकी जिन्दगी की पहिली कमाई थी। बंडल लेकर वह घर को रवाना हुआ इधर दूकानदार ने उस शायरी को लेकर दो डुग्गी पीटने वालों को दे दिया जो उस कम्पनी की बीड़ी का इश्तहार घूम घूम कर सड़क पर किया करते थे। अब उन फेरीवालों ने इस शायरी को साथ-साथ गाना भी शुरू कर दिया। ए मेरे परदेशी मुसाफ़िर! शायद सड़कों पर का यह जलसा तूने भी देखा होगा कि जो फेरीवाले गाने वाले गा गा कर अपना माल बेंचते हैं उनके इर्द गिर्द खरीदनेवाले और तमाशबीनों का अच्छा खासा मजमा हो जाता है लिहाज़ा जो बीड़ी के साथ लावनी भी चली तो एक ही दिन के अन्दर बीड़ी की बिक्री दूनी से भी आगे बढ़ गई। दूकानदार सबसे पहिले पैसे को देखता है। लावनी से बीड़ी की बिक्री बढ़ी तो शिवचरन की इज्ज़त उस बीड़ी वाले की निगाह में बढ़ने लगी। नौबत यहाँ तक पहुँची कि अब शिवचरन अपनी शायरी लेकर पहुँचे और बीड़ी वाले ने दस पाँच का नोट उन्हें थमाया।

'यह तो तू समझता ही होगा कि जब घर की बात फैलते देर नहीं लगती, तो भला बाज़ार की बात फैलते क्या देर लगती। सब जान गए कि मसहरी छाप बीड़ी सिर्फ बाबू शिवचरन को शायरी से चल गई है। अब तो सब दूकानदारों ने बाबू शिवचरन को आते जाते देखकर सलाम करना शुरू कर दिया। धीरे धीरे शिवचरन की यह शोहरत बाज़ार के हलवाइयों तक पहुँची। शिवचरन बाज़ार से निकलते तो उसे गरम समोसे और पेड़े खिलाने के लिए बहुत से हलवाई तैयार हो जाते। दीवाली के मौके पर शिवचरन ने एक हलवाई के लिए एक टुकड़ा लिखा जिसे उसने चीनी से बनाकर उसके अंदर बिजली का लट्टू जलाकर दुकान पर टाँग दिया। बिक्री बढ़ गई। शिवचरन ने यह सब देखा तो अपना रेट बढ़ा दिया और वह 'पंद्रह नगद और बकिया सामान' एक शायरी के साथ लेने लगा।'

काठ के उल्लू के वाक्य पूरा करते न करते कबूतर ने सरदी की हल्की सी सुरसुराहट का अनुभव करते ही अपने पंख फड़फड़ाए, और आतशदान पर रक्खा हुआ घोंघानुमा शंख पटाक से ज़मीन पर आ गिरा और दो टुकड़े हो

गया। एकाएक यह आवाज़ होने से दोनों ही चौंक उठे और काठ के उल्लू ने घबराकर अपने मेहमान की तरफ़ देखा। कबूतर भी घबरा गया था लेकिन गिरने और टूटने का काम पूरा हो चुका था और अब कोई चारा नहीं था! काठ के उल्लू ने कहा—'ए नौजवान! इस रात में क्यों अपने पंखों को बेकार डुलाता है। मेरी और तेरी निगाह में यह टूट कर गिरने वाली चीज़ सिर्फ़ एक घोंघा है लेकिन तू नहीं जानता कि बड़े आदमी सिर्फ़ घोंघे को ही मुहब्बत करते हैं और चूँकि मेरा मालिक भी अब एक बड़ा आदमी हो गया है इसलिए वह भी इस घोंघे को बहुत तबीयत के साथ खरीद लाया है। अब तू चौकन्ना होकर बैठ ताकि मेरे मालिक के कानों पर कोई असर न हो।'

कबूतर ने माफ़ी माँगते हुए कहा 'बात यह थी कि मेरे सख्त, मेहनती पंख जो दिन भर दौरा ही किया करते हैं, एकदम चुप होकर बैठने के आदी नहीं हैं इसलिए अनजाने में भी वह अपने आप बिना मेरे उड़े भी फड़फड़ा उठते हैं। मैं इसका ख्याल रक्खूँगा ताकि दुबारा यह शिकायत न हो। ए मेरे बुजुर्गवार! अब तू अपनी कहानी की डोर पकड़ और शिवचरन का किस्सा बयान कर!'

काठ के उल्लू ने मुस्कराते हुए कहा 'खैर! आगे सुन! जब शिवचरन ने अपना रेट बढ़ा दिया और उसकी धूम मचती ही चली गई तो माधवगंज के ज़मीदार ठाकुर रामप्रताप सिंह के कानों में एक दिन शिवचरन का हाल ड़ा। ए कबूतर! अब तो वह ज़माने लद गए और वह दिन आँखों से दूर हो गए! नहीं तो हर ज़मीदार राजा राव के पास एक निहायत नफ़ीस शायर रहा करता था जो उसकी बेचैन रातों को सरसब्ज़ बनाता था, उसकी रँगरलियों को गुलाबी करता था, उसकी महफ़िलों को रौनक बख्शता था। सो ठाकुर रामप्रतापसिंह के कानों में जो इस शिवचरन की चर्चा पड़ी तो उन्होंने कहा कि ऐसा भी क्या शायर जिसकी शायरी मैं न सुनूँ? लिहाज़ा इस शिवचरन के पास ठाकुर रामप्रतापसिंह का एक कारिंदा आन पहुँचा और शिवचरन को उसने चुम्बक के मानिंद खींच कर ठाकुर के पास ला खड़ा किया। ठाकुर के ताल्लुके में बड़े रंगीन बाग़ थे जहाँ गेंदा और गुलदावदी फूलती थी। सो इस शिवचरन का मन उस ताल्लुके के बाग़ों में कुछ ऐसा रमा कि रमता चला गया। दोनों वक्त की रोटी ठाकुर के जिम्मे थी उसके बदले में शिवचरन अपनी शायरी सुनाता था! अपनी ख़ासी शायरी से इसने ज़मीदार की तबीयत खुश कर दी!

ज़मीदार की सोहबत ने शिवचरन को बड़े आदमियों के बीच उठने बैठने का सलीक़ा सिखा दिया। ठाकुर साहब बड़ी बड़ी महफ़िलों में आते जाते और उठते बैठते थे सो यह शिवचरन भी उनके साथ रहते रहते उन महफ़िलों में मशहूर होता चला गया !

'ए फ़साने के जुस्तजू में घूमने वाले कबूतर ! उस कोने में जो तारीख़ी जंत्री, जिसे तू कलैंडर कहता है, जिस पर उस मूँछों वाले रोबीले आदमी की तस्वीर देख रहा है, वह उसी ठाकुर की तस्वीर है ! हुआ ऐसा कि जब ठाकुर की लड़की का ब्याह होने लगा तो नवेद छापने के लिए ठाकुर रामप्रताप ने एक छापाख़ाना ही खरीद लिया और उसी छापेख़ाने में ठाकुर की बेटी के ब्याह का नवेद छापा गया ! ए मन लगाकर इस क़िस्से को सुनने वाले कबूतर, जब छापा-ख़ाना खरीद ही लिया गया तो ठाकुर ने इस शिवचरन को उस छापेख़ाने का मुनीजर बना दिया और इसी की देख रेख में छापेख़ाने में बराबर कोई न कोई चीज़ छपती रही ! यह तस्वीर जो तू देख रहा है, यह उसी छापेख़ाने की करामात है !' इतना कह कर काठ के उल्लू ने फिर तस्वीर की तरफ़ गर्दन मोड़ कर इशारा किया !

कबूतर ने कहा 'ओ फ़िसानागो काठ के उल्लू ! तू कहानी तो बड़ी दिलचस्प सुना रहा है। लेकिन अब तू मुझे यह बता कि इस दिलकश कहानी और कैलैंडरों की इस लाइन में क्या रिश्ता है ? और साथ ही तू यह भी बता कि साबुन की कम्पनी वाले कैलैंडर पर यह फूलमाला क्यों चढ़ी हुई है ?

'हाँ, मेरे दिल अज़ीज़ कबूतर ! तू अपना धीरज न छोड़ क्योंकि कहा गया है कि धीरज आदमी का ऐसे मौके पर साथ देता है जब और सभी चीज़ें साथ देने से इन्कार कर देतीं हैं !' काठ के उल्लू ने कहानी की डोर पकड़ते हुए कहा 'इसीलिए तू धीरज के साथ सुन कि कहानी आगे कैसे चलती है। जैसा कि मैं तुझे बता चुका हूँ यह बड़ी अज़ीब नगरी है। यहाँ के काम धाम, नाते रिश्ते, झगड़े तकरार, रहन-सहन सारा रवैइया ही बड़ा अज़ीब है। हुआ ऐसा कि इस शहर की कशिश ने शिवचरन को ऐसा खींचा कि ठाकुर रामप्रताप को समझा बुझाकर यह छापाख़ाना लिए हुए, इस शहर में आन पड़ा ! शहर में आकर इसने छापाख़ाने का काम करना शुरू कर दिया ! ठाकुर की सोहबत ने शिवचरन को ख़ासा मशहूर कर ही दिया था।

छापाख़ाना चल निकला।

बात यह है कि जैसा कि मैं तुझे आगाहकर चुका हूँ कि इस विचित्र नगरी के तौर तरीके अपने बिल्कुल अलग हैं। शहर में बड़ा व्योपार होता है लेकिन चीज़ों का नहीं होता ! यहाँ व्योपार होता है फलसफ़ा का। सब कम्पनियाँ अपनी अपनी ढोलक बजाती हैं और अपने फलसफ़ा का व्योपार करती हैं। हर कम्पनी अपना इश्तहार छपवाती है और अपनी दूकानों और अपने अपने माल का पूरा व्यौरा तारीखी जंत्रियों में छाप कर बाँटतीं हैं।

मेरा मालिक शिवचरन नगर के इस हुनर सेपूरी से जानकारी रखता था। उसने इन तारीख़ी जंत्रियों की सोहबत शुरू की ! हर एक कम्पनी इस बात से वाकिफ़ थी कि मेरा मालिक शायर है और इसलिए, हर एक कम्पनी ने अपनी अपनी तारीख़ी जंत्री जिस पर उनका इश्तहार और माल की बानगी की तस्वीर थी, शिवचरन के पास भेज दी।

'मेरे मालिक ने यह समझ लिया था कि इन कम्पनियों के इश्तहारों को लिखकर वह आसानी से रोशनी में आ सकता है। मेरे मालिक को हर कम्पनी वाले अपने साथ चाहते थे ! मेरे मालिक ने अक़्लमंदी की और उसने यह एलान किया कि साल में वह सिर्फ़ एक ही कम्पनी का इश्तहार चलाएगा और एक ही कम्पनी की तारीख़ी जंत्री की सोहबत करेगा ! उसके इस एलान से एक बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि हर कम्पनी को पूरी उम्मीद रहने लगी कि कभी न कभी उनकी कम्पनी का इश्तहार भी शिवचरन लिखेगा ही !

'सब से पहिले एक झंडी कम्पनी के लोग अपनी तारीख़ी जंत्री दे गए और मेरे मालिक ने वही काम उठा लिया। साल भर उसने बड़ी लगन से वह काम किया। उस किनारे पर जो दाढ़ीदार आदमी की एक फोटू उस इश्तहार में छपी हुई टँगी है वह उसी कम्पनी की है। इस कम्पनी की दूकान सस्ते दामों पर माल बेचती है। सालभर बाद मेरे मालिक ने यह कम्पनी छोड़ दी। उन्हीं दिनों इस शहर में एक चुनाव होने वाला था। यह गाँधी बाबा का इश्तहार उन्हीं दिनों यहाँ आकर टँगा था। सुनते हैं वह भी कम्पनी साल भर अच्छी चली। झंडी वाली कम्पनी इसे गाली देती रही !

'कुछ दिनों तक यह बेकार रहा लेकिन शोहरत बढ़ती रही। इसलिए, कुछ दिन बाद दक्खिन की एक कपड़े वाली कम्पनी ने इसको कुछ महीने के लिए काम पर लगा लिया। उस लाइन में तीसरी तारीख़ी जंत्री वही है, जिसका बयान तुझे उसी जंत्री पर छपा हुआ दिखाई पड़ सकता है ! और जो तूने यह पूछा कि

इस साबुन वाली तारीख़ी जंत्री पर माला क्यों पड़ी हुई है, तो ए मेरे भोले पंछी सुन, जिस साल मेरा मालिक जिस किसी कम्पनी का काम लेता है, सालभर उसी कम्पनी की तारीख़ी ज़ंत्री पर माला पड़ी रहती है ! साबुन वाली तारीख़ी जंत्री पर माला इसीलिए पड़ी है कि आजकल यह 'तनमन शुचि पावन' नाम से कोई साबुन का इश्तहार लिख रहा है, अब तू जान गया होगा कि साबुन वाली जंत्री पर माला क्यों पड़ी है।

कबूतर ने फिर सवाल किया 'लेकिन मेरे बुर्जुगदोस्त ! तूने यह नहीं बताया कि तेरा मालिक बंक का मनेजर कैसे बना ?

काठ के उल्लू ने जवाब देते हुए कहा—'ए समझदार दोस्त ! अब मैं तुझे वह भी हवाला देता हूँ ताकि यह राज़ भी समझ सके। हुआ ऐसा कि जब मेरे मालिक ने झंडी वाली कम्पनी के इश्तहार लिखे तो धीरे धीरे यह ख़ुद उससे ऐसा मुतसिर हुआ कि इसने यह सोचना शुरू किया कि जो कुछ भी हक़ीकत है वह सिर्फ़ पैसे का तमाशा है बकिया सब कुछ बेकार है ! यह ख्याल बन गया कि अगर नोट न चलता तो दुनियाँ के कारबार न चलते ! उधर सोने में सुहागा यह मिला कि ठाकुर रामप्रताप ने एक बंक चलाया ! ठाकुर ने इससे यह पूछा कि क्या वह बंक की मुनीजरी करेगा ? मेरे मालिक ने बंक की मुनीजरी चटपट अख्तियार कर ली क्योंकि इसने सोचा कि चाहे इस्तेमाल करने को भले न मिले लेकिन हाथों से छूने और आँखों से देखने, के लिए तो लाखों की रकम मिलेगी ही। बस उस दिन से मेरा मालिक आज तक बंक की मुनीजरी करता चला आ रहा है। ए कबूतर, तू देखता जा रहा होगा कि इन तारीखी जंत्रियों की सोहबत ने मेरे मालिक को क्या क्या दरवाज़े झँकवाए !

कबूतर ने पूछा 'और शादी का...

काठ के उल्लू ने जवाब में कहा 'ए मासूम कबूतर, जब से मेरे मालिक को मुहब्बत में धक्का लगा, तब से मालिक के मन में कुछ ऐसी समा गई कि इसे औरतों से नफ़रत होने लगी। अब यह शिवचरन औरतों की सोहबत से भागता लेकिन है, उनसे दूर दूर रहता है ! मेरे मालिक के मन में आज तक उस भावज की याद बराबर बनी हुई है जिसने शायरी करने के जुर्म में घर से बाहर निकलवा दिया था ! अब तू अपनी आँखों से देख कि आदमी के ऊपर सोहबत का कैसा-कैसा असर पड़ता है !

एक क्षण चुप रहकर काठ के उल्लू ने फिर कहा 'अभी तू जवान है। इन बातों को नहीं समझता। यह उम्र के साथ-साथ समझ में आतीं हैं।'

कमरे में इस पंछी की फुसफुसाहट के अलावा एकदम सन्नाटा छाया हुआ था! दरवाज़ों और खिड़कियों की दराज़ों से तेज़ी से गुज़रती हुई हवा सी सी की आवाज़ करती हुई कभी-कभी सुनाई पड़ती थी। रात चढ़ रही थी। कबूतर ने अपनी गर्दन सीधी करते हुए जाड़े की एक हल्की फुरहरी फिर महसूस की। इसके पहिले कि वह कोई बात कहे उसने देखा कि दरवाज़े की दराज़ों और झरोख़ों से तरह बेतरह के लिपटे हुए काग़ज़ गिर रहे हैं! थोड़ी ही देर में उसने देखा कि कमरे में दस पंद्रह काग़ज़ आ गिरे।

कबूतर से अब नहीं रहा गया। उसने अपना कौतूहल शांत करने के लिए काठ के उल्लू से फिर पूछा 'ए मेरे समझदार-दाना काठ के उल्लू! इतनी रात गये यह काग़ज़ कहाँ से आकर गिर रहे हैं?'

काठ का उल्लू हँस पड़ा। कबूतर उसकी हँसी का अर्थ न लगा सका; कबूतर को अचंभे में पड़ा देखकर उल्लू ने कहा 'मेरे भुलक्कड़ मेहमान! क्या मैं तुझे अभी-अभी इस कमरे में तारीखी जंत्रियों की अहमियत नहीं बता चुका हूँ। यह काग़ज़ वही हैं जिन्हें तू कलेंडर कहता है। आज दिसम्बर महीने की आख़िरी तारीख़ है। कल सुबह से नया साल शुरू होगा! इस शहर के सभी कम्पनी वाले अपना अपना इश्तहार लाकर गिरा रहे हैं। सुबह जब मेरा मालिक उठेगा तो वह अपना मन चाहा कलेंडर उठा लेगा और फिर साल भर तक वही इश्तहार चालू माना जायगा। इन्हीं कम्पनियों की जंत्रियों की सोहबत में मेरा मालिक दिन दूनी और रात चौगुनी की रफ्तार से अपनी तरक्की करता जा रहा है। ए दोस्त, मैं दोहराने से बाज़ नहीं आ सकता कि सोहबत आदमी पर असर करके ही रहती है और इसीलिए मेरा मालिक इन कलेंडरों की सोहबत करता है।

काठ के उल्लू ने अपनी कहानी ख़त्म करते हुए अपने मौन का एक लम्बा सा पॉज़ दे दिया!

कबूतर ने समझ लिया कि कहानी पूरी हो चुकी है और अब काठ का उल्लू सिर्फ़ उस तरह की साँसें भर रहा है जिस तरह हर उपदेशक मंच से नीचे उतर कर लेता है। कबूतर ने अपनी गर्दन चौकन्नी होकर इधर उधर दौड़ाई! फिर एकाएक बोला—

'तूने जिस ढंग से अपनी कहानी कही है उसका शुक्रिया मैं कैसे अदा करूँ ? इतना दिलचस्प और अजीब किस्सा मेरे कानों में अब तक नहीं पड़ा था। मैं अब कुछ न कहता लेकिन तूने इस नतीज़े पर लाकर मुझे खड़ा किया है कि मुझे कुछ कहने के लिए मज़बूर हो जाना पड़ा है !'

काठ के उल्लू ने कान खड़े किए।

कबूतर कहता गया—'हर आदमी के अंदर अपनी असलियत होती है ! यह असलियत उस धात की तरह नहीं होती कि जो भी चाहे वह उसे गले लोहे की तरह तोड़ मरोड़ डाले ! सो ए मेरे प्यारे दोस्त, सच यह है कि आदमी की असली औक़ात सोहबत नहीं बनाती बल्कि उसकी असलियत ही उसको बनाती बिगाड़ती है ! आदमी में इसी धात की मज़बूती ही सब कुछ है !'

लकड़ी का वह जीव चिहुँक उठा 'क्या कह रहे हो मेरे भोले कबूतर ? भला यह भी कहीं हुआ है !

तो अब कबूतर की पारी आई।

कहानी का जनम

कबूतर ने कहा—

'सुनो मेरे गोलमुखी काठ के उल्लू ! एक बार उड़ता उड़ता मैं एक ऐसी नगरी में जा पड़ा जिसे अलखपुरी के नाम से पुकारा जाता है। अलखपुरी नगरी में तम्बाकू बोई जाती थी और वहाँ के रहने वाले ज्यादातर वकालती पेशा करते थे। उसी अलखपुरी में एक रामसहाय नाम के वकील रहते थे। उनके तीन लड़के थे। बड़े का नाम था बड़े भाई, मँझले का नाम था मँझला भाई और छोटे का नाम था छोटे भाई। बड़ा भाई किसी स्कूल में पढ़ाने लगा था। छोटा भाई बाप की तरह नामी वकील बनने के लिए वकालती इम्तहान पास कर रहा था और मँझला भाई एकदम बेकार था। अपनी बेकारी की हालत में वह धीरे धीरे आवारा हो गया और आवारा होते ही होते उसने उर्दू ज़ुबान मेंशायरी करनी शुरू कर दी !

ए मेरे कठीले उल्लू ! वह उर्दू के शायरों की महफ़िलों में जाने लगा और धीरे धीरे दूसरी ज़ुबान के लोगों को गालियाँ देने लगा। उसके गाली बकने की कला देखकर उसके दोस्त बड़े खुश हुए और उन्होंने उसे चंग पर चढ़ाना शुरू कर दिया। कहा गया है कि नासमझ के हाथ में अस्तुरा पड़ा तो उसी की जान ले बीतता है ! चंग पर चढ़ कर इसने जो गाली बकनी शुरू की तो शरीफ़ आदमियों ने तो अपने कानों पर उँगली लगा ली ! लेकिन जैसा कि तू जानता होगा दुनियाँ में सब शरीफ़ ही नहीं बसते ! होनी को कौन टाल सकता है ? ऐसा हुआ कि एक दिन किसी पहलवान शायर ने इस मँझले भाई की भरे चौक में ऐसी चुटिया पकड़ी कि इसकी अक़्ल ही गुम हो गई। उसने अपने बाप का नाम ले ले कर रोना शुरू किया और साथ ही बलबल बलबल करके वह गाली भी बकने लगा !

इसके पहिले कि मँझले भाई खुद घर पहुँच कर किस्सा बयान करते, बाबू रामसहाय के कानों में यह खबर पहिले ही पहुँच गई। नतीजा यह हुआ कि इधर मँझले भाई ने घर में पाँव रक्खा और उधर बाप का हुक्मनामा सुनाई पड़ा कि 'घर से बाहर निकल जाओ।' मगर मेरे दोस्त, मँझले भाई की यह ख़ासियत थी कि वह नम्बर एक का चाईं था ! ऐसा कुसमय आया हुआ जान, वह चाईं मँझला भाई बाप से बोला—

'ए मेरे सिरजनहार बाप ! यह आप को किसने बरग़ला दिया जो कि आप मेरे ऊपर इस बेतरह नाराज़ हैं ?

बाप ने कहा 'ए बेटे ! तू मेरे हाथ से बेहाथ हो गया है और अब मुझे कोई उम्मीद नहीं दिखाई पड़ती कि तेरी ज़िन्दगी आगे बनेगी। तूने बुरी संगत में पड़कर बुरी आदतें सीख लीं हैं और अब तेरा निस्तार इसी में है कि तू मेरा घर खाली करके चला जा और अपना मुँह काला कर।'

मँझले भाई ने मौके का फ़ायदा उठाते हुये चट कहा—

'अगर आपकी शिकायत की जड़ यही है कि मैं कुसंगत में पड़ गया हूँ तो वह मैं अभी रफ़ा किए देता हूँ। मैं आपसे कुछ घन्टे की मोहलत माँगता है कि आप मुझे एक दिलचस्प कहानी सुनाने का मौका दें ताकि मैं साबित कर सकूँ कि आदमी पर संगत का कोई असर नहीं पड़ता जब तक उसके अन्दर उस सोहबत को पकड़ने की ज़मीन न हो। आदमी अपनी अच्छाई बुराई से बनता बिगड़ता है, सोहबत तो उसका कुछ भी नहीं कर सकती। अगर मैं आपको अपने किस्से से यकीन दिला दूँ तो आप मुझे घर में पड़ा रहने दें नहीं तो जो काले चोर की सज़ा, वही मेरी सज़ा।'

बेटा अपने वकील बाप का बेटा था, मगर ए उल्लू ! बाप खुद ही अपने बेटे की बातों से चकरा गया। हार कर उसने उसे चन्द घन्टों की मुहलत दी कि वह उसे वह कहानी सुनाए जिससे यह पता चले कि सोहबत का असर आदमी पर नहीं पड़ता और यह कि उसका बेटा कुसंगत में पड़ कर खराब नहीं हुआ !

बाप के इस तरह मुहलत देने पर बेटे उर्फ मँझले भाई ने अपनी कहानी शुरू की ! ए मेरे दिलदीदा मेज़बान, अब मैं तेरे रूबरू वही कहानी सुनाता हूँ ताकि तू अपनी गलती महसूस कर सके और समझे कि तेरा मेहमान कबूतर गलत बात नहीं कह रहा था !

काठ के उल्लू के माथे पर बल नहीं पड़ता था लेकिन आज ऐसी अचरज की बात सुनकर उसके माथे पर भी बल पड़ने लगा और वह चुप होकर कबूतर के मुँह से गिरने वाले अगले शब्दों की प्रतीक्षा करने लगा।

दास्तान भगवान और उनकी बीवी की

उर्फ़

नए पीढ़ी के पीढ़ा की कहानी

कबूतर ने कहा—

'ए मेरे खूबसूरत उल्लू! बेटे ने बाप के सामने इस तरह से कहानी शुरू की—

'ओ मेरे बुद्धिमान बाप! किस्सा यूँ सुनो कि एक नगर में भगवान नाम का एक आदमी कहीं से तबादले पर आया। तबादले पर आने पर जो सबसे बड़ी मुसीबत का सामना इंसान को करना पड़ता है, वह है सिर पर एक छत ढूँढ़ने का का इंतजाम! भगवान को भी काफ़ी दिन हो गए मगर मकान के नाम पर एक दीवार भी उसके कब्जे में न आ पाई। उसके सामने यही एक चारा रह गया था कि वह जहाँ से आया था वहीं वापस लौट जाए। लेकिन जग जाहिर है कि जो काम मर्द नहीं कर पाता वह औरत कर लेती है। वही हाल इस मकान के सिलसिले में भी हुआ। भगवान की बीवी माया ने आख़िरकार एक मकान ढूँढ़ ही निकाला। मकान नया बना हुआ था और उसका किराया इतना था कि भगवान की आधी तनख्वाह किराए में बलि चढ़ जाती थी। मरता क्या न करता। मकान लेना ही पड़ा!

इस तरह भगवान अपनी बीवी माया और लड़के जीव के साथ उस नए मकान में आकर रहने लगा। भगवान तबीयतदार आदमी था और यह सोचता था कि आदमी को अपना घर सजा कर रखना चाहिए। लिहाज़ा उसने बहुत से फूलों के गमले ख़रीदे, बेशकीमती पर्दे ख़रीदे, बिजली के रंगीन लट्टू और उनकी रंगीन टोपियाँ ख़रीदीं, आल्मारियों में सजाने के लिए ढेर सी किताबें ख़रीदीं जिन पर रंगीन चटख़ और शोख़ जिल्दें बँधी हुई थीं। इन सब चीज़ों के साथ ही उसने बरेली का बना हुआ एक टेबुल ख़रीदा। हर तरह से उसने अपने मकान को अपनी हैसियत के माफ़िक बनाने की पूरी कोशिश की।

टेबुल बड़ा खूबसूरत था। उसकी लकड़ी बेशकीमती थी। वह एकदम नए तर्ज का बना था जिसे बज़ार में सस्ती विलयाती डिज़ाइन बोलते हैं। उसकी पालिश इतनी चमकदार थी कि हर शख्स को अपना चेहरा चमकता नज़र आता था। उसके पाए ख़ास तरह के थे जिसको ओरियंटल डिज़ाइन कहा जाता है। टेबुल के नीचे छोटा मोटा सामान रखने के लिए एक तश्तरी लगी हुई

थी जिस पर कटे हुए कंगूरे किसी हीरे की कनी की याद दिलाते थे। टेबुल में कहीं कोई जोड़ नहीं दिखाई पड़ता था। लगता था किसी पहाड़नुमा लकड़ी से पूरी टेबुल काट कर निकाल ली गई हो। उस टेबुल में एक छोटी सी दराज़ भी थी जिसमें हाथी दाँत का एक छल्ला लगा हुआ था। उसमें एक छोटा-सा खूबसूरत ताला भी लगा हुआ था।

भगवान ने बड़े शौक से वह टेबुल खरीदा था। उसे उसने अपने बैठक में सजाकर रक्खा था। टेबुल को सजाने के लिए उसने उम्दा क़िस्म के दो चार रेशमी मेजपोश ख़रीदे जिसकी पतली पतली लाल धारियाँ गोट की तरह उसके चारों तरफ़ झूलती रहतीं थीं। उस पर रखने के लिए एक छोटा सा 'बुकरैक' भी था जिसमें किताबें रक्खी जातीं थीं। इसके दोनों ओर हाथीदाँत के दो हाथी बने हुए थे जो अपनी सूँड़ से सारी किताबें दबाए रखते थे। उसी पर एक किनारे एक छोटा सा फोटो फ्रेम था जिस पर भगवान महाशय ने अपनी बीवी माया की एक तस्वीर लगा रक्खी थी। टेबुल पर रखने के लिए एक अगरबत्तीदान था जिसमें महमह करती हुई बत्तियाँ हर वक्त जला करतीं थीं जिससे सारी बैठक महकती रहती थी। टेबुल के अंदर जो दराज़ थी उसमें टेबुल का मालिक अपना बटुआ रखता था और अपनी सबसे मनपसंद किताब। टेबुल को हर तरह का सुख था। वह सोच भी नहीं पाता था कि वह इन सब चीज़ों के बिना एक मिनट भी जिंदा रह सकता है। अपनी समझ से उसने ज़िंदगी की पूरी कामयाबी पा ली थी।

लेकिन सच ही कहा गया है कि यह कोई नहीं जानता कि किसका कैसा अंत बदा होता है। हुआ ऐसा कि भगवान साहब की बीवी एक बार जब मैके से अपने ससुराल को वापस आईं तो अपने संग मायके का बना हुआ एक पीढ़ा भी लेती आईं। अब तू देख मेरे बुजुर्गवार दोस्त कि इस पीढ़े के घर में आ जाने पर क्या क्या गुल खिले और कैसे कैसे तमाशे हुए। पीढ़े का गुन बखानते हुए घर की मालकिन ने अपने पति से बताया था कि—

'ए मेरे मालिक! यह पीढ़ा हमारी फरमाइश पर हमारे बाबू जी ने हमको बनावाकर दिया है। इसकी लकड़ी काले रंग की है और इस पर दूसरी पालिश या रोग़न करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह पीढ़ा बहुत मज़बूत है और कभी टूट ही नहीं सकता।'

इस पर चक्कर में पड़कर पतिदेव ने सवाल किया—

'तो क्या यह पीढ़ा फौलाद का बना हुआ है?'

बीवी साहिबा ने जवाब में फरमाया—

'नहीं मेरे आक़ा! यह पीढ़ा उस लकड़ी का बना हुआ है जिसका पुराने ज़माने में मुग़दर बना करता था और आजकल जिस लकड़ी के 'पैरेलेल बार' बनते हैं। इस लकड़ी के अंदर कुदरती तरीक़े से कसरती सामान बनने की ताकत है और वही ताकत इस पीढ़े के हिस्से में भी आई है।'

आख़िरकार भगवान साहब भी पीढ़े की तारीफ़ सुनकर खुश हो गए क्योंकि उन्होंने देखा कि पीढ़े में मज़बूती के अलावा चर्खी भी लगी हुई है जिससे वह पीढ़ा आसानी के साथ इधर से उधर मौका देखकर खिसकाया जा सकता था। पीढ़ा काफ़ी तंदुरुस्त था और उसकी तंदुरुस्ती पर माया देवी को काफ़ी गर्व था। कहा जाता है कि तंदुरुस्त आदमी में थोड़ी उद्दंडता आ जाती है। सो वह पीढ़े के भी मिजाज़ में आ बसी थी।

ए कठियल उल्लू दोस्त! इस तरह जब वह पीढ़ा घर में आया तब उसे चौके में रख दिया गया जहाँ घर की मिसरानी उस पर बैठकर खाना पकाने लगी।

अब तू देख कि किस्सा किस तरह रुख़ पलटता है और नए गुल खिलते हैं। दरअस्ल पीढ़ा बहुत ही जलंतू स्वभाव का था। उससे यह सहा नहीं जाता था कि घर के तमाम सामान तो कमरों में सजाकर रक्खे जायँ और वह चौके में मिसरानी के नीचे दबा दबा पड़ा रहे। पीढ़ा था काटपेंची। धीरे धीरे उसने घर की नब्ज़ देखनी शुरू की। उसने सोचा कि अकेले कोई काम करने से अच्छा है कि साथ में चार आदमियों को खड़ा कर लिया जाय। चौके के धुएँ, बरतनों की मारपीट और मिसरानी के लातों से पीढ़ा इतना ऊब गया था कि एकाएक उसके मन में यह बात समाई किसी आदमी को पीढ़े का इतना शोषण करने का अधिकार नहीं है! उसने सोचा कि अकेले कोई नारा लगाने या हंगामा मचाने पर सिवाय मिसरानी की लातों के और कुछ नसीब नहीं होने का है। तब उसने यह पेंच भिड़ाया कि वह लकड़ी जाति की ओर से नारा लगाएगा और लकड़ी के हर सामान को अपने इस आंदोलन में शरीक करेगा।

पीढ़े ने एक दिन हिम्मत से काम लिया। चौके में रक्खे हुए लकड़ी के चैले को उसने समझाया—

'मित्र चैले! हमारी तुम्हारी ज़िंदगी भी भला क्या ज़िंदगी है! हमको

तुमको क्या इसीलिए पैदा किया गया है कि यह भगवान नाम का आदमी हमसे तुमसे अपना मतलब गाँठे ? सोचो तो दोस्त, क्या तुम इसीलिए पैदा हुए हो कि तुम्हें काटा जाय फिर चीरा जाय और टुकड़े टुकड़े कर चूल्हे में लगा दिया जाय ताकि उससे इस आदमी की रोटी पक सके ? साथी चैले ! मित्रों की यह दुर्दशा देखकर मेरा मन बहुत दुखी होता है और मेरा खून उबलने लगता है।'

चैले ने पूछा—

'लेकिन दोस्त पीढ़े, भला हम कर भी क्या सकते हैं ?'

पीढ़े ने जवाब दिया—

'ए दोस्त ! तुझे यही बताने तो मैं आया था। तू भी मेरी तरह जड़वादी हो जा और मेरे साथ काम कर।'

चैले ने फिर पूछा—

'लेकिन मित्र, यह जड़वादी क्या बला है ?'

पीढ़े ने अपनी आवाज़ थोड़ी कड़ी करते हुए कहा—

'यह वक्त बहस का नहीं है। यह वक्त हमारे काम करने का वक्त है। मैं फिर तुझे बताऊँगा !'

चैला सीधा सादा था। उसने सोचा कि जब पीढ़ा मेरे दुख से इतना ग़मगीन है तो हो न हो यह अच्छा ज़रूर होगा। उसने चुपचाप पीढ़े की बात मान ली। उसने पीढ़े से वादा किया कि इस अत्याचार को मिटाने में वह पीढ़े की पूरी मदद करेगा। चैले को अपना चेला बना कर पीढ़े की हिम्मत आगे बढ़ी।

अब आगे का हवाल सुन ! एक दिन ऐसा मौका हुआ कि पीढ़ा खिसकते खिसकते दरवाज़े के पास जा पहुँचा और आस पास देख कर धीमी आवाज़ में बोला—

'ए मेरे साथी लकड़ी के दरवाज़े ! आज मैं तुझसे एक बात कहने के लिए आया हूँ।' दरवाज़े ने पीढ़े की बात सुनने के लिए जैसे ही हुँकारी भरी तैसे ही पीढ़े ने आवाज़ लगानी शुरू की—

'ए साथी दरवाज़े ! सोचो कि इस मकान मालिक ने तुमको सिर्फ़ इसी लिए बना रक्खा है कि तुम दिनों रात उसकी रखवाली किया करो ? जब कोई बाहरी आदमी आता है तो वह तुम्हारे भाई बंदों को सिर्फ इसीलिए पीटता है कि

घर के आदमी जान जायँ कि बाहर कोई बुला रहा है। भला बताओ साथी दरवाज़े ! क्या तुम इसी तरह से बराबर दीवारों के बीच जकड़े रहोगे और कभी भी खुल कर घूम फिर न सकोगे ? और मेरे भाई, क्या तुम्हारी ज़िंदगी सिर्फ इसीलिए है कि तुम रात में अपने ऊपर साँकल चढ़वा लो कि हम बाहर न निकल सकें । यह मत भूलो कि हम और तुम एक ही जाति के हैं ! हमारा शोषण कोई विजातीय करे, क्या इसे तुम पसंद करोगे ?

'भाई पीढ़े, तुम ठीक कह रहे हो । मैं तो सचमुच दीवारों के बीच जकड़ा हुआ हूँ लेकिन मुझसे जो कुछ भी बन पड़ेगा वह अपनी शोषित जाति के लिए ज़रूर करूँगा । दीवारों की ही मदद से मैं यह संदेसा हर किवाँड़ तक पहुँचा दूँगा ताकि जब मौका आए सब भाई साथ रहें ।' दरवाज़े ने अपने शब्दों से पीढ़े को ढाढस बँधाया ।

'ए बुजुर्गवार दोस्त ! पीढ़ा अपनी एक के बाद दूसरी कामयाबी पर इस कदर खुश होता जा रहा था कि उसे अब लीडर बनने का ख्वाब आने लगा ! एक दिन जब महरी ने पीढ़ा धोने के लिये आँगन में निकाला तो वह खिसकते खिसकते खटिया के पास पहुँच गया और अपनी तकरीर फरमाने लगा । अपने लहजे को ज़रा लीडराना ढंग का बनाते हुए उसने उससे कहा—

'ओ मेरी भोली खटिया ! तुझे शायद यह मालूम नहीं है कि तेरे मालिक ने तुझको किस तरह फुसला रक्खा है । तुझे यह भी नहीं मालूम कि इस मकान ने किस तरह तेरी लकड़ी जाति के लोगों पर अत्याचार और ज़ुल्म ढाने शुरू कर दिये हैं । भाई चैले को रोज़ चीरा जाता है और फिर चूल्हों में लगा दिया जाता है । भाई दरवाज़ों को दीवारों के बीच जकड़कर क़ैद कर दिया गया है । तुझको भी इसीलिये बंधनों से बाँधा गया है कि तेरे ऊपर मकान मालिक का सारा कुनबा सो सके । इसलिए ए मेरी भोली खटिया ! तुझे हम सब का इस ज़ेरो-सितम और ज़ुल्म के खिलाफ़ आवाज़ उठाने में साथ देना होगा !'

और खटिया ने भी हुँकारी भर दी ।

पीढ़े ने उसी वक्त मसहरी के बाँसों, डंडों, और टहलने वाली छड़ियों के एक गिरोह को एकट्ठा करके एक लेक्चर दिया जिसमें उसने उन्हें बताया कि उनकी ज़िंदगी एकदम बेकार है क्योंकि वह सब के सब मालिक की दया पर निर्भर करते हैं । जिस वक्त भी मकान मालिक नाराज़ होगा, उन सबके झुन्ड के झुन्ड को वह आसानी से मिसरानी के ज़रिये चूल्हों में झोंकवा देगा । इसलिए, पीढ़े

ने बताया, कि ऐसे संकट के समय में सब पी ढ़े के नेतृत्व में विश्वास करें और काष्ठ जाति की रक्षा के लिए मिलजुल कर पूरी मेहनत करें। बाँसों और डंडों को भी सबके साथ ही पीढ़े की बात माननी पड़ी।

इस तरह पीढ़े ने धीरे धीरे लकड़ी जाति के तमाम लोगों का विश्वास पा लिया और उसने उन्हें अपने साथ करके मकान मालिक के खिलाफ़ उभाड़ना शुरू कर दिया। कभी चैला अपने आपको इतना भिगो लेता कि वह जबर्दस्ती मिसरानी की आँखों से आँसुओं की धार निकाल देता चाहे इसके लिए उसे दिन भर धूप में पड़े रहना पड़ता। उसी तरह खटिया कभी कभी अपने दोस्त खट-मलों को इतनी भारी संख्या में निमंत्रण दे देती कि मालकिन का रात भर सोना हराम हो जाता हालाँकि उसको अपनी इन हरकतों के लिये दूसरे दिन डंडों से पिटना भी पड़ जाता। मौज में आकर दरवाज़े कभी कभी इतनी ज़ोरों से फटर फटर बंद होने लगते कि मालिक का एक मिनट बैठकर काम करना मुश्किल हो जाता। इसके लिये उसे ख़ास तौर से दरवाज़ों में 'रोकना' जिसे 'स्टॉपर' कहा जाता है लगवाना पड़ा। पीढ़े की छाती में यह सब कुछ देखते देखते दरार पड़ गई थी लेकिन वह उसका भी अच्छा इस्तेमाल करता था। जब कभी वह मिसरानी से एकदम ऊब जाता था तो वह उसी दरार के ज़रिये मिसरानी को चुटकी काट लिया करता था हालाँकि इसके बाद मिसरानी बेलन से उसे ठोंक ठोंक कर दुरुस्त करतीं थीं!

ए दोस्त! पीढ़े ने 'वर्ग-संघर्ष' नाम की चीज़ जगा तो ज़रूर दी लेकिन उसका आंदोलन ठीक ढंग से नहीं चल पा रहा था। पीढ़ा इसी चिंता में पड़ा हुआ था।

एकाएक एक दिन ऐसा हुआ कि भगवान जब अपने खूबसूरत टेबुल पर कुछ लिख पढ़ रहा था, मालकिन माया इस पीढ़े को लेकर बाहर के कमरे में आ बैठी और मालिक से बातें करने लगीं! मालिक उठकर दफ्तर जाने लगा। मालकिन की बात अधूरी रह गई। वह उठकर मालिक के दफ्तर जाने की तैयारी में लग गईं।

पीढ़े ने आज पहिली बार इस रँगे चुँगे, कटे छँटे, खूबसूरत टेबुल को देखा। उसका रूपरंग साज सामान, बनावट सजावट देखकर पीढ़ा मन ही मन जल भुन गया लेकिन वह ऊपर से कुछ भी न बोला। उसने फौरन ही यह सोचा कि यह चीज़ लकड़ी जाति की नेतागीरी आसानी से कर सकती है क्योंकि

यह सजावट और रूप रंग में सबसे आगे है, बड़े आदमियों में उठता बैठता है, चार आदमी इसकी बात की कद्र करेंगे। पीढ़े ने अपने मतलब के आगे अपने मन की जलन दबा ली। चटपट वह सुनसान मौका देखकर बोला—

'ओ मेरे अनजाने दोस्त! मैं पीढ़ा, इस घर के लकड़ी जाति के लोगों का प्रतिनिधि नेता हूँ! मैं आज बेहद खुशी के साथ अपनी ही जाति के एक दूसरे प्राणी से दोस्ती का हाथ मिलाता हूँ। साथी टेबुल! इस घर के मालिक को तुमने अब तक नहीं पहिचाना होगा। यह बड़ा नीच है क्योंकि यह लकड़ी की चीज़ों को बहुत नीच समझता है और उन्हें कुचल कर, दबा कर रखना चाहता है। हम सब लकड़ी जाति के लोगों ने सोचा है कि इस भगवान नाम के आदमी के खिलाफ़ हम अपना आंदोलन चलाएँगे और लकड़ी जाति के कष्ट को दूर करेंगे! हमारे साथ इस महान् जड़वादी आंदोलन में घर के चैले, दरवाज़े, बाँस, छड़ियाँ छोटी मोटी कुर्सियाँ सभी कुछ शामिल हैं। हम तुझसे बिनती करते हैं कि ए भाई टेबुल! ऐसे मौके पर तू भी हमारे साथ जड़वादी हो जा।'

पीढ़े की ऐसी बात सुनकर टेबुल भी बड़े चक्कर में पड़ा। आज तक उसने लकड़ी जाति के लिए इस तरह से हंगामा उठाने की बात भी नहीं सोची थी! लेकिन पीढ़े के मुँह से सबकी दुर्दशा सुनकर टेबुल को भी हमदर्दी हो गई। आख़िर ज़ात का मामला था मेरे दोस्त! पीढ़े की बातें सुनकर टेबुल ने पूछा—

'सो तो सब कुछ ठीक है। लेकिन ए मेरे भाई, भला यह जड़वादी क्या चीज़ है?'

पीढ़े ने अब दाएँ बाएँ झाँकना शुरू किया। लेकिन फिर बोलना ही पड़ा—

'साथी टेबुल! यह तो ठीक ठीक मुझे भी नहीं मालूम कि यह जड़वादी क्या चीज़ है। लेकिन आजकल के ज़माने में जिसके पास कोई वाद भी न हो वह बकवाद समझ लिया जाता है। इसलिए हम लोगों ने पहिले से ही अपना नारा उठा लिया है। और—भाई सच बात तो यह है कि इस वक्त कौम पर संकट का वक्त आया हुआ है। इस वक्त बहस करके जड़वाद की बाल की खाल निकालने से काम नहीं बनेगा। हमें इस वक्त बातों और परिभाषाओं के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए! हमें काम करना है। हमारे किसी साथी ने ऐसे वक्त में बहस करने के लिए नहीं कहा है। मुक्ति पा जाने के बाद हम पूरी तरह से बहस

कर सकेंगे। इसलिए ए भाई, हम सबकी प्रार्थना है कि तुम भी बहस में न पड़-कर हमारी नेतागीरी करो और जैसे भी हो हम सबका उद्धार करो।'

टेबुल को शशोपंज में पड़ा देख कर पीढ़े ने मौक़ा चूकना ठीक न समझा। वह उसे समझाता ही गया—

'देखो भाई! यह सब जो तुमने अपने चारों तरफ़ लपेट रक्खा है—ये रेशमी मेज़पोश, ये हाथी के दाँत के खिलौने, ये नकली खुशबू से घर भरने वाली अगर की बत्तियाँ, ये हुकूमत की प्रतीक तुम्हारी छाती पर चढ़ी मालकिन की फ़ोटो, यह सब कुछ तुम्हारे भले के लिए नहीं है। यह भोले आदमियों को फँसाने के लिए जाल बिछाया जाता है। तुम इस जाल को काट कर बाहर निकल सकते हो। यह मक्कारी तुम्हारी अक़्लमन्दी के आगे नहीं टिक सकेगी। लकड़ी जाति के लोगों का तुम्हारे अन्दर अटूट विश्वास है। तुम्हें उनके इस यकीन का किसी न किसी तरह आदर करना ही चाहिए।'

टेबुल का मन पीढ़े की बातें सुनकर डोलने लगा। पीढ़े ने आगे उसे यह भी यक़ीन दिलाया कि अगर भगवान को मकान से बाहर भगाने में वह सब कामयाब हो गए तो टेबुल को ही वह अपना राजा बनाएँगे।

पीढ़े की दिलफ़रेब बातों में टेबुल आ फँसा। उसकी मति ऐसी फिर गई कि उसने भी जड़वादी होना कबूल कर लिया!

अपनी विजय होते देखकर, ए मेरे रात काटने वाले बुज़ुर्ग उल्लू! पीढ़े ने अपनी बातों का सिलसिला और आगे बढ़ाना ही चाहा था कि मिसरानी उसे ढूँढ़ते ढूँढ़ते आई और भुनभुनाती हुई चौके की ओर उठा ले गई। पीढ़े की ऐसी हालत देखकर टेबुल के मन में और भी दया उपजी। उससे सोचा कि सचमुच ही मेरी कौम पर कोई बहुत बड़ा संकट आया है और जब तक मैं इसमें हिस्सा न लूँगा तब तक उन सबका उद्धार होना बड़ा मुश्किल दिखाई पड़ता है। उसे लगने लगा कि यह मकान मालिक सचमुच लकड़ी जाति का रहा सहा ख़ून भी चूसने पर आमादा है।

एक ही मिनट के भीतर उसे अपने ऊपर बिछे हुए रेशमी मेज़पोश, हाथी दाँत वाले बुकरैक, फ़ोटो फ्रेम और अगर बत्तीदान से नफ़रत हो गई। उसे लगा कि इन सबके साथ दोस्ती निभाकर वह अपनी कौम के साथ ग़द्दारी कर रहा था। उसने सोचा कि इन सब में अपनी 'कल्चर' नहीं है। असली 'कल्चर' तो मेरे दोस्त चैले में है जो अन्न पकाता है, असली 'कल्चर' पीढ़े में है

जो शक्ति और साहस का प्रतिनिधि है, असली 'कल्चर' खटिया में है जो इतनी उम्र वाली होकर भी जड़वादी-आंदोलन में भाग लेने वालों की प्रेयसी का काम करने के लिए तैयार है !!

यही सब सोचते सोचते उसे दो चार दिन लगे। एक दिन उसने हिम्मत करके ऐसा किया कि एक छोटी सी कील निकालकर मेज़पोश को चीथ डाला और मालिक जब टेबुल साफ़ करने आया तो उसके हाथ में गड़ गया ।

भगवान महाशय ने यह देखा तो उन्हें अपने नए टेबुल की दुर्दशा पर बड़ा रंज हुआ लेकिन उसने अपने लड़के जीव से हथौड़ी मँगाकर कील ठोंक दी और उस पर दूसरा मेज़पोश बिछा दिया। मामला रफ़ा दफ़ा हो गया। इसी बीच एक दिन मालकिन फिर पीढ़े को लेकर बैठक में आ धमकीं और मालिक से बातें करने लगीं। माया और भगवान के हटते ही टेबुल ने पीढ़े से कहा—

'मेरे दोस्त पीढ़े ! तुझे यह जानकर खुशी होगी कि टेबुल ने भी जड़-वादी होना स्वीकार कर लिया है। मैंने यह तै कर लिया है कि अब मैं लकड़ी जाति की ही तरक्की के लिए अपना जीवन दे डालूँगा। मुझे अब दुनियाँ में किस चीज़ से मुहब्बत नहीं है और अब से मैं अपने को लकड़ी जाति का एक सेवक ही मानूँगा। और ए साथी पीढ़े, अपने जड़वादी होने की खुशी में मैंने एक रेशमी टेबुल क्लाथ फाड़ दिया है और मालिक की उँगली से वह ख़ून निकाल लिया है जो उसने लकड़ी जाति के लोगों से चूसा था !'

टेबुल की बातें इतनी दिलचस्प थीं कि कमरे के सभी सामान कान लगाए उन दोनों की बातें सुन रहे थे। पीढ़ा तो टेबुल की बात सुनकर इतना मगन हुआ कि वह फटर फटर करके उछलने लगा और फूलकर कुप्पा हो गया। जैसे तैसे उसने कहा—

'साथी-टेबुल ! तुमसे यही उम्मीद करके तुम्हारे पास मैं आया था ! हमने अपने नेता का चुनाव ग़लत नहीं किया था। हमें पूरा यकीन है कि आगे भी तुम इसी तरह से लकड़ी जाति को ऊपर उठाने और उसकी ओर से लड़ने में सबसे आगे रहोगे। इस मालिक का तुम भूल कर भी यकीन न करना ! यह तो तुम्हारे ऊपर अपना जाल बिछाता ही चला जायगा। इसने तुम्हें भरमाने के लिए ही यह मेज़पोश फिर बिछा दिया है। इसके चक्कर से एक बार निकलने के बाद अब तुम दुबारा कभी इसकी ओर मुँह न करना और समझ लेना कि इसकी हर चाल में कोई न कोई गहरा पेंच है जिसका

फाँसी का फंदा हमारे तुम्हारे गले पड़ सकता है। इसलिए ए मेरे दोस्त, इस नए मेज़पोश को तुम उसी तरह से फिर फाड़ डालो और भगवान को बता दो कि तुम अपनी कौम के साथ हो।

पीढ़े ने इतने जोरदार तरीके से यह तकरीर की कि टेबुल अच्छी तरह समझ गया कि अब वह डोल नहीं सकता और उसे अपनी ही जाति के लोगों का साथ हर हालत में देना है। उसने तै कर लिया कि मेरा मालिक चाहे मुझे लाख ठोंके बनाए लेकिन मैं बिना उसकी उँगली से खून निकाले और उसका मेज़पोश फाड़े न मानूँगा।

और सचमुच दूसरे दिन सबेरे उसने वही हरकत दोहराई और भगवान का बिहार इम्पोरियम वाला साढ़े सात रुपए का मेज़पोश चिथड़ा हो गया। उसका टेबुल पर से यकीन उठ गया। झल्लाहट में उसने नई लोहे की टेबुल खरीदी और उस मेज़ को नौकर से उठवा कर बरामदे में डलवा दिया। टेबुल ने कमरे की बंद दीवारों से बरामदे में निकल आने पर इस तरह एक कदम 'मुक्ति' की ओर बढ़ाया।

उधर पीढ़े ने भी बिलकुल इसी तरह की हरकत चौके में की और दो बार मासूमी अंदाज से अपनी कील मिसरानी के चुभो दी। मिसरानी ने यह कह कर कि अब वह पीढ़ा चौके के लायक नहीं रह गया है, लाकर आँगन में पटक दिया। पीढ़े की पुरानी खाई पिई हुई कसरती देह थी। इस तरह पटक उठने पर भी उसका कोई ख़ास नुकसान नहीं हुआ। उसने मुस्कारा कर साथी टेबुल की ओर देखा जैसे कि वह बता रहा था कि जीवन संघर्ष में खूब-सूरतीं नहीं बल्कि कसरती देह का कितना महत्व है! पीढ़ा फिर इस मौके की तलाश में था कि किसी तरह टेबुल के पास वह पहुँचे ताकि जड़वादी आंदोलन के बारे में फिर चर्चा कर सके।

कहा गया है कि चांहने वाले को बिधना क्या नहीं देता। सो उसी समय जीव कहीं से खेलता कूदता आ निकला। माया ने उसे डाँट बताई—

'दिन भर कभी खेलने से फ़ुरसत मिले तो पढ़ लिख लिया कर! आख़िर क्या तुझे बड़े होकर आवारा ही बनना है!'

ए दोस्त! जीव महाशय ने चुपचाप खड़िया मिट्टी ली और आँगन में पड़े हुए काले पीढ़े को उठाया। उसने इस काले पीढ़े को बरामदे में टेबुल के ऊपर ले जा रक्खा और झुक कर उस पर क ख ग लिखने लगा।

अपने दोस्त साथी पीढ़े को एकाएक इस तरह अपनी छाती से लगा देखकर टेबुल का मन खुशी से भर गया। उसने कहा 'ए मेरे दोस्त! आज तू जिस तरह मेरी बाँह में आकर मेरी छाती पर सवार हो गया, उसके लिए मैं किस तरह परमात्मा का शुक्रिया अदा करूँ! आज तेरे बदन से लग कर मुझे महसूस हो रहा है कि जितने दिन मैं उस बंद कमरे में रेशमी ओहारों से लिपटा पड़ा था, उतने दिन जैसे मैं अपने आपको भूल गया था, मैं अपनी असली औकात भूल गया था! मैं समझ रहा हूँ कि मेरी जिंदगी तब बेकार थी और आज मैं सही जड़वादी के पास आ पाया हूँ। मेरे साथी और मेरे रहनुमा पीढ़े। बहुत से मेरे पुराने दोस्त जो उस अमीरी कमरे के एकान्तपन में कहा करते थे कि जड़वादी गँवार होते हैं उन्हें अब मैं जवाब देने के लिए तैयार हो गया हूँ! आज मेरे साथी पीढ़े की पीठ पर वह अनमोल अक्षर लिखे हुए हैं जिनकी सहायता से महाभारत और रामयण जैसे ग्रंथ लिखे गए हैं!

पीढ़ा साथी टेबुल की बातें सुनकर और भी फूलता गया! उसे अपना सही नेता मिल गया था! उसने सोचा कि यही नेता हमारी गँवारियत से भी हमको छुटकारा दिला देगा और संसार के मालिकों के सामने लकड़ी जाति के लोगों का स्थान बनवा देगा! उसने कहा—

'साथी टेबुल, मैं कैसे बताऊँ कि तुम हम लोगों के कितने निकट आ गए हो! अब तुमने अपने ही आप बाँसों, चैलों, चारपाइयों दरवाज़ों और कुर्सियों का पूरा विश्वास प्राप्त कर लिया है।

जब यह पीढ़े साहब अपनी लच्छेदार उड़ा रहे थे, मालिक भगवान बाहर से घर में आया! अपनी प्यारी मेज पर इस तरह पीढ़े को लदा देखकर वह बहुत झल्लाया और उसने पीढ़े को उठाकर जोर से आँगन में फेंक दिया। ए उल्लू! इस बार पीढ़े की कसरती देह ने खास साथ नहीं दिया। अबकी वह आँगन की दीवार से जा टकराया और उसकी एक टाँग जाती रही! पीढ़ा दर्द से चीख उठा। वह चिल्ला कर गालियाँ देने लगा। अबकी उसने मुस्करा कर टेबुल की तरफ नहीं देखा। टेबुल दूर से ही पीढ़े की यह दुर्गति देखता रहा। उसे बड़ी तकलीफ़ हुई। मकान मालिक से इस बात का बदला लेने की उसने ठान ली!

बात यूँ थी कि भगवान अब भी उस टेबुल को बहुत चाहता था। उस पर उसने एक सादा सा मेजपोश बिछा दिया था और उस पर अपना ग्रामोफोन

और रिकार्डों का डिब्बा रक्खा करता था। बरामदे में बैठकर वह ग्रामोफ़ोन सुनता था और घर भर को सुनाता था ! टेबुल को अब भी वह अपनी कलात्मक रुचि के सजाने में सहायक मानता था। इसीलिए उस दिन पीढ़े के साथ वह दुर्घटना घटी थी।

टेबुल ने बदला लेने की ठान ही ली थी ! लिहाज़ा उसने एक दिन अपनी एक टाँग ऐसी मोड़ ली कि ग्रामोफ़ोन ज़मीन पर आ गिरा और एकदम टूट गया। ग्रामोफ़ोन के साथ ही रिकार्ड का डिब्बा भी गिरा और सारे रिकार्ड चूर-चूर हो गए ! भगवान जब शाम को दफ्तर से लौटा तो उसने देखा कि टेबुल की टाँग टूट गई थी, उसके प्यारे रिकार्ड चूर हो चुके थे और ग्रामोफ़ोन के तीन चार टुकड़े हो गए थे ! उसका जी धक से रह गया !

मालिक भगवान को अब पूरा यकीन हो गया कि टेबुल ग्रामोफोन भी रखने के नाकाबिल था और यह जो बाजा टूटा है, यह उसी की ज़िद का फल है। घर की मालकिन माया का कहना था कि वह टेबुल अब एकदम बेकार है और उसे जलवाने के लिये रख देना चाहिए लेकिन भगवान ने तब भी उस टेबुल के प्रति अपना मोह बनाए रक्खा। गरज़ यह कि भगवान ने फिर उस टेबुल को ठीक किया और मेज़पोश की जगह उस पर अख़बार बिछाकर खाना खाने का काम तै कर दिया !

अब मेरे दोस्त, तू उस बदकिस्मत पीढ़े का हवाल सुन ! उसकी टाँग क्या टूटी कि उस पर घर की महरिन ने अपना अख्तियार जमाया और उसी पर बैठकर वह बर्तन माँजने लगी। पीढ़े की जिंदगी में इस तरह जड़-जीवन की गंदगी ही आती चली गई ! एकाध बार उसने महरिन के बदन में अपनी रही सही एकाध कील कोंचने की कोशिश की और अपनी तीन टाँगों को ऐसा 'बैलेंस' (संतुलित) करना चाहा कि महरिन जब बैठने चले तो वह उलट जाए लेकिन महरिन बहुत सधी हुई थी। ऐसे न जाने कितने पीढ़ों को अपने नीचे दबा कर रखने में वह मशहूर हो चुकी थी ! पीढ़े की इस तरह एक न चली और वह उसी के नीचे दबता रहा ! उसके मन में बड़ा असंतोष पलता रहा और वह इस मानवीय सत्ता को उलट देने की हरचंद कोशिशें करता रहा ! टेबुल पीढ़े को दूर से देखता लेकिन वह किसी तरह उसकी मदद न कर पाता !

पीढ़ा इसी तरह निरुपाय पड़ा आँगन की गंदगी सहता रहा। कभी अगर वह कील चुभोता भी तो वह महरी की झाड़ू खाने के लिए तैयार रहता जिसके

ज़रिए उसका उभार बैठा दिया जाता। टेबुल मित्र की हालत पर आँसू बहाता! एक दिन इत्तिफ़ाक से टेबुल के पास एक चैला आ पड़ा। टेबुल ने चैले से कहा—

'दोस्त चैले! अब इम्तहान का समय आ रहा है। हम लोगों को मिल जुल कर पीढ़े को इस मुसीबत से छुटकारा दिलाना ही चाहिए।'

चैला बिल्कुल सहमा हुआ था। उसने धीरे से कहा—

'भाई टेबुल! बड़ी झंझट आ गई है। मालिक ने सब पर अब बड़ा बंधन लगा दिया है। हमारे सारे भाई बंद छत पर पड़े सूख रहे हैं। मसहरी के बाँस भी वहीं पड़े हैं। छड़ियाँ इल्मारियों में बंद हो गई हैं। दरवाजे बंद रहते हैं ताकि शोरगुल न मचे! हम लोगों का मिलना जुलना बंद करा दिया गया है। सब घबड़ाए हुए हैं। कुछ ज़मीन के अंदर घुसना चाहते हैं! सब को बड़ी परेशानी हो रही है! हमारे बहुत से दोस्त साथी तो यह सोचने लग गए हैं कि पीढ़ा ही हमारी असली मुसीबत की जड़ है जिसकी वजह से हम लोगों पर यह विपदा आई है! अब सब को पीढ़े के साथ कोई हमदर्दी नहीं रह गई है! पीढ़ा भाई की नेतागिरी अब कोई मानने को तैयार नहीं।'

टेबुल चैले की बात सुनकर चुप हो गया! उसने अकेले ही लड़ाई मोल लेने की सोची।

एक शाम को मालिक का लड़का जीव टेबुल पर धम्म से आकर बैठ गया और बैठकर अपना नाश्ता करने लगा। टेबुल के मन का गुस्सा उभड़ आया। उसके आँखों के सामने साथी पीढ़े की दुर्गति नाचने लगी। धीरे-धीरे उसने अपनी एक दूसरी टाँग भी इस तरह सिकोड़ ली कि जीव महाशय लद्द से जमीन पर आ गिरे और ज़ोर से पें पें करके टेबुल की विजय का बिगुल बजाने लगे! मालकिन माया ने आकर उसे गोद में उठा लिया! बच्चे को चुप कराने के लिए टेबुल पर तीन चार चपत माया ने लगाई ताकि उसे मन में संतोष हो जाए! बहुत देर बाद जीव को अपनी पराजय भूल सकी!

भगवान के लौटने पर माया ने फिर कहा कि टेबुल एकदम बेकार हो गया है और उसे चूल्हे में लगा कर एक वक्त की लकड़ी बचा ली जाय। मगर भगवान ने टेबुल को कमज़ोर समझकर यह प्रस्ताव रक्खा कि अगर टेबुल बहुत ही कमज़ोर है तो वह अब रोज़ उसी पर हजामत बनाया करेगा और उसका हजामती सामान उसी मेज़ पर रक्खा जायेगा!

अब मेरे दोस्त, पीढ़े का भी हाल सुनो। पीढ़े की तो इतनी दुर्गति हो गई थी कि वह बैठने लायक ही नहीं रह गया था और अब महरिन उस पर बर्तन रखकर माँजा करती थी! इस तरह तू देख कि पीढ़ा अपने 'प्लान' के बरखिलाफ़ बराबर जड़वादी बनाया जा रहा था और वह मजबूर होकर ऐतिहासिक और सामाजिक शक्तियों का वह संघर्ष देख रहा था जिसके क्रूर धक्कों से वह निम्न सर्वहारा वर्ग की ओर ढकेला जा रहा था!

एक दिन सबेरे भगवान ने अपने दरवाजे पर एक कबाड़ी को दस्तक देते हुए पाया। यह कबाड़ी तमाम टूटे फूटे सामान, बोतल, कागज, घी के डिब्बे, पुराने फर्नीचर वगैरह खरीद कर ले जाता था। भगवान ने टेबुल को भी इसी कबाड़ी के हिल्ले लगाना ठीक समझा! बाहर कबाड़ी से भगवान ने बातें शुरू की। इधर टेबुल ने कबाड़ी के पास अपना जाना तै समझकर पीढ़े से कहा—

'भाई पीढ़े अब वह कबाड़ी आ गया है जो हम दोनों को अलग कर देगा! मैंने सोचा था कि हमतुम साथ रहेंगे लेकिन दुनियाँ में साथ-साथ रहकर सभी काम नहीं किए जा सकते! मुझे जाने दो। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि इस जड़वादी आंदोलन को मैं फैलाऊँगा और तुमको लीडर बनाऊँगा।'

पीढ़े की आँखों में आँसू आ गए। मगर उसे फ़ौरन याद आया कि लीडर की आँखें गीली नहीं होतीं इसलिए उसने चटपट पोंछ डालीं।

कबाड़ी लकड़ी का पारखी था। उसने मेज की लकड़ी देखते ही सागौनी लकड़ी पहिचान ली। कम दाम देकर भगवान से वह लकड़ी उसने खरीद ली। दूकान में ले जाकर उसने उसे ठीक ठाक किया। उसके खड़े होने के लिए नए पाए लगाये। उस पर फिर से रोग़न किया और वह नया होकर चमकने लगा। दूकान में उस टेबुल के ही जैसे कई साथी थे जिनके बीच वह मगन हो गया और धीरे धीरे पुरानी कहानी बिल्कुल भूल गया।

इधर पीढ़े का ऐसा हाल हुआ कि जब कबाड़ी ने भी उस पटरे नुमा पीढ़े को लेने से इन्कार कर दिया तो मालिक ने उसे उठाकर घर के पिछवाड़े फिंकवा दिया। घरके पिछवाड़े जहाँ वह आकर गिरा वहाँ तरह तरह के अधजले चैले, चिपटियाँ, कुछ बाँस की कुर्सियों के टूटन, अधजले कोयले और सिगरेट की कुछ पन्नियाँ पड़ी हुई थीं। पीढ़े ने इस नए माहौल में भी अपनी कसरती देह का फायदा उठाया और सबका नेता बन बैठा। चूँकि बहुत से लड़के

सिगरेट की पन्नी बटोरकर ले जाया करते थे और वह सबसे चमकीली थी इसलिए इस पटरे नुमा पीढ़े ने सिगरेट की पन्नी के खिलाफ वर्ग संघर्ष का नारा लगाना शुरू कर दिया और सबको उभाड़ने लगा।

'इस तरह ओ मेरे अक्लमंद बाप ! इस कहानी से साफ पता लग जाता है कि पीढ़े और टेबुल की दोस्ती और संगत तो बराबर रही मगर दोनों अलग अलग दो धातु के बने हुए थे। नतीजा यह हुआ कि पीढ़े का कुसंग टेबुल का कुछ भी न बिगाड़ पाया। टेबुल ज्यों का त्यों बना रहा। इसलिए ओ मेरे बाप ! तू मुझे भी यह समझ कि मैं तेरा बेटा हूँ और मेरे ऊपर किसी कुसंगत का बुरा नतीजा न होगा।'

ए मेरे उल्लू मेजबान ! मँझले बेटे ने जब यह कहानी अपने बाप को सुनाई तो बाप बड़ा खुश हुआ और उसने बेटे को माफ कर दिया और घर में बने रहने की इजाजत दे दी। ए दोस्त ! बाप को यह यकीन हो गया कि मेरा बेटा लायक है। साथ ही उसे यह भी पता चल गया कि कसरती बदन वाला आदमी हमेशा अक्ल का कच्चा होता है।'

कबूतर अपनी बात पूरी करके चुप हो गया।

काठ के उल्लू ने बात पकड़ते हुए कहा—

'हाँ हाँ मेरे नौजवान कबूतर ! यह किस्सा जो तूने मुझे अभी सुनाया, मेरी कौम में बहुत दिनों से मशहूर है और लोगों के मुँह से सुनने में आया था कि किसी बेवकूफ लकड़ी के पीढ़े ने हमारी जात को इस तरह बदनाम किया था। लेकिन खैर उसकी बात छोड़। हाँ जो तूने यह बात कही कि कसरती बदन का आदमी बराबर अक्ल का कच्चा होता है, सो बात मैं नहीं मान सकता।

कबूतर ने कहा—

'ए काठ के पंछी ! तू मेरी बात मान ले। मैंने कई एक अच्छे खासे इन्सान देखे जो कि पहले खासे हुनर वाले थे लेकिन जबसे उन्होंने कसरत करनी शुरू की तब से उनकी अक्ल ही गुम हो गई।'

काठ के उल्लू ने कहा—

'ए मेरे परदेसी मुसाफिर ! भूल मत कि तुझे मैंने नसीहत दी थी कि धीरज कभी न खोना और दोस्त को कभी धोखा मत देना, क्योंकि यही दोनों

चीजें आदमी का बेड़ा पार लगाती हैं। अब तू वह हवाल सुन कि कसरत को एकदम नफरत करनेवाला इन्सान भी किस किस तरह से बेवकूफी कर बैठता है। अगर तू चाहे तो मैं तेरे सामने वह बयान कर सकता हूँ क्योंकि वह मेरी जानकारी के भीतर है।

कबूतर ने कहा—'हाँ मेरे बुजुर्ग दोस्त! आखिर तो हमें रात काटनी ही है। इससे बढ़कर और क्या अच्छा होगा कि तू मुझे अपने इल्मो हुनर और जौहर से भी वाकिफ करा दे! तू मुझे वह किस्सा भी सुना दे ताकि मुझे याद रहे और वक्त जरूरत काम दे सके।'

काठ के उल्लू ने कबूतर से जरा और नजदीक खिसक आने को कहा।

कहानी की कहानी

कबूतर आगे क्या खिसका कि एक मुसीबत आ खड़ी हुई। शीशे की एक बोतल, जिसमें कागज़ी मछलियाँ तैर रही थीं, उसके धक्के से ज़मीन पर आ रही और इतने ज़ोर की आवाज़ हुई कि दोनों पंछी सहम उठे। काठ का उल्लू बिना कुछ बोले मालिक के सोने वाले दरवाज़े की तरफ़ देखता रहा। उसका ख्याल सही निकला। मालिक के सोने वाले कमरे की बत्ती जल उठी! पर्दा हटा कर शिवचरन भीतर आया और फिर इस कमरे की बत्ती भी जली! आवाज़ का कारण ढूँढने के लिए शिवचरन ने ज्यों ही सर घुमाया, उसे यह कबूतर आतिशदान पर बैठा हुआ दिखाई पड़ा। उसने नीचे गिरी हुई बोतल की दशा देखी। उसे सरा कुछ समझते देर न लगी।

ताली बजा कर कबूतर को उड़ाने की हरचंद कोशिश मालिक ने की लेकिन कबूतर तो कहानी सुनने के लिए जमा हुआ था। वह भला उड़ता भी क्यों? वैसे नींद में भरा शिवचरन ताली भी ऐसी बजा रहा था जो कि कबूतर को क्या स्वयं उसे ही शायद नहीं सुनाई पड़ रही थी। हार कर शिवचरन भीतर से एक टहलने वाली छड़ी ले आया।

हाथों में हथियार देख कर शांति का कबूतर आतिशदान से खिसका। लेकिन सिवाय कमरे में चक्कर काटने के वह बाहर जाता भी तो कहाँ से! रोशन दान पर जा बैठा! मालिक ने सोचा कि इसी रोशनदान के बाहर निकल जायगा। लेकिन वह कबूतर डिगा नहीं। मालिक ने सोचा कि कबूतर को छड़ी खींच कर मार दे लेकिन उसे अपनी कीमती तस्वीरें टूटने का डर था! काफ़ी देर तक शिवचरन और कबूतर के बीच लुका छिपी और छुआ छुई का खेल चलता रहा! शिवचरन को नींद बुरी तरह घेर रही थी!

अंततः उसने हार मान ली! संधि कर ली गई। कबूतर रोशनदान पर बैठा रह गया। मालिक ने आतशदान पर से सब शीशे की चीज़ें उतार कर इल्मारी में बन्द कर दीं! काठ के उल्लू को भी वह उठा कर एक बन्द इल्मारी की ओर ले चला। फिर जाने क्यों उसने आलस में आकर उसे वहीं पड़ा रहने दिया!

सर्दी बढ़ रही थी। शिवचरन को भी इस जाड़े की रात में कबूतर हाँकने

के लिए उठना वेहद खला था लेकिन मजबूरी थी ! उसने कमरे की बत्ती बुझाई और फिर अपने सोने के कमरे में जाकर विस्तर पर पड़ रहा !

काठ के उल्लू और कबूतर दोनों ने ही देखा कि शिवचरन ने पास वाले कमरे की बत्ती भी बुझा दी। थोड़ी ही देर में उसके खर्राटा भरने की आवाज़ आने लगी !

सब तरफ़ शांति छा जाने पर कबूतर फिर रोशनदान से उड़ कर आतिशदान पर अपने मित्र के पास आ बैठा !

कबूतर ने कहा—'ए मेरे मेज़बान ! मुझसे बड़ी गलती हो गई कि वह शीशी टूट गई लेकिन वह इस कदर नज़दीक थी कि ज़रा सा पंख लगने से ही गिर गई ! मेरा उसमें ज्यादा कुसूर नहीं है !'

काठ के उल्लू ने कहा 'ख़ैर मेरे मेहमान ! जो कुछ हुआ सो जाने दे। अब तो आतिशदान खाली ही है मैं तो डर रह था कि कहीं वह मुझे भी न इल्मारी में बन्द कर दे और मैं रात भर तुझसे बात न कर पाऊँ। लेकिन शुक्र है उस परमात्मा का जिसने हम दोस्तों की दोस्ती का ख्याल किया और मुझे बाहर ही रहने दिया। ए कबूतर ! दोस्ती वह चीज़ है कि अगर वह नेक है तो परमात्मा भी उसका ख्याल करता है।'

कबूतर ने कहा 'लेकिन तेरे मालिक ने तो सिर्फ आलस की ही वजह से तुझे बाहर रहने दिया नहीं तो वह तुझे भी बन्द कर सकता था। खैर छोड़ ! इस बहस में पड़ कर वक्त गवाँने से अच्छा है कि तू अपनी वह कहानी सुना कि बिना कसरत किए ही आदमी अपना दिमाग़ किस तरह खो बैठता है ! ए दोस्त ! रात आधी होने आ रही है और सुबह होते ही मुझे चला जाना है। इसलिए कहानी जल्द ही सुना !'

'ए कबूतर ! अच्छी बात है ! अब मैं तुझे वही कहानी सुनाने जा रहा हूँ।

'यह कहानी मैंने यहीं अपने कमरे में इसी आतशदान पर बैठे बैठे सुनी है। सुनते वक्त मैंने यह कहानी कई टुकड़ों में सुनी थी लेकिन दिलचस्प बनाने के लिए मैं इसे पूरी कहानी के तौर से सुनाता हूँ।

●

सींकिया पहलवान की दास्तान

उर्फ़

रूई के व्यौपारी नाकामयाब प्रेमी की कहानी

'ए मेरे होशियार कबूतर ! किस्सा यूँ सुना कि परम पवित्र गंगा नदी के किनारे एक मशहूर तीरथ की नगरी बसी हुई थी जिसे शंकर पुरी कहा जाता था ! इसी शंकरपुरी नगरी में एक घाट था जिसका नाम रमइया घाट था। रमइया घाट का मालिक था घटवारा गंगा सिंह। गंगा सिंह अपना सारा वक्त उसी घाट पर गंगा के किनारे पड़ा पड़ा काट देता था। यह घाट बहुत चलता घाट नहीं था इसलिए जो कोई भूले भटके नहाने आ जाता था, उसे वह नहाने के लिए जगह बताकर चंदन टीका कर देता था ! इसी घाट पर एक फूल बेचने वाली मालिन रहा करती थी। इस मालिन का नाम जमुनी था। जमुनी का माली काफ़ी दिन हुए डूब कर मर गया था। तब से जमुनी बराबर फूल बेचा करती थी और जैसे-तैसे अपना गुज़ारा किया करती थी !

'ए दोस्त, जैसा कि मैं बयान कर चुका हूँ, घाट पर बहुत कम यात्री आते थे इसलिए अक्सर ऐसा होता था कि मालिन जमुनी और गंगा सिंह घट-वारा बिल्कुल अकेले ही घाट की रखवाली किया करते ! गंगासिंह दिन-दिन भर जमुनी से बातें किया करता। गंगासिंह जब भाँग-बाँग छानकर घाट पर मौज से बैठता और हँस-हँसकर चार बातें मालिन जमुनी से करता तो जमुनी उसकी चौड़ी छाती और भरी-भरी मूछों पर न्यौछावर होकर तन-मन लुटाने लगती ! ए समझदार ! इसके बाद वही हुआ जो ऐसे मौक़ों पर होकर ही रहता है ! घटवारे और मालिन की इस मुहब्बत ने देबी प्रसाद को जनम दिया।

कुछ ऐसा हुआ कि देबी प्रसाद का जनम अपने वक्त से पहिले हो गया। नतीजा यह हुआ कि यह लड़का बहुत बदसूरत पैदा हुआ। मालिन जमुनी को बड़ा सदमा पहुँचा कि उसका लड़का ऐसा हुआ ! लेकिन पास पड़ोसिनों के सम-झाने से कि आगे चलकर लड़के का नाक नक्शा सुधर जायगा, उसे थोड़ा ढाढस बँधा !

इस बीच बिधना की मरजी ऐसी हुई कि घटवारे गंगासिंह ने एक दिन सावन की भरी गंगा में जो बुर्ज़ से एक छलाँग लगाई तो गंगा मइया ने उसे अपने पेट में ऐसा छिपा लिया कि फिर उसने लहर के ऊपर सिर न निकाला ! जमुनी कुछ दिन रोई लेकिन फिर जब नहीं रहा गया और पास वाले घाट के

सुमेरसिंह ने उसे अपने घर रहने के लिए बुलाया तो जमुनी अपने देवीप्रसाद को लेकर सुमेरसिंह के पास रहने के लिए चली गई !

देवी बड़ा होने लगा। लेकिन उसकी यह बढ़ती हुई उम्र बदसूरती को मिटा न सकी ! वह अपनी माँ जमुनी के लिए घी का लड्डू था और इसलिए टेढ़ा होने पर भी उसे वह अच्छा लगता था ! देवी का ढाँचा खुदा ने बहुत सोच-समझ कर बनाया था। खुदा न ख्वास्ता वह कहीं बड़ा आदमी हुआ होता और दुनियाँ के लोग और उनकी कुमेटियाँ उसे सोने या उससे भी महँगी प्लाटिनम से तौलने का प्रोग्राम बनातीं, तो उन्हें एकदम घाटा न होता ! उसे अपनी इस कम तौल पर खुद बड़ा ताज्जुब होता था और लोगों से वह बताता था कि उसकी तौल परमात्मा ने इसीलिए कम रक्खी है कि वह बड़ा आदमी होकर अपने आप को तुलवा सके ! बढ़ते-बढ़ते उसका कद भी तीन फुट पर आकर इस बेतुके ढंग से खत्म हो गया कि यह ख्याल होने लगता था कि शायद परमात्मा की नापने वाली पटरी ही उस मौक़े पर आकर टूट गई ! बाहें इतने बेडौल किस्म की हो गई थीं कि जैसे किसी बेल में अच्छी ख़ासी लौकियाँ फलीं हों लेकिन किसी बीमारी से एकदम सूख गई हों ! उसकी टाँगे उन खपच्चियों का काम बखूबी देतीं थीं जिन पर उसका सारा ढाँचा रुका हुआ था ! ए कबूतर ! देवी को देखकर आदमी को यह शक हो सकता था कि यह खेत में खड़ा 'पुतला' है !

सुमेरसिंह ने लड़के का नाम स्कूल में लिखवा दिया। थोड़ा बहुत पढ़ा लेकिन आगे गाड़ी नहीं चली। पढ़ाई छोड़ दी। ए कबूतर ! अब तू सुन कि यह देवी बड़ा हविस वाला आदमी था। पढ़ा तो गया नहीं लेकिन यह सोचने लगा कि किस तरह से वह बड़ा आदमी बन सकता है और दुनियाँ में अपना नाम कमा सकता है ! ज़माने को देखते हुए हमारे इस देवी ने ठीक ही सोचा। पढ़ाई लिखाई में जिदंगी के पंद्रह बीस कीमती बरस बरबाद करने से अच्छा है कि उन्हें किसी ऐसे काम में लगाया जाय जो आगे चल कर काम दे सकें !

ए मेरे पंछी मेहमान ! जब इस देवी के मन में बड़ा आदमी बनने की हविस समाई तो पहिले पहल इसे यह ख्याल हुआ कि उसकी सूरत शक्ल ऐसी नहीं है कि जो इसे आसानी से बड़ा आदमी बन जाने दे ! उसी दिन से उसका परमात्मा पर से यकीन उठ गया और वह उसे एक तरफ़ी कार्रवाई करने के लिए उल्टी सीधी कहने लगा ! उसे परमात्मा की किसी हरक़त पर यक़ीन न आता और वह हमेशा उसकी बेइंसाफी की बात किया करता। उसे किस्मत नाम की चीज़ से

चिढ़ हो गई और इसे तोड़ मरोड़ कर फेंक देने के लिए उसने अपनी कमर कसी !

'अब मैं तुझे यहाँ से एक नए आदमी के बारे में कुछ बयान बताऊँगा ।' काठ के उल्लू ने कहा ।

कबूतर ने उड़ती सी निगाहें चारों तरफ़ डालते हुए कहा—

'ए मेरे सागौनी उल्लू ! तू किस कदर दिलचस्प कहानी बता रहा है कि मैं एकदम अचकचे में पड़ गया हूँ । यह तू ठीक ही कहता है । अक्सर बड़ी अजीब हस्तियों में मशहूर होने की हविस समा जाती है और उसके लिए वह जो न कर गुज़रें वह थोड़ा ही समझना चाहिए ।'

लकड़ी के बने हुए उल्लू महाशय ने कथासूत्र आगे चलाया—

'बात यही है मेरे साथी ! उसमें लुत्फ़ इस बात का रहता है कि ऐसे बेवकूफ़ों के दिमाग़ को उकसा कर चौपट करने वाले दस पाँच तमाशबीन भी मिल जाते हैं । ए दोस्त ! यह तमाशबीन, हालाँकि चौपट होने वाले आदमी के लिए तो निहायत पाजी साबित होते हैं, लेकिन किस्सा सुननेवालों के लिए बड़े ही ज़रूरी होते हैं क्योंकि उनके बिना किस्सा आगे बढ़ ही नहीं सकता ।

'इसी तरह का एक आदमी था—गुरदयाल । गुरदयाल एक डिप्टी साहब का लड़का था । डिप्टी साहब अपनी नौकरी छोड़ चुके थे और वह गंगा किनारे भगवत्भजन में अपना वक्त लगाते थे । गुरदयाल पढ़ लिखकर भी बेकार था । वह सिर्फ़ बड़े आदमियों की सोहबत में बैठता उठता था और उनकी हाँ हुज़ूरी किया करता था । वैसे गुरदयाल बड़ा कामकाजी आदमी था और वक्त पड़ने पर वह बड़े आदमियों के यहाँ इस तरह काम करता था कि वे लोग इसका बड़ा ख्याल करते थे । सो इस गुरदयाल की यह आदत थी कि वह अपने ख़ाली वक्त में, यानी, उसे जब बड़े आदमियों की हुज़ूरी से छुट्टी मिलती थी तो वह देबी प्रसाद के पास बैठता था । देबी प्रसाद को यह सही ख्याल हो गया था कि अगर दुनियाँ में कोई उसका सच्चा हिमायती और दोस्त है जो उसका हर तरह भला चाहता है तो वह यही गुरदयाल नाम का आदमी है । गुरदयाल और देबी प्रसाद की पहिली मुलाकात उस घाट पर हुई जहाँ देबी का सौतेला बाप सुमेरसिंह रहता था । कहते हैं कि सच्ची दोस्ती के लिए बहाना नहीं होता, सो इन दोनों में धीरे-धीरे यही सच्ची दोस्ती हो निकली ।

देबी ने सोचा कि अगर बड़ा आदमी बनना ही है तो यह घटवारे का

पेशा छोड़ना पड़ेगा क्योंकि यह पेशा करते हुए बड़ा आदमी बनना मुश्किल काम होगा। यही सोच बिचार कर उसने एक दिन गुरदयाल से कहा—

'ए मेरे दोस्त ! आज मैं तुझसे अपनी जिंदगी के एक मोड़ के बारे में कुछ कहने आया हूँ। मेरे मनमें यह समाई है कि मुझे बड़ा आदमी बनना है। मुझे खुदा ने ऐसा नहीं बनाया कि मैं अपने चेहरे मोहरे के बल पर काश्मीरी समझ लिया जाऊँ और तरक्की का दरवाजा मेरे लिए खुल जाय। मैंने यह भी सोच लिया कि बटवारे के पेशे से मेरा कोई निस्तार नहीं। इसलिए तू ही मुझे बता कि इस सिलसिले में मुझे क्या करना चाहिए ?'

गुरदयाल अकस्मात् अपने दोस्त की यह बात सुनकर बड़े चक्कर में पड़ा और थोड़ी देर तक चुप बैठा रहा। आखिरकार जब देबी ने उससे फिर सवाल किया तो उसने सोच लिया कि बिना जवाब दिए छुट्टी नहीं मिल सकती। सोचते-सोचते उसने देबी के लायक एक काम ढूँढ निकाला—

'ओ मेरे दोस्त देवी ! अगर तेरे मन में यही हविस समाई है कि तू बड़ा आदमी बन जाय तो मैं तेरा दोस्त होने के नाते तेरी मदद जरूर करूँगा। तू अपनी सूरत शक्ल के बारे में अफसोस न कर। आज के जमाने में परमात्मा की दी हुई सूरत शक्ल को कुछ न मान कर पोशाक को ही सब कुछ माना जाता है। इसलिए मेरे दोस्त तू भी अपना खमियाजा इस इंसानी रूप रंग के सामान से पूरा कर सकता है !'

देबी ने पूछा—

'भला मैं क्या पहिनूँ कि मेरी शक्ल सुधर जाये ?

गुरदयाल ने जवाब दिया—

'अगर तू खूबसूरती के लिए कपड़े पहिनना चाहता हो तो वैसा बता और अगर फायदे की नजर से पहिनना चाहता हो तो वैसा बता।'

देबी ने पूछा—

'यह पोशाक का क्या माजरा है ?'

गुरदयाल ने कहा—

'देबी प्रसाद ! आज कल कपड़े खूबसूरत दीखने के लिए उतने नहीं पहिने जाते जितने फायदे या उपयोगिता की दृष्टि से पहिने जाते हैं। इसलिए तू किस तरह के कपड़े पहिनना चाहता है, वह हमें बता !'

देवी ने बताया कि वह पोशाक सिर्फ 'बड़ा आदमी' बनने की गरज से ही बदलना चाहता है इसलिए गुरदयाल उसे उपयोगिता वाली पोशाक बताए।

गुरदयाल ने कहा—

'तो सुन! तू अपने सिर को नंगा रखने के बजाय उस पर डोंगी मार्का गांधी टोपी लगाना शुरू कर, क्योंकि हर हालत में, चाहे जो हुकूमत रहे, टोपी यही डोंगी मार्का ही चलेगी! आंखों पर से यह पुरानी कमानी का टुटहा चश्मा उतार कर नए मोटे फ्रेम का चश्मा लगा। याद रहे कि यह फ्रेम इतना मोटा और भड़कीला रहे कि आदमी कि निगाह चेहरे पर न ठहर कर, उसी मोटे फ्रेम पर ठहरे। सिगरेट पीना जारी रख लेकिन यह जो तू मुट्ठी बाँध कर और उसमें सिगरेट खोंस कर पीता है, यह तरीका तू छोड़ कर नया तरीका सीख कि किस तरह अधजली सिगरेट होंठ से चिपक कर लटकी रहती है और आदमी बखूबी बातें भी करता रहता है।'

देवी ने कहा 'यह तो बड़ा मुश्किल होगा!'

गुरदयाल ने आगे कहा—

'कुछ भी मुश्किल नहीं है। सब काम करने से आ जाता है। अपनी पोशाक खद्दर की बनवाले। चादर ज़रूर साथ रख। जूतों की जगह पेशावरी सैंडिल का इस्तेमाल कर जो कि घर में चप्पल और बाहर जूतों का काम दे सके! इस पोशाक और फैशन के साथ तू इस देश की धरती पर कहीं भी जाकर सुख से विचर सकता है!'

देवी को अपने दोस्त की बात पर पूरा भरोसा था! अब उसने अपने पेशे के बारे में सलाह ली!

गुरदयाल ने फिर कहा—

'जहाँ तक मैं समझ पा रहा हूँ, मेरी सलाह तुझे यही है कि तू रुई का व्यौपार कर! रुई के व्यौपार में तुझे फ़ायदा ही फ़ायदा होगा! न सिर्फ यह कि तू रुई की गाँठे मँगा कर उनका व्यौपार कर बल्कि तू साथ ही साथ रुई धुनवाने का भी काम शुरू कर दे। इससे बड़े आदमियों से रब्तज़ब्त बढ़ेगी। उनके यहाँ से काम ले आना और पूरा करवा कर दे आना। उनकी नज़रों में आ गया तो समझ कि दुनियों की नज़रों में आ गया। न सिर्फ़ यह बल्कि उससे जो बिनौला निकलेगा, उससे बिनौले का भी व्यौपार शुरू हो जायगा और अगर कहीं किस्मत ने साथ दिया तो बिनौले से घी का भी काम शुरू हो सकता

है। और फिर इसी तरह से एक दिन तू भी टाटा और बिड़ला की तरह हो जायेगा जिनकी शक्ल कोई नहीं देखता सिर्फ़ नाम देखता है।

देवी प्रसाद थोड़े में खुश, थोड़े में नाखुश होने वाले आदमियों में से था ! इस बार वह बड़ा खुश हुआ। उसे अपने दोस्त की अक्ल पर बड़ा अचरज हुआ कि किस तरह वह इस तरह की अनोखी बातें सोच लेता है !

लिहाज़ा, ए कबूतर, देवी प्रसाद ने इस तरह धीरे धीरे रुई का ब्यौपार करना शुरू कर दिया ! सौतेले बाप सुमेरसिंह के कमाए रुपए से इसने यह सब करतब करने शुरू कर दिए। रूई रखने के लिए एक गोदाम लिया, तमाम धुनियों को इकट्ठा किया, बड़े घरों से गद्दे, लिहाफ़, तकिए तोशक के खोल इकट्ठा करने शुरू किया ! गुरदयाल ने देवी की कुछ मदद की और इसकी बड़े लोगों के घरों में पहिचान करवा दी !

ए मेहमान, जैसा कि तू जानता ही होगा, ब्यौपार और मुहब्बत में हमेशा दूसरों से गहरा मुकाबिला करना पड़ता है ! सो देवी का भी यही हाल हुआ। कुछ धुनियों ने मिल कर एक पंचायत की और देवी प्रसाद को इस पेशे से बाहर निकल जाने के लिए कहा ! ए कबूतर ! तुझे पहिले ही बता चुका हूँ कि देवी हल्की तबीयत और छोटे मिजाज़ का आदमी था। धुनियों की यह फटकार उससे सही न गई !

उसने ऐसा किया कि अपने दोस्त गुरदयाल की मदद से एक पर्चा लिखा जिसमें इन धुनियों को बड़ी गाली गलौज दी। अब सवाल यह उठा कि पर्चा लिखकर छपाया कहाँ जाय, जिससे धुनियों का नुकसान हो सके। होते करते गुरदयाल गुरु के सुझाव पर इस देवी ने एक अखबार नुमा पर्चा छपवाना शुरू किया जिसे 'रुई ब्यौपार मण्डल' का नाम दिया। इसी पर्चे में 'धुनियों का स्वाँग' नाम से वह गालीनामा छापा गया।'

कबूतर उल्लू की बात काटते हुए बोला—'ए बुजुर्गवार दोस्त, तू जिस तरह के आदमी की तबीयत बयान कर रहा है, वह अगर लिखने पढ़ने वाली दुनिया की जीव होता तो आलोचक हुआ होता।'

काठ के उल्लू ने कहा—

'यह तू ने किस का नाम लिया ? और यह क्या चीज़ होती है ?

'यह एक नए किस्म का लिक्खाड़ जीव होता है ! इसका काम गालियाँ देना और लोगों से दुश्मनी मोल लेना है ! यह अपना झंडा ऊँचा करके

चलना चाहता है और सबको एक ही लाठी से हाँकना चाहता है ! इस जंतु का यह ख्याल रहता है कि वह जैसा चाहे दुनियाँ के लोग उसी तरह चलें। यह बेजाने बूझे तरह बेतरह के फ़तवे देने का आदी होता है, हालाँकि इसके फ़तवे सिर्फ़ एक मज़ाक बन कर रह जाते हैं। लेकिन, फिर भी यह अपनी बेहयाई से बाज़ नहीं आता ! यह जीव भी काफ़ी हविस वाला होता है और अपने हाथ पैर मारता रहता है !' कबूतर ने समझाया।

काठ के उल्लू ने कहा—'तू ठीक कहता है मेरे दोस्त ! देबी प्रसाद की हालत बिल्कुल ऐसी ही थी ! बल्कि 'रुई व्यौपार मंडल' नाम का पर्चा छाप कर इसने यह सोचा कि व्यौपारी होकर भी वह लिख सकता है क्योंकि उसके सामने बिड़ला बनने का आदर्श था। गरज यह कि एक बार छाप कर यह परक गया। इसने धीरे-धीरे कई नमूने छापने शुरू किए। कभी रुई पैदा करने वालों को गालियाँ देता, कभी अपने ही दूसरे हमपेशों को धुनता और कभी वह खुद अपने ही साथियों पर कीचड़ उछालता।

ए कबूतर इन सारी बातों के दर्म्यान तुझे यह बताना मैं भूल गया कि एकाएक देबी प्रसाद के कानों में ख़राबी आ गई और वह बिना चिल्लाए किसी बात को सुनने से मजबूर हो गया। वह अपनी इस कमज़ोरी को सबसे छिपाता और चाहता कि यह बात किसी भी तरह फैलने न पाए। अक्सर वह बातचीत के दर्म्यान उल्टे सीधे हाँ हूँ कर जाता। जिनको वह समझ या सुन नहीं पाता था उनके लिए बड़े सधे हुए जवाब देता था। कभी कभी तो मुस्करा कर टाल देता था। ए दोस्त, मुस्कराहट में भी बड़े भेद होते हैं। कभी वह तारीफ या हुँकारी भरवा देती है तो कभी एकदम कन्ने से काट देती है।

अब तू सुन कि मेरे दिलदार कबूतर ! किस्सा यहीं से एक दूसरा रंग पकड़ता है और इस देबी प्रसाद के इश्क औ रोमानियत का दौर शुरू होता है। ए मेरे दोस्त, इश्क बुरी चीज़ होती है और इसके चक्कर में पड़ कर देवी प्रसाद को क्या-क्या नहीं देखना पड़ा, वह तू अब आगे-आगे देखेगा।

हुआ ऐसा कि जिस मोहल्ले में इस देबी प्रसाद का घर था, उसी मोहल्ले में एक बंगाली परिवार रहता था। उस परिवार में जहाँ कई लोग थे वहाँ एक नौजवान लड़की भी थी जिसका नाम राजलक्ष्मी सुनने में आया था। ए मेरे मेहमान, यह तू जानता ही होगा कि मुहल्ले में नौजवान लड़कियों के रहने का नतीजा क्या होता है ! राजलक्ष्मी देखने सुनने में हूर की परी तो

नहीं थी लेकिन फिर भी उसके चेहरे में वह सलोनापन था कि लोगों की नजरों से उसका नमक बचकर निकल नहीं पाता था ! राजलक्ष्मी वैसे तो टाइपिस्ट का काम करती थी लेकिन शहर में उसकी बड़ी रब्त ज़ब्त थी। कहते हैं कि नाटक करने, गाना गाने, और दावतों में शरीक रहने वालों में वह सबसे आगे रहती थी ! ऐसे लोग बड़ी जल्दी मशहूर होते हैं और लोग उनसे दोस्ती करने के लिए हाथ बढ़ाने लगते हैं। ए मेरे दोस्त, ऐसे मौकों को लड़कियाँ और लड़के कभी हाथ से जाने नहीं देते और लौंडियों को एक के मुकाबिले में दस तारीफ करने वाले हमेशा पसंद आते हैं ! यही हाल इस राजलक्ष्मी का भी था। जिस वक्त वह अपनी शोख़ साड़ी में खंडवाला नए किस्म का सलूका पहिन कर, जूड़े में फूल खोंसे हुए, अपनी साइकिल पर बैठकर बीच बाज़ार से निकल जाती, उस वक्त हाय-हाय से आसमान गूँजने लगता ! नतीजा यह था कि बड़े बड़े डाक्टर प्रोफ़ेसर, शायर, कलाकार लोग अपने अपने हुनर से उसे रिझाने और अपने साथ घुमाने के लिए बाज़ी लगाते फिरते थे।

किस्मत की मार देख कि देबी प्रसाद को मुहब्बत हुई भी तो इसी हूर से जाकर हुई। चार छः दिन जो देबी प्रसाद ने इसको इधर से उधर निकलते देखा तो इसके कलेजे पर साँप लोट गया। जिस तरह यह अपने हर मामले में गुरदयाल से सलाह किया करता था, उसी तरह इस इश्क के मामले में भी इसने गुरदयाल से जिक्र करके उसकी राय जान लेना ठीक समझा !

गुरदयाल ऐसे मौक़ों पर कभी चूकता नहीं था और हमेशा ऐसी सलाहें देने में माहिर साबित होता। गुरदयाल ने समझाया कि इस बार तो खुद परमात्मा ने उसके मन में यह बात भरी है नहीं तो यह होना बड़ा मुश्किल था।

देबी प्रसाद ने पूछा—

'सो कैसे ?'

गुरदयाल ने कहा—

'यह लड़की तो सारे शहर की जान है। और यह भी तू जानता होगा कि इस लड़की पर शहर के ही नहीं बल्कि बाहर के भी तमाम लोग फ़िदा हैं। इसलिए अगर तूने इससे मुहब्बत की और तू कामयाब हो गया तो समझ ले कि तेरी शोहरत का डंका बैठे बैठाए पूरे हिन्दोस्तान में पिट जायगा और तुझे अपनी शोहरत के लिए कुछ भी करना नहीं पड़ेगा।

देबी प्रसाद ने फिर सवाल किया—

'लेकिन इस तरह शोहरत कैसे मिलेगी ?'

गुरदयाल ने बताया—

'इसके तमाम चाहने वाले जब देखेंगे कि वह उनके कब्ज़े से निकल कर तेरे चंगुल में आ फँसी तो वह लामुहाला तुझे गाली देंगे और इस तरह चाहे बुरे भाव से ही क्यों न हो, तेरी चर्चा हर तरफ़ होने लगेगी !'

देबी प्रसाद कायल हो गया।

गुरदयाल ने आगे फिर समझाया—

'अब तू सब कुछ छोड़ कर इसी लड़की के पीछे पड़ जा और जैसे भी हो, हर तरह से इसका दिल अपनी तरफ़ फेरने की तरकीब लड़ा यही करने में निस्तार है। तू काम का आदमी बन जायगा।'

देबी प्रसाद ने घिघिया कर कहा—

'ए गुरदयाल, जिस तरह से तू मेरी सारी मुसीबतों को हल करता रहा है उसी तरह से तू मुझे यह भी बतला कि मैं किस तरह मुहब्बत अदा करूँ और कैसे कामयाबी हासिल करूँ ?'

गुरुदयाल ने कहा—

'अच्छा तो सुन। अगर तू मेरी ही राय पर चलना चाहता है तो मुहब्बत करने से पहिले तू यह पता लगा ला कि तेरी माशूका के दिल में तेरे लिए कोई जगह है या नहीं। क्योंकि ए देबी ! जहाँ जगह नहीं होगी वहाँ तुझे बैठने में मुसीबत होगी।'

देबी ने पूछा—

'लेकिन यह वह बताएगी कैसे ?'

गुरुदयाल ने जवाब दिया—

'उसकी भी तरकीब अब सनीमा वालों ने बता दी है। तू अपने घर की छत पर से एक पतंग उड़ा। वह पतंग ऐसे मौके पर उड़ा जब कि वह नाज़नीं अपनी छत पर टहल रही हो। ए देबी, तूने इस बात को तो देखा ही होगा कि वह लड़की अकसर सुबह के वक्त अपनी छत पर टहलती है। उसी वक्त तू पतंग उड़ा कर उसकी छत पर गिरा दे। उस पतंग में तू एक पूँछ लगा कर उड़ा और उस पर मुहब्बत के रंग में रँगा कोई शेर लगा दे ! अब अगर उसकी छत पर वह पतंग गिरती है और वह उसे तोड़ कर रख लेती है तो समझ ले कि उसके दिल में तेरे लिए जगह है और अगर वह कुछ नहीं करती

और तेरी पतंग सही सलामत चली आती है तो समझ ले कि उसके दिल में तेरे लिए कोई जगह नहीं है !'

देबी प्रसाद को बात समझ में आ गई। उसने इश्क की पहिचान के लिए वही हाथकंडा अज़माया। पतंग की पूँछ पर उसने लिखा 'मेरी पूँछ रे, मेरे दिल की तरह लहराए रे...' और पतंग उड़ा दी। राजलक्ष्मी अपने छत पर टहल रही थी, कि उसी वक्त सुबह के छः बजे के आस पास, देबी प्रसाद की उड़ाई हुई पतंग उसके छत पर आ गिरी। राजलक्ष्मी ने मुस्करा कर देखा और वह पतंग मय डोर के तोड़ कर रख ली। उसका तोड़ना था कि देबी प्रसाद उछल पड़ा। उसने यह मालूम कर लिया था कि उस लड़की के दिल में उसके लिए जगह मौजूद है ।

देबी प्रसाद को मुबारकबाद देते हुए गुरुदयाल ने बताया कि वह डाक्टरों-प्रोफ़ेसरों के चक्कर में पड़ी हुई है, इसलिए उसको उस फन्द से निकालने के लिए उसे खुद भी डाक्टरी की सनद हासिल करनी चाहिए। उसने यह भी बताया कि इश्क का जाल पूरी तरह से फैलाने के लिए उसे यहाँ की नाटक मण्डली का भी मेम्बर बनना होगा !!

उधर देबी प्रसाद को यह भी पता चला कि यह राजलक्ष्मी टाइप करने का काम करती है और इसके परिवार का खर्च इसी के सहारे चलता है। सच्चा आशिक हमेशा अपनी प्रेमिका का मददगार होता है इसलिए उसने अपने 'रुई व्यौपार मण्डल' के कुछ पर्चे एक दिन ले जाकर राजलक्ष्मी के कदमों में जा रक्खे। नाटक मण्डली का मेम्बर चूँकि यह देबी प्रसाद बन चुका था इसलिए राजलक्ष्मी इसकी सूरत से परिचित हो गई थी ! दरवाज़ा खटखटाते ही वह बाहर निकली और उसने उससे पूछा—

'कहिए, कोई काम है ?'

बहुत सीधा सवाल सुनकर देबी प्रसाद हिचका लेकिन उसने यह कहा कि वह 'रुई व्यौपार मण्डल' के कुछ पर्चे टाइप कराना चाहता है और वह इसी के लिए उसको चरणों में हाज़िर हुआ है ! उसने यह भी कहा—

'मैं बड़ा ग़रीब आदमी हूँ। ज्यादा कह सुन भी नहीं पाता ! मेरा यह पर्चा बराबर चलता रहता है सो अगर आप मेहरबानी करके हमेशा छाप दिया करें तो आपका एहसान जिंदगी भर नहीं चुका पाऊँगा। जो कुछ भी बन पड़ेगा इसके लिए आपको मेहनताना देता रहूँगा।

राजलक्ष्मी फिर मुस्करा कर चुप हो गई। उसका तो यह पेशा ही था। ए दोस्त, पेशेवर आदमी हमेशा मुस्कुराता है। छापने के लिए काग़ज़ उसने ले लिया! देवी प्रसाद बराबर खुश होता चला जा रहा था लेकिन उसे यह नहीं पता था कि परमात्मा ने आगे उसके लिए क़िस्मत की कैसी कैसी लकीरें खींच रक्खीं थीं।'

कबूतर ने कहा—'ए मेरे बुज़ुर्ग। यह देवी प्रसाद सचमुच अक़्ल का बड़ा कच्चा था और इसे प्रेम करना नहीं आता था। लेकिन हाँ जो तूने वह डाक्टरों प्रोफ़ेसरों की बात उठाई थी, उसका क्या हुआ?'

काठ के उल्लू ने अपनी नींद से भरी लगने वाली बोझिल आँखों को घुमाकर कहा—'ए कबूतर। क़िस्सा बड़ा दिलचस्प है और आगे तुझे इसमें बड़े गुल खिलते दिखाई पड़ेंगे।

देवी प्रसाद ने यह महसूस किया कि वह नाटक मण्डली के भीतर सबसे हँस कर बोलती चालती है लेकिन एक देवी प्रसाद को ही वह बेरुख़ी से देखती है! उसे खुश करने के लिए देवी प्रसाद ने एक ऐसे नाटक में नौकर की अदाकारी की जिसमें राजलक्ष्मी ने घर की मालकिन का पार्ट अदा किया था। लेकिन हाय री क़िस्मत की बेदर्दी कि वहाँ पर भी उसे डाँट ही खाना बदा था। देवी प्रसाद ने देखा कि उसके, यानी राजलक्ष्मी के, जो दोस्त अहबाब थे वह सब प्रोफ़ेसर थे और सबके नाम के आगे डाक्टर जुड़ा हुआ था।

इसने यह सोचा कि जब तक डाक्टरी का इम्तहान न पास किया जायगा तब तक वह लड़की इसकी तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखेगी। ए कबूतर! देवी प्रसाद की अक्ल अपनी तौर पर काम करती थी और वह इसे तरह तरह के नाच नचाती थी! डाक्टरी की सनद पाने के लिए उसने उस शहर के सबसे बड़े डाक्टर, जिसे सिविलसर्जन कहा जाता है, के पाँव जा पकड़े! उसने उनसे आँखों में आँसू भर कर, गले में हिचकियाँ बाँध कर, बाल उलझा कर, हाथ पैर नचाकर कहना शुरू किया—

'ए डाक्टरों के डाक्टर! तू सबसे बड़ा है क्योंकि तू मरते को जिला सकता है और जीतों को मार सकता है। तुझे न फाँसी का डर है और न दुआओं पर विश्वास! तू फ़ीस लेकर हर तरह का सार्टीफिकेट देने में समर्थ है। मैं भी तुझे हर तरह की फ़ीस देने के लिए तैयार हूँ लेकिन तू मुझे डाक्टरी की एक सनद दे दे ताकि मेरे नाम के आगे डाक्टर लिख उठे।

बड़े डाक्टर ने पहिले इसे दो बार बाहर जाने के लिए कहा लेकिन जब यह नहीं माना तो उसने इसे पागलखाने में भेजने के लिए कहा। देबी प्रसाद ने अपना ज्ञान गँठते न देखकर अपना बोरिया-बिस्तर बाँधा और लखनऊ के बड़े कालिज में जाकर वह डाक्टरी के सनद के चक्कर में पड़ा। लेकिन, वहाँ भी उसे इधर उधर पता करने से मालूम हुआ कि वह सनद सिर्फ नेताओं को वक्त जरूरत दी जाती है। वैसे सबको वह नहीं मिल सकती है !! उसको लोगों ने यह समझाया कि वह चाहे तो नेतागीरी करने का स्वाँग भरे और तब जब कि वक्त आएगा उसे भी वह सनद मिल जायगी !

देबी प्रसाद को यह सुनकर बड़ा गुस्सा आया और वह नेताओं को ही अपनी बदकिस्मती का ज़िम्मेदार समझ कर गाली देने लगा। इसकी जिंदगी में उम्मीद का जो एक चाँद भी निकला उस पर नेताओं का ग्रहण ऐसा लगा कि अब इसके सामने अँधेरा ही अँधेरा नज़र आने लगा।

इस तरह धक्का लगने से उसकी मुहब्बत का रंग और भी निखर आया। कहते हैं कि मुहब्बत की ठेस ही इंसान को इश्क का भवसागर पार कराती है !! सो वह अपने शहर वापस लौट कर दूनी लगन के साथ अपने काम में जुटा ! रूई व्यौपार मण्डल के पर्चे बराबर छापने के लिए वह राजलक्ष्मी को देता रहता ! एक दिन उसने बहुत सोच विचार कर ऐसा लेख उस पर्चे के लिए लिखा जिसमें यह साबित करने की कोशिश की गई थी कि जब तक बंगाल और उत्तरी भारत के लोग आपस में मिल जुल कर प्रेम मुहब्बत से नहीं रहेंगे तब तक हिन्दोस्तान की हालत सुधर नहीं सकती और जब तक हिन्दोस्तान की हालत नहीं सुधरेगी तब तक रुई का व्यौपार भी नहीं बढ़ सकता। आगे आपने उसके लिए यह सुझाव दिया था कि दक्खिनी पूरबी और उत्तरी हिन्दोस्तान के लोगों का पारिवारिक-संगम होना चाहिए और भारत में नई नस्ल आनी चाहिए !

लेख पूरा कर चुकने के बाद वह राजलक्ष्मी के पास पहुँच गया। टाइपिस्ट राजलक्ष्मी ने लेख ले लिया। दूसरे दिन जब देबी प्रसाद उस छपे हुए लेख को लेने के लिए पहुँचा तो राजलक्ष्मी ने मुस्कुरा कर वह टाइप किया हुआ लेख उसके हाथों में रक्खा। आज उसकी यह मुस्कुराती हुई सूरत देख कर देबी प्रसाद ने पूछ दिया—

'बहिन जी, आपको मेरा यह लेख कैसा लगा ?'

राजलक्ष्मी ने उत्तर दिया—

'मेरा काम सिर्फ़ चीज़ों को टाइप कर देना है उन पर राय देना नहीं। मैं राय दे भी नहीं सकती। आप रुई-व्यापार-मण्डल के सम्पादक हैं आप जो कुछ भी लिखेंगे ठीक ही होगा।'

देवी प्रसाद ने हीं-हीं करते हुए कहा—जी, नहीं, वह तो मैं आपकी राय जानना चाहता था। और अगर कभी बताने की कृपा कीजिएगा तो मैं अपने को धन्य समझूँगा !'

राजलक्ष्मी ने जवाब न देकर दोनों हाथ जोड़े, और घर के अंदर वाले दरवाजे की तरफ़ पाँव बढ़ाए और श्री देवी प्रसाद ने मजबूरन बाहर वाले दरवाजे की तरफ़।

देवी प्रसाद ने आज अपनी समझ से एक और मंज़िल पार कर ली थी क्योंकि उसने साफ़ साफ़ लफ्ज़ों में 'बहिन-जी' कहा था और उसने इस लफ्ज़ पर कोई भी एतराज़ नहीं किया था! ज़ाहिर है कि उसे उसके प्रेम में एतबार है !! देवी प्रसाद ने उस वक्त अपना मन अपने सारे काम काज से बटोर लिया था। क्योंकि कहा गया है कि अपना मन-चित्त एकदम पूरी तरह लगाने से ही मुहब्बत में सफलता मिलती है !

इस तरह अपनी गोटी बैठाकर इस आदमी ने शुभ दिन समझकर अपनी किसी गुमनाम माशूका के नाम एक ख़त लिखा !

कबूतर ने पूछा—'ऐ मेरे दोस्त ! उस ख़त में भला क्या था ?'

काठ के उल्लू ने कहा 'मुझे पूरा ख़त तो याद नहीं लेकिन फिर भी तेरी तबीयत रखने के लिए उसका कुछ हिस्सा ज़रूर सुनाऊँगा। उसका मज़मून कुछ इस तरह का था—

ओ मम हृदय वास में सुचारु ढङ्ग से
प्रतिष्ठापित होने वाली उलूक वाहिनी,

हम और तुम एक ही विराट ज्योति के दो टूटे हुए खंड हैं। हम और तुम एक ही आकाश के दो छोर हैं। हम और तुम एक ही नदी के दो किनारे हैं। हमारा तुम्हारा सम्बन्ध अमर है। यदि तुम तूल पुंज हो तो मैं उससे निकला हुआ पतला धागा हूँ। विधाता की निष्ठुरता के कारण तुम प्रांत के उस पार जनमीं और मैं इस पार। हमारी आत्मा भी एक है और परमात्मा भी एक ! तुम्हारे अधरों के सलिलामृत के बिना मेरा जीवन जल रहा है ! तुम्हारी भ्रमर अलकावली में कुसुम पुंज की रुई जैसी धवलता मानवता के अखंड विश्वास का

सूचक है। जैसे किसी बूढ़ी उर्वशी के बाल तुम्हारे केश पास में आ मिले हों! ओ दक्षिण पंथी, तू द्विचक्री पर चढ़ी साक्षात् कमला का अवतार लगती है! तू अपनी जिह्वा से कह दे कि मेरा तेरा स्नेह अचल है!

सनेहमय

(दस्तख़त की जगह खाली)

इस तरह से जब उसने यह ख़त पूरा कर लिया तो वह दौड़ा दौड़ा राजलक्ष्मी के घर पहुँचा। दरवाजा खटखटाया। 'बहिन जी' बाहर निकलीं। हीं हीं करते हुए हाथ का लिखा हुआ ख़त उसे पकड़ाया और यह कहते हुए कि 'मुझे जवाब न मिला तो मैं मर जाऊँगा' वह उसके घर से बाहर चला आया।

दूसरे दिन जब वह सुबह उठा तो उसने दरवाज़े पर खटखटाहट सुनी। लपक कर दरवाज़ा खोला तो सामने राजलक्ष्मी का भाई दिखाई पड़ा। चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। बोला—'कोई चिट्ठी लाए हो क्या?'

'क्या' पूरा होने के पहिले ही देबीप्रसाद ने देखा दो पुलिस के आदमी भी उस लड़के के साथ हैं!

अब यह एकदक घबरा उठा। उखड़ते हुए शब्दों में बोला—'क्या··· क्या बात है मिस्टर?···कोई मामला हो गया है क्या?'

जवाब देने के बजाय पुलिस के आदमियों ने राजलक्ष्मी के भाई का इशारा पाकर देबीप्रसाद को धर पकड़ा। एक पुलिस वाले ने डाँटते हुए कहा—

'बच्चू! भले घर की बहू बेटियों को ख़त भेजते हो और ऊल-जलूल बातें करते हो! चार छः साल की काटोगे तब तुम्हें अपनी मुहब्बत का रंग दिखाई पड़ेगा।

देबी ने घिघिया कर कहा—

'लेकिन सुन लीजिए सरकार, मैंने वह ख़त तो टाइप करने के लिए दिया था। वह ख़त मैंने किसी भले घर की लड़की को नहीं भेजा था!'

दूसरे पुलिस वाले ने कहा—

'लेकिन मिस राजलक्ष्मी ने खुद कोतवाल साहब से कहा है कि वह ख़त तुमने उसे दिया था और मर जाने की बात कही थी! जो भी हो अब कचहरी में फैसला होगा। थाने ले चलो इन्हें!

देबीप्रसाद ने राजलक्ष्मी के भाई की तरफ़ गिड़गिड़ाती हुई निगाहों से देखा लेकिन थाना जाने से वह उसे रोक नहीं सका!

दिन भर देबीप्रसाद का हवालात में कटा। सिनेमा में देखा था कि इस तरह की 'इश्टोरी' बीच में होती है और आखिर में हीरोइन आकर छुड़ाती है और ज़ोर ज़ोर रोती है! लेकिन वह इन्तज़ार ही करता रहा और कोई न आया!!

शाम को गुरदयाल आ पहुँचा और उसने कह सुन कर इसे हवालात से छुट्टी दिलाई। ए दोस्त, तुम्हें पहिले ही बता चुका हूँ कि गुरदयाल बड़ी पहुंच का आदमी था और वह सिफ़ारिश बड़ी जल्दी करा सकता था! देवी प्रसाद को गुरदयाल ने बताया कि राजलक्ष्मी बड़ी ही बेवफ़ा निकली। एक डाक्टर प्रोफ़ेसर से उसकी सिविल मैरिज आज ही हो गई है। तेरी गिरफ्तारी का हाल और अपनी शादी का समाचार वह एक साथ अख़बार में छपवा आई है।

देबी प्रसाद फूट-फूट कर रो पड़ा। उसने कहा—

ए मेरे प्यारे दोस्त! यह तो तू जानता ही है कि मैं उसके पीछे कितना लगा हुआ था लेकिन अब उसके दूल्हे की 'पुष्ट' (Post) पर कोई दूसरा बैठ जायगा!'

गुरदयाल ने समझाया कि उसे इस तरह हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और उसे अलग काम करना शुरू कर देना चाहिए ताकि आगे का रास्ता साफ़ हो जाय।

कबूतर ने पूछा 'ए मेरे बुजुर्ग! मेरा ख्याल है कि आगे वह सुन्दरता आंदोलन में चला गया होगा!

काठके उल्लू ने पूछा—यह क्या बला है।"

कबूतर ने हँसकर कहा—इसका किस्सा फिर कभी आगे सुनाऊँगा।

काठ के उल्लू ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि इस तरह इस आदमी देबी प्रसाद को इश्क के चक्कर में पड़ कर दर दर की खाक छाननी पड़ी और यह अन्त में इस दशा को पहुँचा। कहने का मतलब यह है मेरे दिलरुबा कबूतर! कि औरतों का चरित कोई भी नहीं जान पाता और उसके फन्दे में जो फँसा उसके गले जैसे फाँसी की रस्सी लग जाती है। इसलिए हर इन्सान को चाहे वह कसरती हो और डंड पेलता हो, और चाहे वह फूल की गन्ध से भी बेहोश हो जाता हो, औरतों से बराबर एक ही तरह का धोखा हुआ है।

काठ का उल्लू इतना कह कर मौन हो गया।

कहानी की बैठक

रात की कालिख और गहरी हो चुकी थी। सर्दी का भी तीखापन कुछ बढ़ गया था।

कबूतर को सर्दी तो लग ही रही थी, उसे यह डर भी बराबर लगा हुआ था कि मकान मालिक कहीं फिर न उसकी किसी हरकत से जाग उठे! वह घबराई हुई आँखों से बार बार भीतरी दरवाज़े की तरफ़ अपनी गर्दन घुमा-घुमा कर देख रहा था!

काठ का उल्लू उसके मन की बातें जैसे समझ रहा था! सांत्वना देते हुए उसने कहा—

'ए मेरे मेहमान, तू पूरे इत्मीनान के साथ बैठ। अब फ़िलहाल मेरे मालिक की नींद जल्दी नहीं खुल सकती! तेरी घबराहट देखकर मुझे ऐसा लग रहा है कि तूने मेरे किस्से को ध्यान के साथ नहीं सुना है!'

कबूतर ने जैसे एकाएक अपनी समझ बटोरते हुए जवाब दिया—

'नहीं मेरे भाई, तूने जो कहानी कही वह मैंने बड़े ध्यान के साथ सुनी है! और सच भी यह है कि तूने जो बात सुनाई है वह ग़ौर करने के काबिल है। लेकिन तूने जो यह बात कही कि त्रिया चरित्तर कोई नहीं समझ सकता और सब उसी के फेर में पड़कर धोखा खाते हैं सो ऐसी बात दरअसल है नहीं!' कबूतर ने आगे कहा—'चूँकि ऐसी सारी कहानियाँ मर्दों ने गढ़ी हैं इसलिए लामुहाला औरतों को हर जगह बदनाम किया गया है! इसके पीछे राज़ यह है कि मर्द दुनियाँ में ज्यादा हैं और अक़्ल के ज्यादा मजबूत हैं इसीलिए वह अपनी बात को सबसे मनवा लेते हैं! अगर उन्हीं की तरह औरतें भी काबिल होतीं तो वह यह साबित करने से न चूकतीं कि मर्द भी कम 'चरित्तर' वाले नहीं होते!'

काठ का उल्लू इस बार कबूतर की बात सुनकर खिलखिला पड़ा। उसने अपने मेहमान से कहा—

'नहीं मेरे भोले कबूतर! अभी तुझे दुनियाँ की ज्यादा जानकारी नहीं है और ना ही तुझे आदमी और औरत की अच्छी शिनाख्त है! अगर तुझे उनके बारे में कुछ भी ज्ञान होता तो तू औरतों की तरफ़ से ऐसी बातें हरगिज़ न करता!'

कबूतर का मुँह गंभीर हो उठा। जैसे काठ के उल्लू की हँसी उसे खल गई। उसकी बात पूरी होते न होते ही इसने कहा—

'बात कुछ ऐसी ही मैं भी समझता था। लेकिन ए बुज़ुर्ग उल्लू भाई, जब से मैंने मर्द के त्रिया चरित्तर की कहानी अपने कानों सुनी तब से मेरी आँखें खुल गईं और मैंने उसी दिन से अपनी ग़लती महसूस कर ली!

काठ के उल्लू ने यह सुनकर बड़ा अचरज किया और कहा—

'ए कबूतर! तूने ऐसी कौन सी कहानी कहाँ पर सुनी जिससे तेरा यह यक़ीन मिट गया? क्या तू उस कहानी को मुझे नहीं सुना सकता?

कबूतर ने कहा—

'सुन, रात का सहारा देने वाले मेरे काठ के उल्लू! एक बार जब मैं उड़ते उड़ते थक गया तो एक ऐसी नगरी में पहुँचा जहाँ दो नदियाँ दूर दूर से आकर एक जगह मिलती थीं। कहते हैं कि उस नगरी का नाम संगमराज था! संगम राज नगरी विलक्षण नगरी थी। वहाँ दूर दूर से आदमी धूल लेने के लिए आता था और आकर संतों के पाँव की मिट्टी अपने सिर पर चढ़ा कर चला जाता था! संगमराज नगरी में बहुत चीज़ें देखने वाली थीं। वहाँ पहुँच कर जब मैं सड़क के किनारे एक जामुन के पेड़ पर थकान मिटाने के लिए बैठा तो थोड़ी ही देर में दो साइकिल सवार नवजवान उसके नीचे आ रुके! दोनों की बातचीत के दरम्यान मुझे पता चला कि वे दोनों के दोनों एक किसी ख़ास बैठक की चर्चा कर रहे थे जहाँ पर संगमराज नगरी में आया हुआ हर आदमी एक बार ज़रूर चक्कर लगाता है!

'ए दोस्त! मेरे मन में भी इस बैठक को देखने की बड़ी लालसा उठी! पता करते करते मैं उस बैठक के पास पहुँच गया। बताते हैं वह बैठक बड़ी मशहूर बैठक थी! बैठक में देस के कोने कोने से लोग आया करते थे और अपनी आप बीती सुनाते थे! इस बैठक की सारे देस में चर्चा होती रहती थी और सुनते हैं कि बड़े-बड़े अहम मसले इसी बैठक में तै किए जाते थे! मैं वहाँ पहुँचकर क्या देखता हूँ कि तस्वीरों से सजा एक बैठका है, जिसमें एक तख्ता पड़ा हुआ है, जिस पर एक मोटा गद्दा पड़ा हुआ है और जिसे ढाँकने के लिए एक रंग बिरंगी चादर पड़ी हुई है। ए भाई, उस पर दो चार मोटी-मोटी गाव तकियाँ भी पड़ी रहती हैं जिनके सहारे लोग लुढ़के पड़े थे! कमरे में कई कुर्सियाँ भी थीं जिन पर कई लोग बैठे हुए थे। छोटी-छोटी तिपाइयों पर चाय के प्याले रक्खे हुए थे और पान से भरी तश्तरी भी रक्खी थी! महफ़िल पूरी तरह से चल रही थी!

एक साहब जो बंद गले का कोट और धोती पहिने हुए थे एकाएक उठ खड़े हुए और उन्होंने अपनी छतरी उठाते हुए जाने की तैयारी करनी शुरू की! जाते-जाते उन्होंने कहा—

अब आप कुछ भी कहें पंडित गोकरननाथ लेकिन हज़ार बात की एक ही बात है कि मेहरियों का मन आज तक विधिना भी समझ नहीं पाया! हम आप भला क्या समझेंगे?'

इस बात पर दूसरे महाशय, जो गोरे रंग और अपनी देह से मोटे ताज़े दिख रहे थे जिनका नाम पंडित गोकरननाथ हो सकता था, हाथ पकड़कर उठते हुए साहब को तख्त पर बैठाने के लिए खींचते हुए बोले—

'बैठिए बाबू शिवनारायन! मैं औरतों का पक्ष नहीं लेता लेकिन अब आज मर्दों की भी बात आपके सामने खोल कर रखने में मुझे कोई तकल्लुफ़ नहीं है।'

शिवनारायन जो उठकर जा ही रहे थे, कह उठे—

'अरे पंडित जी, आप क्या जवाब देंगे! इसका जवाब तो बड़े 'ऋषी मुनी' नहीं दे पाए! अब आप भाँग चढ़ा कर क्या जवाब दे पाएँगे?'

गोकरननाथ ने बाबू शिवनारायन को बैठाते हुए कहा—

'अब अगर आप मेरी बात सुनकर नहीं जाते तो मैं समझूँगा कि आपको मुझसे कोई मुहब्बत नहीं है और मेरी बदमज़गी कराने के लिए ही आपने यह त्रिया चरित्र की बात उठाई थी!'

गोकरननाथ की यह बात सुनकर महफ़िल में बैठे हुए सभी लोगों ने कहा कि अब तो बाबू शिवनारायन को ज़रूर ही कहानी सुनकर जाना चाहिए नहीं तो पंडित जी की किरकिरी हो जायगी! लिहाज़ा बाबू शिवनारायन अपनी छतरी एक कोने में खड़ी करके फिर तख्त पर आ बैठे!

मौसम को अपने अनुकूल देखकर पंडित गोकरननाथ ने मर्द के त्रिया चरित्तर की कहानी बयान करनी शुरू कर दी!

ए मेरे लकड़ी में जान फूँकने वाले काठ के उल्लू! वही कहानी मैं तेरे सामने आज बयान करता हूँ जो उस महफ़िल में पंडित गोकरननाथ ने बाबू शिवनारायन को अपनी बात मनवाने के लिए सुनाई थी!'

काठ के उल्लू ने अपनी झुकी हुई गर्दन को सीधा किया और कबूतर की बातें सुनने के लिए तैयार हो गया!

●

मर्द के त्रिया चरित्तर की कहानी
उर्फ़
कौड़ी-के-कुछनहीं की दास्तान

कबूतर ने कहानी की डोर उठाई—

'सुन, जाड़े की रात के मेरे अकेले दोस्त। पंडित गोकरननाथ ने बताया कि एक बार का जिक्र है कि हिन्दोस्तान जब तक कुल मिला जुला कर नक्शे के हिसाब से एक मुल्क था और आँगन में दीवार नहीं खिंची थी तब तक पंजाब करके एक देस हुआ करता था! कहते हैं कि वहाँ पाँच अमृत जैसी नदियाँ बहतीं थीं जिनके सहारे वह जगह पंजाब कहलाती थी! इन्हीं पाँचों नदियों में से एक के किनारे लाला तोतामल नाम से एक ईंटों के व्यापारी रहते थे। लाला तोतामल का भट्ठा बड़ा मशहूर भट्ठा था और उसमें से लाखों ईंटों रोज़ निकलती थीं। पंजाब की बड़ी मशहूर इमारतों में उनके ही भट्टे की बनी हुई ईंटें लगी थीं। लाला जी का अच्छा जान मान था। उनकी इज्जत थी। लेकिन सब कुछ होते हुए भी लाला जी बड़े उदास और दुखी रहते थे।

'ए मेरे दोस्त! यह तू जानता ही होगा कि सब कुछ होते हुए भी अगर आदमी उदास रहे तो उसकी एक ही वजह हो सकती है और उनके साथ भी वही वजह थी—यानी लाला तोतामल को कोई लड़का नहीं था। जब लाला जी एकदम निराश हो गए तो उन्होंने इस जंजाल से बैराग लेने की सोची! लाला तोतामल के एक गुरु थे जोगानंद! लाला जी ने जब बैराग लेने की सोची तो उन्होंने अपने मन की बात गुरु जोगानंद से कही! गुरु जोगानंद ने कोई ऐसा मंतर बताया जिसकी वजह से कुछ दिनों में लाला तोतामल के एक लड़का हुआ! जब यह लड़का पैदा हुआ तब इसका रंग कपूर की मानिंद गोरा था लेकिन धीरे धीरे इसका रंग साँवला पड़ने लगा। इतनी जल्दी इसे रंगत बदलने देखकर इसका नाम बदलू रख दिया।

बदलू कुछ अजीब किस्मत लेकर आया था! जनमते ही ऐसा तमाशा हुआ कि लाला तोतामल की बँधी हुई साख उठने लगी। उनकी हालतदिन व दिन गिरती हुई चली गई! लाला का ईंटों का भट्ठा बिक गया। मकान गिरवीं रख देना पड़ा। बीबी को भी तपेदिक हो गया और धीरे धीरे एक दिन उन्होंने साँस तोड़ कर झंझट खत्म किया! लाला अंत में दीवालिए हो गए और इसी ग़म में वह भी एक दिन चल बसे!

इस बीच बदलू चौदह-साल का हो चुका था। अपने भले बुरे का उसे

पता लगने लगा था। ए भाई, जिस आदमी की कहानी तू सुन रहा है उसे अपने बाप के मरने पर सिर्फ एक ही बात दिखाई पड़ रही थी कि उस बेचारे मरे हुए बाप ने इस सपूत के लिए कितनी रकम छोड़ रक्खी थी और उनके परलोक सिधारने के बाद वह अब क्या काम कर सकता है !

बाप के बक्सों की तलाशी लेकर इसने सारा मालमता गिना गूथा। सब तरह से अपनी औकात की आज़माइश कर लेने के बाद बदलू ने अपनी जिंदगी की किताब के पहिले पन्ने पर निशान लागना शुरू किया! बदलू अपने साथ पिछले जनम की अकल लेकर पैदा हुआ था। उसे यह ख्याल था कि दुनियाँ में जो कुछ भी हासिल किया जा सकता है वह तिकड़म के सहारे ही हासिल किया जा सकता है ! ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे इन्सान चाहे तो वह तिकड़म के बल पर उड़ा न ले जाय ! बदलू ने यह तय किया कि इसी तिकड़म के मन्तर को वह सिद्ध करेगा और दुनियाँ की हर कामयाबी इसी मंतर के बल पर हासिल करेगा ! बदलू के सामने टिप्पसी, चार-सौबीसी फितरतबाजी वगैरह तरह तरह की चीज़ें खुली रक्खी थीं लेकिन उसने अपने लिए तिकड़म ही चुनी। तिकड़म को वह सबसे अच्छी कला मानता था क्योंकि उससे बड़ी आसानी के साथ अपनी प्रतिभा का रोब आगे चलाया जा सकता था ! तिकड़म के सहारे अपनी गोट हमेशा ठीक वक्तपर ठीक खाने में बिठाई जा सकती थी। ए दोस्त ! गोट सिर्फ़ बिठाई ही नहीं जा सकती थी बदलू उसके सहारे दूसरी गोटों को धीरे से खिसका कर अपनी गोट उनकी जगह भी बिठा दी जा सकती थी ! इस तरह अब तू आगे आगे देख कि बदलू के तिकड़म ने कैसे कैसे गुल खिलाए और किस तरह किस्से को आगे बढ़ाया।

बदलू ज्यादा पढ़ लिख तो नहीं सका लेकिन उसने अपने तिकड़म के बल पर 'इक्वेशन इम्तहान' पास कर डाला।'

काठ के उल्लू ने बात काटते हुए कहा 'ए मेरे मेहमान मैंने बहुत तरह के इम्तहानों के नाम सुने लेकिन यह नाम मेरे लिए बिलकुल नया है और मुझे इसके बारे में कोई इल्म नहीं है। सो ए मेरे भाई ! यह कैसा इम्तहान होता है उसके बारे में भी मुझे कुछ बताता चल !'

कबूतर कुछ हँसा। उसके बाद उसने समझाते हुए कहा–

ए मेरे बुजुर्ग उल्लू ! यह ठीक है कि तूने इस तरह के इम्तहानों के नाम न सुने होंगे। यह आजकल के नए घासी लेटी या जापानी-किस्म के

इम्तहान होते हैं। इनका इस्तेमाल वही है जो घर के अंदर पिछवाड़े के दरवाज़ों का होता है। पीछे से धीरे धीरे घुसने के लिए यह बड़ी अच्छी और कामयाब चीज़ है! आधा इम्तहान एक जगह का बराबर है दूसरी जगह के चौथाई इम्तहान के और एक जगह का एक विषय बराबर है दूसरी जगह के ढाई विषय के। और कुल मिला जुलाकर तीन इम्तहान बराबर हैं एक चौथी जगह के सर्टिफिकेट के! इस तरह के जोड़गाँठी इम्तहान को 'इक्विवेशन-इम्तहान' कहते हैं! तो हमारे बदलू महाशय ने इन सब इम्तहानों को पलक मारते पास करने का तिकड़म भिड़ा लिया और वह एक दिन बी० ए० बी० यल० विशारद वगैरह होकर बैठ गए!

जैसा कि मैं तुझे पहिले ही बता चुका हूँ लाला तोतामल के खान्दानी गुरु थे जोगानन्द महराज! चूँकि बदलू का जनम उन्हीं की कृपा मानी जाती थी, इसलिए उनका मानदान इस परिवार में बहुत होता था। वह एक ऐसा खान्दानी मामला था कि बदलू को भी जोगानन्द महराज को अपना गुरु बनाना पड़ा।

लाला तोतामल जब मरे तो बदलू ने गुरु जोगानन्द से कहा कि—

'ए महराज। मुझे अब इस भवसागर से पार उतरने की कोई तरकीब बताओ।'

गुरु जोगानन्द ने बदलू को एक जगाई हुई कौड़ी दी और कहा कि—

'ए बेटा बदलू! इस कौड़ी को मैंने अब तक किसी को नहीं दिया था। लाला तोतामल मेरे परम भक्त थे। तू उनका बेटा है इसलिए तुझे वह कौड़ी मैं दे रहा हूँ जिसके सहारे अगर तू ठीक से चला तो तेरा नाम सारी दुनियाँ में फैल जायगा।'

बदलू ने कौड़ी ले ली।

गुरु ने आगे कहा कि—

'ए बेटे बदलू! अब आज से इस कौड़ी के हाथ में लेने से तू कौड़ी का एक आदमी बन गया। अब तू जा और जाकर तू व्यापार में लग जा।'

बदलू पर गुरु का बड़ा असर था। उनका बचन मानकर बदलू ने व्यौपार करने की सोची। ए भाई, चतुर व्यापारी वही होता है जो सौदा करने के पहले बज़ार की टोह ले लेता है! बदलू जो अब बढ़ते-बढ़ते लाला बदलूमल हो गए थे, बज़ार की टोह लेने के लिए निकले। लाला ने देखा कि आए दिन नौटंकी

का बड़ा ज़ोर और बोलबाला है! हर मुहल्ले में एक न एक बहाना खोज कर रोज़ नगाड़ा बजाने का कार्यक्रम चालू रहता था। लोग अपनी-अपनी सेज और नींद छोड़कर 'मस्ताना सुल्ताना डाकू' और 'दिलवर मासूक' देखने के लिए हाज़िर होते थे। लाला ने यह सोचा कि अब तक यह किसी ने नहीं सोचा होगा कि नौटंकी से भी व्यापार किया जा सकता है इसलिये क्यों न यही काम शुरू किया जाय। इधर लाला के मन में बात आई और उधर पट से नाटक मंडली खुल गई। मंडली के लिए एक दफ्तर खुला जिसमें नोटिस लगा दिया गया कि 'नौटंकी में जिसे काम करने का शौक हो वह मुनीजर से मिले। काम करने वालों को लियाकत के ही हिसाब से पैसे मिलेंगे।'

'ए मेरे बुज़ुर्ग काठ के उल्लू! यह तो तू जानता ही है कि ऐसे काम के लिए आदमियों की कभी कमी नहीं रहती। लाला ने 'शमशीर कम्पनी' खोल दी।

अब दूसरा दौर शुरू हुआ। लाला ने खुद नौटंकी लिखना शुरू कर दिया और लड़कों को नौटंकी रटवाने लगे! धीरे धीरे लाला ने अपनी रची हुई नौटंकी के सम्वाद मुहल्ले के कितने ही लड़कों को रटा दिए। इधर-उधर से जोड़ गाँठ कर नौटंकी के तख्ते, साड़ियाँ, तमंचे, और नगाड़े भी लाला ने जुटा लिए।

सब कुछ पूरा हो जाने के बाद लाला ने अपना तिकड़म का मन्तर फिर जगाया। म्युनिस्पिलटी में अपना कुछ ज़रिया लगा कर यह तै किया कि म्यूनि-स्पिलटी की तरफ़ से लाला महीने में एक बार शहर के दिल बहलाव और तफ़-रीह के लिए नौटंकी कराया करेंगे। कहा गया कि हिन्दोस्तान ऐसा देश है जहाँ मुफ्त तमाशा देखने वालों की कभी कमी नही पाई जाती। म्यूनिस्पिलटी इसके लिये लाला को पन्द्रह रुपये महीना दिया करती थी और लाला शहर में नौटंकी करवाया करते थे। धीरे धीरे लाला की नौटंकी की धाक जमने लगी। गुरू की कौड़ी ने अपना रंग दिखाया। पास पड़ोस के गाँव वाले भी लाला की खुशामद करने के लिये आने लगे कि लाला उनके गाँव जाकर नौटंकी दिखा दें। लाला तो यही मुराद लेकर खड़े ही हुये थे। बज़ार चढ़ते देखा तो फौरन भाव बढ़ा दिया। पन्द्रह की ज़गह तीस माँगने लगे। यह तुझे बताना न होगा कि कई जगहों पर तीस तीस रुपये मिलने भी लगे। लाला के लिये तमाशा पक्का उतरने लगा।

'ए मेरे मेहमान! गोकरन नाथ नामी आदमी ने आगे बाबू शिवनारायन

को बताया कि जब कमबख्ती की मार आती है तो ऐसे आती है कि पता भी नहीं चल पाता कि कब और कैसे आ गई ! आदमी यह भी नहीं जान पाता कि हमारे किस काम के बदौलत यह कमबख्ती हमारे सिर आ गई है ! हुआ यह कि जब लाला बदलूमल को यकीन हो गया कि उनकी नौटंकी की शोहरत बहुत बढ़ गई है तो उन्हें एक दिन यह सूझा कि क्यों न नौटंकी के साथ साथ दाढ़ी-मोछ जटा, और नौटंकी के ही सामानों की एक छोटी मोटी चलती फिरती दूकान भी खोल ली जाये। साथ साथ पैसा कमाने का एक और तिकड़म लाला बदलू मल ने इस तरह भिड़ाया। लाला ने इसकी दूकान खोल ली और जटा-मूछें दूकान पर लटका दीं। लाला चेहरा बनाने में भी कमाल करते थे सो इन्होंने बने बनाए चेहरे भी बेचने शुरू किये। हुआ यह कि अब जो भी नौटंकी देखने आते वह जाते-जाते दो-चार दाढ़ी-मूछें, कुछ अपने लिए और कुछ बच्चों के लिये खरीद ही ले जाते ! ए भाई, एक काम कहाँ कहाँ अपना पैसारा फैलाता है सो देख। जटा और मूँछ दाढ़ी बनाने के लिए लाला को बालों की ज़रूरत पड़ती थी, उसके लिये लाला को गाँव गाँव घूमना पड़ता था, जहाँ ऐसी घोड़ी या घोड़ा मिले जिसके बाल तराशे जा सकते हों और कम से कम पैसों में वह आदमी इन्हें उन बालों को दे सकता हो।

अब तू इस किस्से का हवाल सुन कि आगे क्या हाल हुआ। लाला की नौटङ्की की शोहरत जो बढ़ी तो एक दिन उनके खान्दानी गुरू जोगानन्द के कानों में भी यह खबर पड़ी और उन्होंने लाला बदलूमल को अपने अखाड़े में 'भगत पूरनमल' की नौटङ्की करने के लिये बुलवाया। लाला बदलूमल सब मामले में सब के थे लेकिन पैसे के मामले में वह किसी के नहीं थे ! सो उन्होंने गुरू जोगानन्द से भी कहलवा दिया कि अगर तीस रुपया देना मन्जूर हो तो शमशीर-कम्पनी की नौटङ्की हो सकती है। साथ में बदलूमल ने चिट्ठी भी लिखी कि कुम्भ के मेले में बड़ा चढ़ावा आया है, उसमें से तीस रुपये हमारे लिये भी निकाल दीजिये !

सो ए काठ के उल्लू ! तू समझ सकता है कि इसकाअन्जाम क्या हुआ। गुरू को बदलूमल की इस बदतमीज़ी पर बेहद गुस्सा आया। उन्होंने बदलू को अपने पास बुलवाया और कहा कि—

'ए बदलूमल ! तू यह नहीं जानता कि तेरे जन्म में मेरा कितना हाथ रहा है ! मैं तेरे बाप का भी गुरू हूँ। लेकिन तूने आज नौटङ्की करने के लिये

मुझसे पैसा माँगा हैं । तू शायद यह भूल गया कि यह सब मेरी दी हुई कौड़ी की करामात है । सो आज से मैं वह कौड़ी एक दूसरे आदमी को भी दिये देता हूँ । जा चला जा । अब आज से तू कौड़ी का दो हो गया । अब तू इस काम को छोड़ दे तभी तेरा कल्याण होगा नहीं तो तू बिलट जायगा !'

लाला गुरु की बातों का कुछ भी ध्यान न करके लौट आए । लेकिन कहा गया है कि अपने मन कुछ और है विधिना के मन और ! सो ऐसा हुआ कि जिन जिन के हाथ बदलू ने दाढ़ी मोछ और जटा बेची थी उन सब ने धीरे-धीरे करके अपनी अपनी नौटङ्की मण्डली बना ली और वे अपने-अपने गाँव में नौटङ्की करने लगे और इस तरह शमशीर-कम्पनी को खर्चा देकर बुलवाने का दौर खत्म हो गया । लाला बदलूमल का तिकड़म सिमटने लगा । लाला ने अपनी कम्पनी की आमदनी इस तरह से घटती देख कर एक दिन अपनी छाती पीट ली । साल भर के भीतर लाला के जी के साथ उनकी कम्पनी भी बैठने लगी और काम करने वाले दामन झाड़-झाड़ खड़े होने लगे ।

लाला की हिम्मत जब टूटने लगी तो शमशीर कंपनी टूटचली । लेकिन इस सब के बाद भी लाला के तिकड़म ने हार नहीं मानी । लाला ने सोचा कि दुनियाँ में हज़ार ऐसी चीज़े हैं जिनके सहारे जिंदगी चल सकती है, एक न सही नौटंकी की कंपनी, तो भला क्या हुआ ! लाला के पास दो तीन हज़ार रुपए थे । छोटा मोटा काम करने की ख़ासी ताक़त और जोश उनके अंदर बाक़ी था । सोचा क्यों न एक छोटी सी परचून की दूकान खोल लें जिसके सहारे उनके बाप हज़ारों के मालिक बैठे थे ।

इसी तरह भरमाता हुआ मन लेकर एक दिन लाला बदलू मल एक मेले में जा पहुँचे । मेला बड़ा मशहूर मेला था । दुनियाँ की हर चीज़ें उस मेले में बिकने के लिए आतीं थी । सिंदूर, टिकुली, काग़ज़ के खिलौने और जाने किन किन सामानों के बीच उन्होंने देखा कि बक्स के बक्स किताबों से भरे हुए सौदागर लोग बैठे हैं और सुबह के भरे बक्से शाम को खाली करके चले जा रहे हैं । एक एक दिन में दस-दस, बारह-बारह रुपए की बिक्री करते हैं । इस एक सौदागर को देखते ही लाला बदलूमल को जैसे खोई हुई कौड़ी वापस मिल गई । उनकी समझ में आ गया कि उनकी कही हुई जितनी नौटंकियाँ हैं अगर वह छाप दी जायँ और इस तरह इन फेरी वाले सौदागरों के सिर डाल दी जायँ तो

अट्ठासी

एक ही मेले में उनकी सब नौटंकी बिक सकती हैं ? उनकी खोई हुई किस्मत फिर वापस आ जायगी।

जैसे कि तुम्हें पता चल ही गया होगा लाला जैसे ही सोचते थे वैसे ही उसको कर गुज़रते थे। यही लाला की अच्छाई थी और बुराई भी थी। जब वे लौटे तो मन ही मन एक किताब छापने वाले सौदागर होकर लौटे। आने के साथ साथ गली के एक छापेख़ाने वाले से भाव ताव तै किया और अपनी एक नौटंकी लिख कर छापने को दे दी।

'भगत पूरनमल लाला बदलूमल कृत और श्री लाला बदलूमल द्वारा छापित' जब छपी तो भगवान की मरज़ी कि सचमुच कुछ ऐसी बिक्री हुई कि लाला की बाछें खिल गईं। लाला के मन में धारणा बैठ गई कि उनका कार्यक्रम ठीक है और अब आगे का रास्ता खुल गया है। लाला को जो पैसा मिला तो लाला ने अपनी दूसरी नौटंकी 'डाकू मंसूर' भी छपवा डाली। नौटंकी जब छप कर तैयार हो गई तो उसकी जिल्द पर छपने के लिए एक तस्वीर की ज़रूरत पड़ी। असली डाकू की तस्वीर मिलना बड़ा मुश्किल था। क्या किया जाता। लाला की तिकड़म ने लाला का साथ दिया। लाला ने एक दाढ़ी लगाकर, आँखों पर कला चश्मा लगा कर, काली लुंगी पहन कर, काला साफ़ा बाँध कर अपनी एक तस्वीर खिंचवाई और ज़िल्द पर छापने के लिए भेज दी। ए मेरे भाई, वह फ़ोटू इतनी जल्लाद के शक्ल की थी कि उससे छापेखाने के मशीन चलाने वाले की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। लाला की इस तरह की तस्वीर छपने पर उनके दोस्तों ने उनको बहुत सख्त सुस्त कहा लेकिन लाला ने सब को सिर्फ़ एक ही बात कहा कि 'प्यारे ! बिज़नेस यानी व्यापार में यह सब चलता है !' इस तरह डाकू मंसूर भी हाथो हाथ छप गई। छपने को तो वह हाथो हाथ छप गई लेकिन वह पैरों पैर चल नहीं पाई और दो महीने तक लाला की इल्मारी की कुल जगह घेरे रही रही। एक भी आसामी नहीं जो एक भी प्रति ले जाय। लाला बहुत परेशान हुए। चुपचाप उठे। कमरे में गए। नहा धोकर मौका लगा कर प्रेस से तिकड़म देव का ध्यान किया। उसके बाद जब लाला कमरे से बाहर निकले तो लाला के चेहरे पर एक दैवी मुस्कान थी।

शहर में दूसरे दिन एक बड़ी अजीब घटना घटी। सारे शहर में एक नोटिस बँटी। हर बच्चे बूढ़े जवान सब के हाथ में वही लाल पीले कागज़। सुन मेरे सागौनी उल्लू ! तू भी जानना चाहता होगा कि भला उस पर्चे में क्या

छपा हुआ था ! तो सुन मैं तुझे बताता हूँ । उस पर्चे पर यह लिखा हुआ था—
पकड़ गया ! पकड़ गया !

लाला बदलूमल चोर !!

लाला बदलूमल नाम का इस शहर में रहने वाला नौटंकी वाला आदमी, पहले सिरे का चोर है । उसकी किताब 'डाकू मंसूर' में जो कुछ भी छपा है वह सब चोरी का माल है । एक भी लाइन पर उसका असली मार्का नहीं है । हमारा कौल झूठा साबित करने वाले को एक हजार रुपिया नकद दिया जायगा ।

(नीचे उन सब नौटंकी कम्पनियों के नाम जिन्होंने लाला के खिलाफ़ नौटंकी खोली थी !)

पर्चा क्या निकला कि सारे शहर में एक बिजली की लहर दौर गई । पहिला काम तो यह हुआ कि जिन नौटंकी-कम्पनियों के मालिकों का नाम छपा हुआ था था, वह सब दौड़ दौड़ कर लाला के पास आए और लाला के कदमों में उन्होंने अपनी टोपी रक्खी और कहा कि उनका इस साज़िश में कोई हाथ नहीं है । लाला ने सब को हँस कर जवाब दिया कि—

'भई, मुझे किसी से क्या लेना-देना है । सब ठीक है । मैं तो किसी की बुराई नहीं चाहता ! आप लोग झगड़ने पर आमादा हैं तो भी मैं चुप बैठा हूँ । भगवान आपका भला करे । हमारे कुछ दोस्त वकीलों के पास गए हैं । उनसे आप मिल कर उन्हें समझा दीजिएगा क़िस्सा ख़त्म हो जाएगा !!

उधर डाकू मंसूर की जो चर्चा चली तो उस किताब को इल्मारी से बाहर निकलकर सूरज की रोशनी देखने का मौक़ा मिला । दनादन दो दिन में सब माल बज़ार में खप गया ! बहुत से आदमी इस चक्कर में पड़ कर पढ़ने के लिये नौटंकी ले गए कि कौन जाने वे ही क़ौल झूठा साबित करके एक हज़ार वसूल लें ! कुछ ने इस झगड़े का पूरा लुत्फ़ उठाने के लिए किताब पढ़नी शुरू की । बहर हाल एक हफ्ते के अंदर उस किताब का जो भी होना था वह होकर रहा । उधर लाला ने दूसरी नौटंकी-कम्पनी के मालिकों को ऐसा फँसाया और ऐसा पटाया कि, ए मेरे बुर्जुग दोस्त, किसी को कानो कान ख़बर भी न हुई । लाला ने अपनी हतक इज्जती का मुक़दमा चलाने की धमकी दे-देकर दो-सौ, तीन सौ, जो जैसा पटा, उससे उतना ही वसूल कर लिया । सुन कि मेरे समझदार उल्लू ! लाला को न सिर्फ़ अपनी नौटंकी की किताब बिकवाने का हल मिल गया बल्कि

उन्होंने ऊपर से चार पाँच सौ बना लिए। इस तरह लाला का तिकड़म सिद्ध होता चला जा रहा था।

लाला बदलूमल की नौटंकी से अब बाज़ार पटा हुआ था इसलिए लाला ने 'बीर-बभ्रुबाहन' उर्फ़ रानी उलूपी काइश्क नाम से एक नई नौटंकी लिखी। बहुत सी नौटंकी-कम्पनियों ने लाला से राय बात की और छपते-छपते तक उसके खेलने का ठेका दूसरों ने ले लिया।

एक दिन सुबह की मीठी-मीठी धूप में लाला अपने घर से निकल कर चौराहे पर आए और खड़े होकर चुन्नन हलवाई की दूकान पर, लस्सी का एक गिलास चढ़ाने लगे। इतने में क्या देखते हैं कि सामने से उनके खान्दनी गुरु जोगानंद चले आ रहे हैं! लाला ने लपक कर पाँव छुए और गुरु ने अपनी आदत के मुताबिक इनको आशीर्वाद दिया।

गुरु ने पूछा—

'क्यों बदलू! आजकल तेरा कारबार कैसा चल रहा है?'

बदलू ने जवाब दिया—

'आपकी कृपा है गुरु। कुछ दिन तो बाज़ार मंदा हो गया था लेकिन अब फिर ठीक चल रहा है। आजकल नौटंकियाँ लिख रहा हूँ।'

गुरु ने कहा—

'क्यों बदलू! तू धर्म के प्रचार के लिए नौटंकी नहीं लिखता? तुझे वह भी काम तो करना चाहिए!'

बदलू तो हर बात के जवाब के लिए तैयार रहता था। लाला ने तुरन्त जवाब दिया—

'हाँ गुरु जी! मैंने दो धार्मिक नौटंकियाँ 'भगत पूरनमल' और 'बीर बभ्रुवाहन' लिखीं हैं। आप उनको अवलोकना चाहें तो आपकी सेवा में भेज दूं?'

गुरु ने बड़ी खुशी के साथ कहा—

'बेटे, तेरी इस कामयाबी पर मैं बड़ा प्रसन्न हूँ। तू अगर अपनी नौटंकी भेजेगा तो मैं ज़रूर पढ़ूँगा?'

लाला ने उसी दिन शाम को गुरु जोगानंद के पास दोनों धार्मिक नौटंकियाँ भिजवा दीं। गुरु जी ने हाथ में किताबें लीं तो बड़े मुदित हुए और मन ही मन कहा कि अब बदलू सुधर गया है और जल्द ही बड़ा आदमी और नाम

वाला आदमी बन जायगा ! गुरु जी ने किताब जो खोली तो उसके अंदर दोनों किताबों के दाम का 'बिल' यानी कीमत माँगने वाला कागज़ धरा हुआ था। गुरु जी कुछ चक्कर में पड़े हुए थे कि तब तक किताब लाने वाले नौकर ने मामला साफ़ किया—

'गुरु जी आप यहि कै दाम हमका दै देव तौ हम चली आपन रस्ता लेई। बाबू जी कहिन हैं कि बिना दाम लिहे किताब न दिह्यौ !

गुरु जी के क्रोध का वारपार न था। बोले—'तुम जाओ। हम भिजवा देंगे।

नौकर के चले जाने के बाद गुरुजी ने एक चिट्ठी लाला के नाम लिखी और दो रुपए ढाई आने लाला के पास उस चिट्ठी के साथ अपने एक चेले से भिजवा दिये। चिट्ठी में लिखा था—

'ए बदलू ! तू अब चूँकि बदलू से लाला बदल राम बन गया है इस-लिए तेरे पास मैं तेरी किताबों का मूल्य भिजवा रहा हूँ। यह ले ! मगर यह तुझे फिर याद दिलाता हूँ कि यह सब उसी कौड़ी की बदौलत है ! तूने आज अपने नौकर के ज़रिये अपने गुरु का अपमान करवाया है सो इसलिए मैं वही जगाई हुई कौड़ी एक तीसरे शिष्य को भी दे रहा हूँ ताकि वह मेरे सच्चे भक्त और सेवक हो सकें ! आज से तू बदलू ! कौड़ी का तीन कहलाएगा !'

अब तू इस कौड़ी की करामात देख कि जिस वक्त यह चिट्ठी लाला के पास पहुँचती है उसी वक्त लाला के पास एक व्यौपारी की चिट्ठी आती है कि उसने जो चार सौ किताबें लाला से उनकी नौटंकी की मँगवाई थीं, वह अब नहीं लेगा और लाला उसके पास न भेजें। दोनों खत करीब करीब एक साथ ही लाला के हाथ में पहुँचे।

ए भाई, लाला जब कौड़ी के दो हुए थे तभी से लाला के कान खड़े हुए थे। लाला बदलूमल के मन में संस्कारों से यह यकीन था कि बिना गुरू की कौड़ी के वह एक कदम भी आगे नहीं चल पाएँगे। इसी लिए लाला अपनी नौटंकियाँ अपने गुरू को देकर यह सारी झन्झट साफ़ कर देना चाहते थे ! लेकिन अक्ल की मार को कोई क्या करे ! उनकी आर्थिक बुद्धि ने उनके संसारी व्यौहार पर पर्दा डाल दिया और वह फिर उसकी लपेट में आ गए ! गुरु के पास अपनी किताबों का 'बिल' क्या भेजा, कि एक ज़हमत अपने सिर मोल ले ली। गुरु का

यह आशीर्वाद देख कर कि वह अब इतनी आसानी से कौड़ी के तीन हो गए उन्हें अपना माथा टन टन बजता हुआ सुनाई पड़ने लगा !

लाला बदलूमल बेवकूफ़ आदमी नहीं थे। जैसा कि तुझे बता ही चुका हूँ, वह सदा से तिकड़म को खुदा समझते थे। लाला बदलूमल ने ठीक ही सोचा कि गुरु की हाय लग गई है इसलिए अब उनको इस व्यौपार में घाटा ही घाटा होगा। यही सोच कर बस लाला ने एक दिन अपनी गद्दी लपेट ली। अपनी दूकान का साइन बोर्ड उतार लिया और ए मेरे जागने वाले काठ के उल्लू ! इस के बाद कुछ दिनों तक किसी को यह पता ही नहीं चला कि लाला बदलूमल अपना टाट पलट कर कहाँ किस गुफ़ा में चले गए !

और ए मेरे बुजुर्ग उल्लू। कोई तीन चार महीने बाद पास के शहर भवानीपूर में लाला बदलूमल एक दिन एक मकान के छज्जे से एक चमकीला भड़कीला साइन बोर्ड लटकाते हुए पाए गए। देखने वालों ने देखा कि उस पर लाला बदलूमल नाम नहीं था बल्कि उस पर किन्हीं 'परिवर्तन राय, बीए बी० यल० वकील और सलाहकार, का नाम दर्ज था।

दूसरे दिन सुबह लोगों ने फिर देखा कि जो आदमी साइनबोर्ड टाँग रहा था, वही दूसरे दिन दफ्तर में टाँग फैलाकर कोटबूट पहिन कर बैठा था।

ए अक्ल के तेज उल्लू। अब तो तू यह समझ ही गया होगा कि किस तरह से लाला बदलू मल नाम के आदमी ने अपना नाम परिवर्तन राय कर लिया था और भवानीपूर में आकर वकील हो गया था !

काठ के उल्लू ने कमर सीधी करते हुए पूछ दिया—

यह तो तू ने बड़ी अजनबी और अनहोंनी सुनाई। लेकिन, तू यह बता कि किताबों के व्यौपारी लाला बदलू मल किस तरह कैसे और क्यूँ वकील हो गए ? वह कौन सी विपत पड़ी जिसने उन्हें यह दिन दिखाया ?

कबूतर ने ज़रा गर्व के साथ इधर-उधर गर्दन घुमाई। कमरे में इस वक्त बिल्कुल सन्नाटा था। दीवार पर लगी घड़ी की टक टक आवाज़ बहुत तेज़ होकर सारे सन्नाटे पर हावी हो रही थी। घर भर में अंधेरा धुन्ध था। बाहर की एक बत्ती जल रही थी जिसकी एक क्षीण किरन भीतर आ रही थी। कबूतर ने कहा—

ए मेरे भाई, तू ने जो यह सवाल पूछा, सो इसी तरह का सवाल बाबू शिव नारायन ने पंडित गोकरन नाथ से भी किया था। इस जगह पर आकर

सब की तबीयत यही चाहती है कि कोई ऐसा ही सवाल करे ! तो अब सुन, कि लाला बदलूमल परिवर्तन राय कैसे बने !

कबूतर ने किस्सा आगे उठाया—

'जब लाला बदलूमल ने अपना पिछला व्यौपार गड़बड़ाते देखा तो वह बहुत बेचैन हुए और उन्होंने कुछ और करने की ठानी। आसन लगा कर फिर तिकड़मदेव का ध्यान किया। अबकी उन्हें यहीं सूझी कि वकालत करना चाहिए क्योंकि वकालत के ही सहारे हिन्दोस्तान का हर नेता इतना बढ़ा कि आज वह मंत्री तक हो गया है। वकालती पेशे के अन्दर यह राज़ ज़रूर है कि वह आदमी को बड़ा बना देती है !

लाला ने फिर सोचा कि वकील को बोलना आना चाहिए नहीं तो उसकी वकालत ठप हो जाती है ! लाला बोलने में पीछे नहीं थे। लाला को डाकू मंसूर का 'ड्रामा' (डॉयलाग) ज़ुबानी याद था ! लाला जब उस नौटंकी में बोलते थे तो बीच-बीच अशआर यानी शेर लगा कर बोलते थे। लाला को यह यकीन था कि जब वह कचहरी में इस तरह बोलने लगेंगे तो फैसला चाहे कुछ हो लेकिन लाला के असामी को पूरा यकीन हो जायगा कि वकील साहब ने अपनी प्राण उसमें लगा दिए !

बीच के ये तीन महीने जो लाला जी गायब रहे, इस बीच वह बैठकर सिर्फ डायलाग या ड्रामा रटते रहे ताकि कचहरी में अच्छी तरह खुल कर बोल सकें। लाला ने चोरों और अवारागर्दों की वकालत करने के लिए जो डायलाग रटा था उसका कुछ हिस्सा मैं तेरे रुबरू बयान करता हूँ—

(भरी अदालत में लाला जी का हाथ चमकाते हुए और काली अचकन का पल्ला सँभालते हुए आना और इजलास के सामने हाथ उठाकर कहना शुरू कर देना)

' ए मेरे हुज़ूर, इतना तो आप जानते हैं ज़रूर। दुनियाँ है फानी। सब चीज़ है आनी जानी ! क्या यहाँ, क्या लंका। सब तरफ आपके ही इकबाल का बजता है डंका। ए मेरे सरकार। आपके नाम पर मचती है तकरार। ऐसा है अंधेर। शरीफ़ को पकड़ कर करते हैं जेर ! कहते हैं उसको चोर। जिसकी शराफत का मचा हुआ है शोर !

ए हुज़ूर ! सरकार को बदनाम करने के लिए पुलिस ने यह कार्रवाई कराई है। इसमें कुछ छिपी भीतरी कार्रवाई है।

सचाई छिप नहीं सकती किसी के बरगलाने से। नहीं झुकता है ईमाँ बेकसों को यूँ जलाने से!

(इसके बाद खुद तालियाँ बजाना)

'हुजूर! जहाँ आप जैसे हाकिम हों वहाँ सचाई कभी नहीं छिप सकती। यह आदमी कभी मुलज़िम नहीं हो सकता। यह तो सरकारी मुलाज़िम होने के लायक है! मैं अपने मुअक्किल की तरफ़ से, खुदा के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, मसीहा के नाम पर, आपके इजलास से इंसाफ माँगता हूँ।

(यहाँ पर वकील का अपनी अचकन के दामन को उठाकर जज के सामने चला जाना और फिर एक शेर पढ़ना और हाल आ जाने पर जज साहब के सामने बेहोश होकर गिर पड़ना।

ए काठ के उल्लू! लाला ने यह भी सोचा कि अगर मान लो उन्हें चोरों आवारागर्दों को सजा दिलाने के लिए बोलना पड़ा तो वह क्या करेंगे! इसके लिए उन्होंने दूसारा ड्रामा रटा। उसका अन्दाज़ तुझे अब बताता हूँ।

'ए हुजूरआली कहा गया है कि

अंधेर नगरी चौपट्ट राजा
टके सेर भाजी टके सेर खाजा!

जी हाँ, जैसा कि हमारे बुजुर्ग कह गए हैं कि जिस देस में टके सेर भाजी नहीं मिलती और लोगों को खाने के लिए टके सेर खाजा नहीं मिलता, वही अंधेर-नगरी हो जाती है और राजा को चौपट कर देती है। हुजूर आली, अंधेर नगरी वही है जहाँ दिन दहाड़े चलने में भी डर समाता हो। जानमाल की हिफाजत होना भी जहाँ मुश्किल हो। जिस जगह चोर-डाकू और जाबिर खूनी बसते हों तो भला वहाँ कैसे किसी शरीफ आदमी की गुंजाइश हो सकती है! ए हुजूरआली मैं सेरआम डंके के चोट पर कहता हूँ, सारे जहान को ललकार के कहता हूँ, किसीसे छिपाकर नहीं कहता हूँ, कि ऐसी हालत में कोई शरीफ आदमी नहीं रह सकता। तो सरकार मैं आपसे इन्साफ के नाम पर इन आवारागर्दों के लिए जेल माँगता हूँ ताकि हम और आप चैन से अपनी बंसी बजा सकें! मेरे दामन में आप इनके लिए सजा की भीख दें।

(इतना कह कर फिर वकील का जज के सामने दामन फैला कर खड़े हो जाना और तब तक शेर पढ़ते रहना जब तक फैसला न सुना दिया जाय। इसके लिए शेर की किताब अदालत में ले जाई जा सकती है।)

कहने का मतलब यह है कि जब लाला जी को इतनी बड़े-बड़े जुमले जुबानी रटे पड़े थे तो उनके लिए बोलना तो बायँ हाथ का खेल था। जब चाहते वह बोलते ही चले जाते। लाला बदलूमल ने अपना दफ्तर सजाने के लिए अपनी बेहतरीन नौटंकियाँ इल्मारियों में धरवा दीं थीं।

गरजे कि परिवर्तन राय पूरी तरह से वकीली करने लगे।

यह तो तू जानता ही होगा कि वकील के लिए मुकदमें जीतना उतना जरूरी नहीं है जितना अपने मुअक्किल के दिमाग में यह बिठा देना कि वकील साहब ने उसके लिए अपनी जान लड़ा दी। इसके लिए बेचारे परिवर्तन राय को कई बार इजलास पर जोश में आकर गिरना पड़ता था। आगे के दो एक दाँत इसी नाटक में बलि चढ़ गए। लेकिन इस तिकड़म का नतीजा यह हुआ कि वह अपनी मुअक्किल से अपने इलाज की फीस और टानिक वगैरह दवाइयों की कीमत वसूल कर लिया करते थे। दूसरे इस नाटक का हाल वही हुआ कि उनकी इस तरह की वकालत का बयान सुनकर लोग उसी तरह खिंच-खिंचकर आने लगे जिस तरह पहिले लाला बदलूमल की नौटकी के नगाड़े की आवाज़ सुनकर लोग सिमटते चले आते थे।

होते करते भवानीपूर के अच्छे वकीलों में मिस्टर परिवर्तनराय गिने जाने लगे। अपने नाटक के बल पर कितनों को उन्होंने वकालती पेशा छोड़ने को मजबूर कर दिया। जब चल निकली तो उन्होंने एक खचड़ा मोटर भी खरीद ली। इस खचड़ा मोटर पर जब यह चढ़कर चलते थे तो उनकी धजा देखने लायक रहती थी। जैसा कि तू जानता होगा, हर सवारी में भोंपू या घंटी रहती है क्योंकि उसके बिना बड़े हादसे हो जाते हैं और आदमी कुचल कर मर जाते हैं। लेकिन उस मोटर में एक भी भोंपू नहीं था फिर भी उस मोटर से कोई कुचल कर नहीं मरा। ताज्जुब न करना मेरे भाई, बात यह थी कि उस मोटर के चलने से ही इस कदर वाहियात आवाज़ें पैदा होती थी कि लोग डर-डर कर भागते थे। जब वह सड़क पर निकलती थी तो आगे पीछे सौ डेढ़ सौ गज तक आदमी की आने की हिम्मत नहीं पड़ती थी।

मिस्टर परिवर्तनराय ने सोचा कि चलो कौड़ी के तीन होकर भी बुरे नहीं रहे। उनकी कुछ तो साख बन ही गई थी। इस बीच उन्होंने एक साहित्यिक संस्था बनाकर उसका खुद ही ताला खोला। उसकी अक्सर मीटिंग होती रहती थी और वहाँ लालाजी अपनी नौटंकियाँ सुनाते रहते थे। लाला

परिवर्तनराय ने साहित्यिक भाषण भी ड्रामे की तरह रट लिए थे और वक्त ज़रूरत उनका इस्तेमाल करने से हिचकते नहीं थे। अक्सर वह बताते थे कि ग्रीस में जैसे नाटक चले थे उसी तरह के नाटक वह अपनी नौटंकी में लाएँगे। ए मेरे दाना दोस्त इस तरह उनकी जिंदगी एक तरफ चलने लगी।

काठ के उल्लू ने घुर्र घुर्र करके पूछा—लेकिन ए मेरे देस परदेस घूमने वाले कबूतर! तूने यह तो बताया ही नहीं कि परिवर्तनराय के गुरू का क्या हाल हुआ और कैसा अंजाम उनका हुआ?

कबूतर ने उड़कर कमरे का चक्कर लगाया। कार्निस पर चढ़ कर फिर आतशदान पर आ बैठा और बोला—

'ए लंबी उम्र वाले काठ के उल्लू! अभी किस्सा पूरा नहीं हुआ! अभी तुझे आगे का हाल बताना बाकी ही है।

हर वकील, ए भाई, अपनी रोज़ी के लिए रोज़ अख़बार पढ़ता है। परिवर्तनराय ने देखा कि आए दिन आजकल जयंतियों का बड़ा जोर है। जो भी बड़ा आदमी बना उनकी जयंती या जन्मतिथि मनाई गई वह चट बड़ा आदमी बना। परिवर्तनराय के दिमाग़ में यह बैठ गई कि उनको अपनी जयंती या जन्मतिथि किसी न किसी तरह मनवानी चाहिये। ढूँढते-ढूँढते उन्होंने वह डायरी खोज निकाली जिसमें उनकी जन्मतिथि लिखी हुई थी।

और सुन कि मेरे दोस्त, यह तारीख क्या निकली कि गोया उनकी मौत का पैग़ाम निकला। बदकिस्मती से परिवर्तनराय की पैदाइश की तारीख़ थी उनतीस फरवरी। अब ये बड़े चक्कर में पड़े। उनतीस फरवरी! तारीख भी ऐसी कि जो हर साल पड़ती नहीं। मनाई भी जाय तो भला कैसे मनाई जाय? उन्होंने यह देखा कि जब वह पचास साल के हो जायँगे तब भी उन्हें जयंती मनाने का मौका न मिलेगा। लेकिन अब कोई चारा नहीं था।

परिवर्तनराय अपने गुरु से बड़े नाराज़ थे लेकिन क्या करते! मजबूरी क्या नहीं करवाती! तिकड़मदेव का ध्यान किया। फौरन मुसीबत का हल मिला। सोचा कुंडली की तिथि ही असली तारीख है। उसी के हिसाब से उन्हें अपनी जन्मतिथि मनाने का मौका मिल सकता था। चूँकि उनके खानदान के हर आदमी की कुंडली गुरु जोगानंद के पास रहती थी इसलिए वह मजबूरन मन मार कर गुरु के पास फिर चले!

गुरु के पास पहुँचकर जब परिवर्तनराय ने उनका पाँव पकड़ लिया तो गुरु फिर कुछ पसीज उठे। बोले—

'ए बद्लू! तूने मेरे साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया है। लेकिन जब फिर तू मेरे पास आया है तो मैं तेरी जन्मतिथि निकाल कर बताऊँगा। तूने अब तक जो करम किए हैं उनसे मेरा मन बहुत खिन्न हो गया है। और कोई गुरु होता तो क्षमा न करता लेकिन मैं तुझे क्षमा किए दे रहा हूँ। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से अगर तेरा जन्मदिन उनतीस फरवरी है तो उसकी तिथि तो निकल गई है लेकिन अगर तू मेरी दी हुई कौड़ी ले आ तो मैं उसका नम्बर देखकर तेरा जन्मदिन बता सकता हूँ।

मिस्टर परिवर्तनराय ने घर आकर कोना-कोना छान मारा। अकेले जब न ढूँढी जा सकी तो इसी के लिए शादी की लेकिन फिर भी कौड़ी जो खोई तो न मिली! उनके पास अब कोई कौड़ी नहीं रह गई थी।

हार कर गुरु के सामने जा खड़े हुए और हाथ जोड़कर बताया कि उनकी दी हुई कौड़ी खो गई है!

गुरु यह सुन कर बड़े नाराज़ हुए। फूट पड़े—

'बेटा बद्लू उर्फ़ मिस्टर परिवर्तन राय! तूने अपने गुरू की दी हुई कौड़ी खो दी है। पहिले ही तू कौड़ी का तीन हो चुका था लेकिन अब तू कौड़ी का कुछ नहीं रह गया। जा, तेरा यही होना बदा था। तेरा जन्म दिन अब नहीं मिल सकता! और सुन कि तू उनतीस फरवरी की जगह पर कभी अट्ठाइस फरवरी को अपना जन्म दिन न मनाना नहीं तो बरही के दिन तेरहीं पड़ जाया करेगी।'

गुरु के इतना कहने पर परिवर्तनराय का मन उदास हो गया। असगुन की बात सुन कर उनकी यह भी हिम्मत नहीं पड़ी कि अपने जन्म दिन को आगे पीछे करके मना लें। नतीजा यह हुआ कि उनका नाम पिछड़ने लगा क्योंकि उन्हें अपना जन्म दिन मनाने का कभी मौका ही नहीं मिला। इस तरह की दौड़ में त्रिया चरित्तर नहीं चल सकता क्योंकि वहाँ हर साल जन्म दिन मनाने की जरूरत पड़ती रहती है। चूँकि तारीख के मामले में भगवान ने पहिले ही से यह बात उनके जनमते ही साफ कर दी थी इसलिए वही हुआ कि मिस्टर परिवर्तनराय धीरे-धीरे कौड़ी के कुछ नहीं रह गए!

पंडित गोकरन ने जब तक कहानी खत्म की तब तक बाबू शिव नारायन एकदम पस्त हो गए। पंडित गोकरनाथ ने आगे कहा कि—

'ए बाबू शिव नारायन, इसीलिए कहा था कि मर्द भी औरतों से कम त्रिया चरित्तरी नहीं होते ! सिर्फ पकड़ की बात रहती है।

ए लकड़ी के भाई, इसके बाद बाबू शिवनारायन ने चुपचाप अपना छाता उठाया और लंबे पड़े।

और मैं तुझे बताता हूँ कि कोई आदमी कितना ही तिकड़मी क्यों न हो लेकिन जब वह अपना तिड़कम अपने गुरु पर ही चालू करता है तो उसे गुरू से हमेशा मुँह की खानी पड़ती हैं क्योंकि कहा है कि गुरू आखिरी दाँव अपने पास ही रखता है। इसलिए ए दोस्त तू देख कि गुरू ने कैसे कैसे इस चेले को कौड़ी का कुछ नहीं बना कर छोड़ा।'

कबूतर ने अपनी बात खत्म की।

तब तक दूर कहीं पर घड़ियाल के बजने की आवाज आई !

कहानी का बीज

घड़ियाल की जोर की टन-टन आवाज ने सन्नाटे के उस पर्दे को जैसे चीर कर रख दिया। कबूतर ने एक प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी मेजबान काठ के उल्लू की तरफ देखा जैसे कि वह यह जानना चाहता हो कि अब सुबह होने में कितनी देर है!

काठ के उल्लू ने कहा—

'घबराओ मत मेरे मुसाफिर। अभी तो रात बड़ी पड़ी हुई है! सबेरा होने में अभी तीन-चार घंटे की देरी है। सर्दी भी अभी बड़ी तेज़ है। सर्दीली हवा की लहरों से खिड़की के शीशों पर धुँध छा गई है! भला ऐसी मुसीबत में तुम कहाँ बाहर जाओगे?

कबूतर ने कहा—

'ठीक है मेरे मेजमान! तू तो यह जानता ही है कि मैं सर्दी से बचने के लिए ही तेरे घर में आया हूँ। जब तक सुबह नहीं होती तब तक मैं तुझे और तेरा सहारा छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा।

काठ का उल्लू बोला—

'ए मेरे नौजवान भाई! तूने यह कहानी जो अभी सुनाई, उससे मेरी समझ में तिकड़मी-चेलों की दास्तान तो अच्छी तरह आई लेकिन एक बात तुझे समझाऊँ कि सभी गुरू ऐसे नहीं होते जो अपने चेलों को इस तरह मटियामेट कर देते हैं!'

'तो क्या, मेरे बुजुर्ग उल्लू! वह अपनी इज्जत की बिना परवाह किये ही अपने चेलों का साथ देते ही चले जाते हैं? कबूतर ने सवाल किया।

काठ के उल्लू ने कहा—

'हाँ मेरे दोस्त! ऐसी ही बात है। ऐसे गुरू अपने चेलों को ऊँच-नीच जगहों से ऊपर उठाते रहे हैं। आज मैं तुझे एक ऐसे ही गुरू की कहानी सुनाता हूँ जिसने अपने चेले के लिए क्या नहीं किया और जिसके चेले ने चट तोते की तरह आँखें फेर लीं।

कबूतर बोला—

'भला ऐसे बदजात चेले के साथ गुरू ने अपनी गुरुवई का निर्वाह क्यों

कर किया, इस बात को तू जल्दी ही सामने खुलासा करके बताने की तकलीफ़ गवारा कर।'

जाड़े की भयानक सर्दी की तीखी हवा की सुरसुरी कमरे के भीतर भी घूम रही थी। रोशनदान अब भी हवा का स्वागत कर रहा था। इसी रोशनदान से रात की कालिख और बाहर की ठंडक का बहुत कुछ अन्दाज़ मिल रहा था।

काठ के उल्लू ने नौजवान मुसाफ़िर से कहा कि—

'ए भाई रात काफ़ी हो चुकी है। किस्सों का सिलसिला इतनी जल्दी खत्म न होगा। तू अब भूखा हो गया होगा। हमें सारी रात इसी तरह काटनी है। इसलिए अच्छा यही होगा कि तू कुछ खा पी ले तब मैं इस किस्से को आगे बढ़ाऊँगा।'

काठ के उल्लू ने आँखों ही आँखों में इशारा करते हुए बताया कि 'कमरे के कोने में एक चीनी की तश्तरी में कुछ अनार के दाने छिले हुए रक्खे हैं। शायद उन्हीं में अंगूर के भी कुछ दाने पड़े हुए हैं। ए भाई, मेरे मालिक को ये दोनों चीजें ख़ास तौर से बहुत पसन्द हैं। वह जब कमरे में अकेला होता है तब वह घूम-घूम कर इन दानों को चबाता रहता है और सोचता रहता है।'

कबूतर ने देखते हुए पूछा कि 'लेकिन भाई, उस तश्तरी के ऊपर तो एक तश्तरी और ढँकी हुई है। भला मैं कैसे उन दानों को खा पाऊँगा?'

काठ के उल्लू ने तरकीब बताते हुए फ़रमाया—

'ए नौजवान, मैं तो यह समझता था कि तूने आज तक इस तरह कितनी ही तश्तरियों को हटाकर अंगूर के दाने उड़ाए होंगे! लेकिन आज लगता है कि तू इस फ़न से जानकारी नहीं रखता है! अरे भाई, देख, तुझे यह चोंच जो विधाता ने दे रक्खी है उसे इस्तेमाल कर। अपनी चोंच से हल्के तरीके से वह तश्तरी हटाकर दूसरी तरफ़ कर दे। लेकिन हाँ, ज़रा ख्याल रखना कि कहीं ज़ोर से टनाक् की आवाज़ न पैदा कर देना नहीं तो ए भाई, फिर मुसीबत आन खड़ी हो जायगी और मेरा मालिक जाग जायगा।' आगे उसने बात पूरी करते हुए कहा कि

'ए भाई अगर यह बूढ़ा उल्लू उठ पाता होता तो तेरे पास यह तश्तरी और यह दाने खुद पहुँचा देता लेकिन मैं अपनी जगह से उठ ही नहीं पाता! ए मेरे लतीफ़ मेहमान, मुझको माफ़ कर और तकल्लुफ़ में न पड़कर खुद अपने नाश्ते का इन्तज़ाम कर ले।'

कबूतर 'कोई बात नहीं' कहता हुआ लपक कर उड़ा और तश्तरी के पास पहुँच गया।

काठ के उल्लू ने फिर कबूतर को हिदायत की कि वह ज़रा भी आवाज़ न पैदा करे नहीं तो अगर अबकी मालिक की नींद टूटी तो वह बेचारा घर से बाहर निकाल ही दिया जायगा।

मेहमान ने अपने मेज़बान का कहना मानकर उसी तरह तश्तरी एक दम साफ़ कर दी। ऊपर की ढँकी हुई तश्तरी को खिसका कर उसने अलग कर दिया।

कबूतर दानों को चबा चुकने के बाद बोला—

'हाँ मेरे सफ़ेद बालों वाले बुज़ुर्ग दोस्त! तूने उस कहानी की डोर नहीं उठाई जिसका ज़िक्र तू अभी कर रहा था! भला वह गुरु कैसे आदर्श बना और चेला ने किस तरह उसके साथ बदज़ाती की?

काठ के उल्लू ने गहरे रंग की लकड़ी के भीतर से मुस्कराते हुए कहा—

'हाँ मेरे रंगीन जवान, मैं सोच ही रहा था कि अभी तू उस किस्से का फिर से ज़िक्र जरूर करेगा। अच्छा सुन!

'बहुत दिन की बात है कि जब मुझे मेरे इस मालिक ने नहीं खरीदा था तब तक मैं अलोकी नगरी की एक दूकान 'प्रेज़ेंट्स' पर रक्खा हुआ था। वह दूकान ऐसी ही चीज़ों की दूकान थी जहाँ पर हर तरह के तोहफ़े और भेंट खरीदने पर मिल सकते थे।

मेरी उस दूकान का मालिक एक रामेश्वर प्रसाद नाम का आदमी था। रामेश्वर प्रसाद महफ़िलों का बड़ा शौकीन था। उसकी दूकान में ग्राहक कम, दोस्त ज्यादा आते थे जो वहाँ बैठकर दिन भर बैठकबाज़ी किया करते थे। दिन भर बैठे-बैठे बातें करना और कभी-कभी पान सुपारी खाना, यही उस दूकान पर हरवक्त दिखाई पड़ता था। इन्हीं रामेश्वर प्रसाद के दोस्तों में एक था गोपाल चौरसिया।

गोपाल चौरसिया बड़ा रसिया आदमी था। ठेठ सर्दी की शाम में भी वह चुने हुए मलमली कुर्ते पर एक दुपट्टा ओढ़ता—बढ़िया सुनहरी किनारी की चुनी हुई शाँतिपुरिया धोती, काले चमकते चमड़े का जूता जिसे तुम सब पेटेंट चमड़ा कहते हो, गले में एक काला डोरा जिसमें सोने की एक दाँतखोदनी पड़ी हुई, आँखों में सुरमे की एक हल्की लकीर, मुँह में पान की चौबीस घन्टे वाली

गिलौरी, हाथ में चाँदी की मूँठ लगा हुआ एक लचकीला बेंत, जेब में एक रंगीन रूमाल जो जेब के ऊपर से झलका करे—ऐसे चलता था कि बस देखते ही बनता था। गोपाल चौरसिया को जाने कैसे शहर के कोने-कोने की ताज़ी खबरें रोज़ पता चल जाती थीं। ए कबूतर, वह इन खबरों को बटोर कर लाता था और रामेश्वर प्रसाद की महफ़िल में अख़बार का काम करता था!

एक दिन शाम को जब गोपाल दूकान में घुसा तो उसके चेहरे पर मुस्कान खेल रही थी। रामेश्वर प्रसाद ने पूछा तो उसने कहा कहा कि—

'ए भाई! देखो कि यह दुनियाँ कितनी मतलबी है कि अपने फायदे को नजर से एक बार देखते ही अपनी हर वफ़ा का एक मिनट में गला घोटने के लिये तैयार हो जाती है!'

रामेश्वर ने फिर सवाल किया—

'जो कुछ हुआ है उसे ज़रा खोल कर कह ताकि मैं तेरी बात से बात मिला सकूँ!'

गोपाल चौरसिया ने उस वक्त जो कहानी रामेश्वर प्रसाद को उस दूकान पर सुनाई थी, ए कबूतर मुसाफिर मैं वही कहानी तेरे रूबरू सुनाने जा रहा हूँ।

कबूतर ने गुटुर-गुटुर करके सुनने के लिए हुँकारी भरनी शुरू की।

दास्तान तजुर्बे की

उर्फ़

आदर्श गुरू और बदज़ात चेले की कहानी

'ए चमकीले परों वाले कबूतर !' काठ के उल्लू ने अपने कहानी का सिलसिला जोड़ते हुए कहा कि ' हुआ ऐसा कि हस्तिनापुर नगरी में, जो अपने यहाँ बहुत मशहूर नगरी मानी जानी जाती है, जहाँ अब खंडहर ज्यादा और आदमी कम हैं, एक आदमी आकर बसा।

उस आदमी की हुलिया ऐसी थी कि देखतें-देखते वहाँ का रहने वालों का ध्यान उसकी तरफ खिंच उठा। जो भी उसे देखता उसे देखता ही रह जाता। बड़ी बड़ी रतनारी आँखे जिनपर सुनहरी कमानी का चश्मा चढ़ा हुआ, ऊँचा उभरा हुआ माथा जिस पर त्रिपुंड लगा हुआ, लम्बी सुघड़ तराश वाली नाक, कंधे तक बढ़े हुए बाल जिस पर एक कुल्लेनुमा टोपी, छाती तक लहराती हुई दाढ़ी जिस पर हर दूसरे मिनट कंघी होती रहती, हमेशा हल्के लाल रंग के पाजामे कुर्ते से ढँका हुआ बदन जिस पर एक लम्बा लबादा ओढ़ कर चलने की आदत, लबादा-जो जाड़े में बड़े कोट का काम करता, बरसात में कपड़े भीगने से बचाता और गर्मी में ओढ़ लेने से जो मच्छरों से बचाता ! ए दोस्त ! बात यह थी कि कुल मिला जुलाकर उसका रहन-सहन इतना अजीब था कि किसी की आँखें, उसको बिना देखे आँखें नहीं कहला पातीं थीं। उसका नाम बताते थे कि शंकर देव था।

शंकर देव बिल्कुल अकेला आदमी था। उसके साथ कोई नहीं रहता था। उसका घर एकदम खाली था। इस तरह इस आदमी के वहाँ आकर बस जाने से पास पड़ोस वाले, जिनको और कुछ बेहतर काम नहीं था, इसी आदमी के बारे में पूरी जानकारी हासिल करने में लग गए। ऐसे आदमियों की चर्चा मैं पहिले ही कर चुका हूँ जिनसे मिल लेने पर अख़बार पढ़ने की जरूरत नहीं होती है। शंकर देव चूँकि किसी से मिलता-जुलता नहीं था इसलिए उसके बारे में सिवा अफ़वाहों के और कोई बात नहीं सुनने में आती। एक बार यह खबर उड़ी कि वह कोई जोगी है जो यहाँ आकर अपनी धूनी रमाना चाहता है। दूसरी बार और भी पुख्ता खबर यह उड़ी थी कि वह खुफ़िया-पुलिस का आदमी है, भेस बनाकर उस नगरी में आया हुआ है और सरकार ने उसे एक नामी-गिरामी डाकू को पकड़ने के लिये तैनात किया है ! जब तक यह खबर पुरानी पड़े तब तक एक नया शगूफ़ा यह छिड़ा कि यह कोई टूटा हुआ आशिक है और इसकी माशूका ने इसके साथ बेवफ़ाई की है जिसकी वजह से यह उस जगह को छोड़ कर अब इस जङ्गल में आ गया है। एकाध ने यह भी बताया

कि सरकार आज कल पुराने खंडहरों का सही पता लगाने के लिये बहुत से आदमी इधर-उधर भेज रही है ताकि आगे खण्डहर बनवाने में सहूलियत हो। सो हो सकता है कि यह आदमी पुराने खँडहरों की खोज बीन में यहाँ आया हुआ है और उसी तरह दिनों रात उन्हीं खँडहरों में घूमता रहता है।

ए पंछी! मुहल्ले वालों की इस ज़ोरदार और बेचैन खोजखबर की घबराहट देखकर मालूम पड़ता है कि परमात्मा भी परेशान हो गया। सो उसने एक दिन वह चाल निकाली कि शङ्कर देव का राज़ खुलने और जानने का एक सुनहरा मौका पड़ोसियों के हाथ लगा।

हुआ यह कि एक दिन सबेरे उठते ही मुहल्ले वालों ने यह देखा कि शङ्करदेव के दरवाज़े पर तख्ती लटकी है जिस पर लिखा हुआ था —

डा० शङ्कर देव

एम० टी, डी० एम० एच० यम० डी०

अपने की जड़ी बूटियों से बनाई हुई होम्योपैथिक दवाइयों के डाक्टर

गरीबों की दवा मुफ्त।

मिलने का वक्त—सुबह आठ से दस तक।

इस खबर को जैसे लोगों ने पढ़ा वैसे ही उनकी बाछें खिल गईं। जिस तरह अन्धे को, मुहावरे के मुताबिक सिर्फ़ दो आँखें ही चाहिये उसी तरह से इन मुहल्ले वालों को इससे बढ़ कर और कुछ नहीं चाहिए था।

शङ्करदेव का कमरा अब बदल गया था। मेज पर एकाध दवाइयों वाला बेग, दूसरी तरफ़ दिल जाँचने वाला आला, तीसरी तरफ़ कागजों को उड़ने से बचाने वाला एक शीशे का गोला, चौथी तरफ़ कुछ कटे हुये कागज एक हत्थे में लगे हुये, बीच में कागजी फूलों का एक गुलदस्ता। सबके बीचो बीच में एक नंगी औरत की, संगमरमर की एक मूर्ती जिसके गले में छोटा सा एक ताज़ा बेला का गजरा पड़ा हुआ। मेज़ के सामने दो एक तिपाइयाँ, मरीजों को बैठने के लिये पड़ी हुई थीं।

दूसरे दिन सुबह से ही जो शङ्करदेव के मकान पर भीड़ आनी शुरु हुई तो उसका अन्दाज़ बताना मुश्किल है! ए मेरे देस बिदेस घूमने वाले पंछी, जैसे कि तूने खुद ही देखा होगा, सबसे ज्यादा भीड़ इसी तरह के होम्योपैथिक डाक्टरों के यहाँ लगती है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक इस तरह की मीठी गोली चबाने में हिचकते नहीं और सभी लोग बेलाग इकट्ठा होते रहते हैं। होता

ऐसा है कि यह डाक्टर पहिले तो अपनी दूकान चलाने के लिये मुफ्त दवाइयाँ बाँटते हैं और जब वह देखते हैं कि उनका रङ्ग जमने लगा है और दस पाँच उनके मुरीद हो गये हैं तो वह धीरे-धीरे एक आना पुड़िया, फिर दो आना, फिर चार आना, आठ आना पुड़िया तक वसूल करने लगते हैं और एक वक्त वह आता है जब वह अपना पिछला घाटा वसूल कर चुकते हैं और अपनी जेबें फुलाते जाते हैं। यह भी तू जानता ही होगा कि होम्योपैथिकी एक ऐसा इलाज है जिसमें न सिर्फ़ सब चालू मर्जों का इलाज बताया गया है बल्कि इसमें उन मर्जों का भी हवाला है जिनका यमराज के रजिस्टरों में कोई जिक्र नहीं है। होम्योपैथिक इलाज करने वाले मरीज़ के लिये यह खास ज़रूरी नहीं है कि वह हमेशा बिस्तर पर ही लेटा रहे। इसके बरखिलाफ़ इसके मरीज हर आदमी की तरह खाते पीते उठते फिरते हैं लेकिन दवा लेने के लिये सबसे आगे नम्बर लगाते हैं।

यूँ तो डाक्टरी बहुतेरे करते हैं लेकिन शङ्करदेव की डाक्टरी सब में अनोखी डाक्टरी थी! उसने दवाइयाँ बाँटने के लिये बाँस की छोटी-छोटी चिपटियाँ बनवा कर रक्खी थीं जिनसे वह दवाइयाँ देता था! शङ्कर देव ने डाक्टरों के लिये एक नया तमाशा खड़ा किया। उसका कहना था कि चूँकि हिन्दोस्तान में आदमी सबसे पहिले धर्म में यकीन रखता है इसलिये जब तक उसका सहारा न लिया जायगा तब तक डाक्टरी सफल नहीं हो सकती। इसके लिये उसने एक तो यह तरकीब की कि जिनको पानी में पीने की दवा दी उनको उसने खालिस गङ्गाजल में दवा की बूँद मिलाकर पीने की हिदायत की और साथ ही वह हर मरीज को दवा देते वक्त एक मन्तर बता देता था जिसे पढ़ कर ही वह उन्हें दवा खाने के लिये बताता था! ए दोस्त! उसकी मेज़ पर जो फटे कागज़ रक्खे हुये थे उनमें ये मन्तर लिखे रहते थे! शङ्कर देव सिर्फ़ उनके ऊपर उनका सिरनामा या नाम लिख कर मरीज़ों को दे दिया करता था।

शङ्कर देव दवाइयाँ बाँटने लगा।

मरीज़ आने लगे। एक ने मुँह बनाते हुए अपनी बाईं टाँग के टख़ने के पास वाली नस की ओर इशारा करते हुए कहा किः

'यहाँ एक पैसे भर जगह पर कभी कुछ जलन होती है और कभी कुछ ठंडक मालूम होने लगती है। ज़रा ज़रा इसमें फुक-फुक की आवाज़ भी आती रहती है! वैसे चलने फिरने में कोई तकलीफ़ नहीं होती।'

शंकरदेव बोलता कम था। जब बोलता था तो बड़े डाक्टरी लहजे में बोलता था। उसने वही डाक्टरी सवाल दोहराए—

'किस करवट सोते हो ? चारपाई का सिरहाना किधर रहता है पूरब या पच्छिम ? जीभ कैसी रहती है, साफ़ या बिल्कुल साफ़ ? सपने कैसे आते हैं ? चोर से ज्यादा डरते हो कि साँप से ? दिन में पानी कै बार पीते हो ?'

सबका माकूल जवाब पाने के बाद डाक्टर शंकर ने दवा उन्हीं चिमटियों से उसके हाथ में पकड़ाई और कान में मंतर भी बता दिया जो कि खाने के पहिले वह मन ही मन पढ़ ले। मंतर का नाम बताया 'बाईं टाँग का पैसे भर उभरता दर्द !'

दूसरे मरीज़ ने बताया कि उसके नाक के नीचे धीरे-धीरे कभी ज़ोर ज़ोर से खुजली होने लगती है। डाक्टर ने फिर वही सब सवाल दोहराए और जवाब पाकर उसे भी चिमटियाया और दवा खाने के पहिले का मंतर उठाकर दिया। सिरनामा लिख दिया 'ख़राश और हरी मोछ !'

दवाइयों का यह ताँता जो बँधा तो फिर कुछ ही दिनों में हस्तिनापूर की नगरी ही के क्या बल्कि उसके आस पास के लोग भी शंकरदेव के मंतरों से अपना रोग भगाने के लिए आने लगे। इसके साथ ही पास पड़ोस के जितने डाक्टर वैद्य हकीम थे, सबने अपना अपना बिस्तर लपेटना शुरू कर दिया और दुम दबा कर भाग चले। पड़ोसी गाँव का सिर्फ़ एक वैद्य जो कि चरकानंद के नाम से अपने को मशहूर किए था, अब भी मैदान में डटा रहा और चाहे जितने कम मरीज़ उसके यहाँ आते वह अपनी दूकान खोले ही बैठा रहा ! ए कबूतर भाई ! तू इस आदमी चरकानंद का ध्यान रखना क्योंकि आगे चलकर किस्से में चरकानंद की वजह से ही जबर्दस्त मोड़ आता है ?

उधर का अब यह हाल सुन कि शंकरदेव की दवा ने जो ज़ोर दिखाया तो समझ कि घर-घर में उसकी चर्चा होने लगी और सब उसकी तरह-बेतरह की अजीब बातों से चकरा गए ! धीरे-धीरे उसकी इस डाक्टरी के फ़न को देख-कर उसके कितने ही लोग चेले होने लगे और मुरीदों की तादाद दिन-दूनी-रात चौगुनी बढ़ने लगी ! होते करते ये चेले दर्जनों में पहुँच गए। अब डाक्टर शंकरदेव गुरू शंकरदेव की जगह पर पहुँचने लगे। गुरू ने भी बढ़ते हुए चेलों को देख कर थोड़ा मुस्कराने की आदत डाल ली और अपने शिष्यों औ' मुरीदों की पूरी फ़ेहरिस्त बना कर उन्हें उम्र और लियाक़त के हिसाब से तीन हिस्सों में

बाँट दिया। जो सबसे बड़े थे उनमें पाँच मुरीद थे जो 'पंचपीर' कहलाते थे। उनके बाद दूसरे दल के छः मँझोले शागिर्द थे जो 'छमुँहे औलिया' के नाम से मशहूर हुए और सबसे छोटे चेलों की जो टोली बन रही थी उसका नाम पड़ गया था 'सतदरवेश'! इस तरह चेलों की यह जमात अपने गुरू शंकरदेव का डंका पीटने के लिए देस-देस घूमने लगी। बहुत से चेले चपाटी जो अपना नाम इन फेहरिस्तों में जुड़वाना चाहते थे या नई फ़ेहरिस्त बनने पर अपना नाम गुरू के हाथ से लिखा हुआ देखना चाहते थे वह रातो दिन उसे घेरे बैठे रहते। गुरू शंकरदेव अब मरीज़ों को देखकर सिर्फ़ मुस्कुराते भर थे, बाकी दवा बाँटने और मंतर देने का काम उनके चेले चपाटियों ने उठा लिया था।

डाक्टर शंकरदेव को चेले रखने का शौक है, यह बात उस नगरी में फैलते देर न लगी। शंकर देव सबसे मुस्करा कर बात करने के बावजूद भी कभी उनसे हिलता मिलता नहीं था। उसका क़ौल था कि जनता तो पानी की बहती धारा है उसमें नमक होकर नहीं गिरना चाहिए, नहीं तो आदमी बह बिलाकर खत्म हो जाता है और कोई उसे जानता भी नहीं। इसके बजाय आदमी को पत्थर की तरह नदी में पड़ना चाहिए जो अंदर से भी चमका करे! ए मेरे समझदार दोस्त! उस डाक्टर की इन उल्टी सीधी बातों का बेतरह रोब लोगों पर पड़ता था और वह मुँह खोले इसे देखा करते थे!

इन चेलों में, जो मँझोले गुट के 'छमुँहे औलिया' नाम से मशहूर थे, एक चेला था जिसका नाम था अविनाशी दयाल।

सुन कि मेरे कबूतर मेहमान! अविनाशी दयाल के बाप अशरफ़ी लाल उस नगरी के बहुत पुराने लोगों में से थे। अपनी जवानी के वक्त में उनको फिरंगी साहब बहादुर बहुत मानता था और चार पुश्त से वह वहाँ की कचहरी में बाबूगीरी का काम करते आ रहे थे। अशरफ़ी लाल अपने आपको रईस गिनते ज़रूर थे लेकिन घर का चूल्हा दोनों वक्त जलाना उनकी बीवी के लिए कभी-कभी मुश्किल पड़ जाता था। लड़के अविनाशी दयाल को दसवें दर्जे तक पढ़ाने के बाद उन्होंने एक लकड़ी की दूकान पर काम सीखने के लिए लगा दिया क्योंकि उन्होंने यह ठीक ही सोचा था कि आगे के ज़माने में नौकरी करने से बढ़ कर अपनी इज्ज़त को बैठाकर उस पर खुले आम जूता बरसाने का और कोई बेहतर तरीका नहीं हो सकता!

लेकिन विधना का लेखा कुछ और ही था। उसका मन लकड़ी चीरने

रन्दा चलाने, बसूला इस्तेमाल करने और आरी के कटाव में बिल्कुल ही नहीं लगा। वह अपने दूकान मालिक की आँखें बचा कर चुप-चाप जासूसी किस्से-कहानियाँ पढ़ने लगा। दूकान के मालिक ने पहिले अविनाशी को समझाया लेकिन असर न होते देख कर अशरफी लाल से शिकायत की। जब अशरफी लाल ने अपने लड़के को डाँट फटकार बतानी शुरू की तो अविनाशी की माँ ने आगे बढ़ कर कहा कि—

'ए अविनाशी के बाप ! अगर लड़के का मन लिखने पढ़ने में ही लगता है तो क्यों नहीं उसे कोई ऐसा काम दिलवा देते हो जो उसके मन का हो ! कौन जाने हमारा लड़का लिख पढ़ कर क्या से क्या हो जाय !

ए भाई ! इस कलजुग के अन्दर बीबी से बढ़िया वकील और हमदर्द मिलना बड़ा मुश्किल है। बाबू अशरफ़ी लाल को इस जगह के रहने वाले चार पुश्तों से जानते थे। उनकी सिफ़ारिश का ज़ोर अब भी लग जाता था। कह सुन कर अविनाशी को एक 'कोहनूर प्रेस' छापेखाने में प्रूफ़रीडरी का काम दिलवाया। कुछ दिन वहाँ रह कर वह काम करता रहा ! इसे उस छापेखाने का काम भी अच्छी तरह आ गया। वहीं छापेख़ाने में इसने गुरू शंकर देव की दवा की चर्चा सुनी और मंतरो का हवाला सुनकर बड़े चक्कर में पड़ा। इधर-उधर बातें सुनते-सुनते उसके मन में इसे देखने की बड़ी लालसा समाई।

इस तरह बिचार कर एक दिन वह अपनी तंदुरुस्त बहिन कांती को लेकर इलाज कराने के लिए गुरु शंकर देव के दरवाजे पर जा पहुँचा। भीड़ लगी हुई थी। चेले दवाइयाँ बाँटने में लगे थे। गुरू शंकर देव कुर्सी पर बैठना छोड़ कर अब गद्दी पर बैठने लगे थे। गद्दी पर बैठे-बैठे वह अपनी फरफराती हुई दाढ़ी पर कंघी कर रहे थे ? अविनाशी दरवाज़े के पास खड़ा हो कर सारी रौनक देखने लगा। उसे गुरु शंकर देव का इस तरह दाढ़ी पर कंघी फेरना कि हर एक बार कंघी साफ़ ऊपर से नीचे चली आती थी और उसमें उनके बाल नहीं फँसते थे, बड़ा अजीब लग रहा था ! घन्टो मोहा हुआ वह खड़ा-खड़ा देखता रहा कि गुरु शंकर देव किस तरह एक झोले से दवाई की किताब निकालते हैं। फिर उसने उतने ही ताज्जुब के साथ देखा कि वह किस कमाल के साथ झोला फिर खोल कर किताबें उसी में धर भी देते हैं। किस तरह वह अपनी कुल्ले वाली टोपी को उतारते हैं फिर अपनी एक उँगली से उसकी गर्द झारते हैं और बिना शीशा देखे ठीक बीचो-बीच सिर में उसे फ़िट कर देते हैं !

इतनी देर की तपस्या जो इस अविनाशी ने की तो एकाएक गुरु की निगाह इस अनिवाशी पर पड़ी। गुरु ने इसका चेहरा देखा तो तजुर्बेकार आँखों ने इसका भविष्य समझ अंदर इशारा करके बुला लिया! गुरु ने पूछा—

'क्यों लड़के क्या बात है जो तू यहाँ आया है?'

अविनाशी छूटते ही कहा—

'ओ गुरू जी महराज यह हमारी बहन है कांती। यह कहती है कि हम बीमार नहीं हैं लेकिन हमें ऐसा लगता है कि यह बीमार है क्योंकि वही आदमी बीमार होता है जो बार-बार कहता है कि वह बीमार नहीं है। क्योंकि उसके मन में डर समाया रहता है!

गुरु शंकरदेव ने कांती से पूछा—

'क्यों बेटी तुझे सपने आते हैं?'

कांती ने उत्तर दिया—

'नहीं'।

गुरू ने कहा—

'यह तो बड़ी ख़राबी की बात है। लगता है कि कहीं पर मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ है। ठहर अभी बताता हूँ देख कर!'

तब तक अविनाशी बोल पड़ा—

'लेकिन कांती तू तो कहती थी कि मुझे सपने आते हैं!'

कांती ने फिर कहा—

'हाँ आते तो हैं। लेकिन...'

गुरु शंकर देव ने बात पकड़ते हुए कहा—

'ठीक है। ऐसी हालत में कभी आते हैं और कभी नहीं भी आते। उसके लिए तुमको ज्यादा फिक्र नहीं करनी चाहिए। लगता है कि बचपन में माँ के दूध के लिये तुम्हें बहुत रोना पड़ता रहा है। तभी इस प्रकार की मानसिक ग्रंथियां पड़ गई हैं जिनको निकालना होम्योपैथिक से ही संभव है। इस तरह की वैयक्तिक कुंठा बड़ी खतरनाक चीज होती है। इसके लिए दो सौ पावर की दवा ले जाओ और साथ में मंतर भी!' उसकी 'मानसिक ग्रंथियों को जलाने के लिए जो दवा के साथ मंतर दिया उस पर लिखा था—

आसमान का कुम्हड़ा
एक दिन फूट जायगा

इस पर जलपरी मछली उतर गई है !
मेरा कुर्ता कुतर गई !!
बदज़ात !!!

इस मंतर को पढ़कर जो कांती ने दवा खाई तो वह और भी भली चंगी हो गई। अविनाशी का यकीन गुरू में जम गया और हुआ यह कि एक दिन वह अपनी छापेखाने की नौकरी छोड़ छाड़ कर इस गुरू की शागिर्दी करने के लिये आ गया।

अविनाशी का चेहरा मोहरा देखने में अच्छा था। नाक नक्शा, कद, रंग, रहन-सहन सब कुछ मोहने वाला था। गुरू शंकर देव के यहाँ यह कायदा था कि वह खूबसूरत लड़कों को ही अपना चेला बनाया करते थे इसलिए अविनाशी को भी चेला बनने में ज्यादा झंझट का सामना नहीं करना पड़ा। होते करते अविनाशी की लगन ने उसे 'गुरू के प्यारे' शागिर्दों में पहुँचा दिया और एक दिन वह 'छमैंहे औलिया' में से एक गिना जाने लगा।

इन चेलों का अपने गुरू में अखंड विश्वास था। जो कुछ भी डाक्टर शंकरदेव समझाता वह सब उनके लिये वेद और गीता बन जाता था। वह यह रोज देखा करते कि गुरू की दवा और मंतर से हर आदमी अच्छा ही होता चला जाता है। गुरू के चेलों में एक था अष्ट भुजासिंह। उस अष्ट भुजा ने होते करते एक दिन इस राज़ का पता लगा कर सब चेलों को बताया कि गुरू जी रोज रात को पास वाले खँडहरों में घूमते हैं जहाँ बताते हैं कि किसी पीपल पर कोई जोगिनी रहती है और गुरू ने उसी जोगिनी को सिद्ध कर लिया है। उसने यह भी बताया कि गुरू जी दवा किसी कारन से बाँटते हैं और जिस दिन वह जोगिनी दवा बँटवाना बंद करा देगी उस दिन यह सब सरंजाम उठ जायगा। अष्ट भुजा सिंह ने यह भी बताया कि रोज़ रात को जब गुरू जी खंडहरों में घूमते हैं तो वहाँ उनको वह जोगिनी उन मंतरों को बता देती है जिनको ये कागज की पुर्जियों में लिख-लिख कर बाँटते हैं। उसने यह भी राज़ खोला कि इसीलिए उन मंतरों का मतलब उस जोगिन के अलावा और कोई नहीं बता सकता।

अविनाशी ने जब उससे इस बात का सबूत माँगा तो अष्ट भुजा ने एक कापी दिखाई जिसे वह गुरू के लबादे में से निकाल लाया था। कापी में बड़े भारी भारी मंतर लिखे हुए थे। हर मतर के साथ उसका सिरनामा भी लिखा था। अविनाशी ने पढ़ना शुरू किया—

बाईं नाक का छेद और उसका जुकाम
मेरे हाथ में सामुद्री दावात
हाथों का पंखा
उड़ा दो सक्साफ़ोन जैसे।

... ...

चादर और पीले बुखार की पाँत
घर बैठे—
हिरन की आँख
तुम क्यों रबर सी दीपित हो
मुने पर
क्षण भर ?

... ...

पलायन और पीड़ा
गुड गॉड कहा
चल पड़ा !
वह मारा
फट्ट !
ह्रीं क्लीं स्वाहा।

... ...

दर्दीली पीठ और सुकराती दर्शन
कोटर की जीभ
पीपल की डाल पर
बिल्ली की आँखों सा रेशमी बाल !!
जय हो !

... ...

मानसिक संतुलन और ग्रंथि
दनुज ने कहा मनुज !
मनुज ने कहा अनुज !!

अनुज ने कहा—
जिंदगी करती है बुजबुज !
चुप रहो ! जु !!

... ...

रूमानी फ़ीवर और आँख की दूधिया लाली

पहिले खुटखुट
आगे कुटकुट
पीछे चुटचुट
आख़िर पुटपुट
एण्ड कम्पलीट !

... ...

इसी तरह के उसमें अनगिनत मंतर लिखे भरे थे। अष्ट भुजा सिंह के यह सब बताने पर सब चेले इस बात पर एक राय हो गए थे कि गुरु शंकरदेव ने किसी जोगनी पिसाचिनी को फाँस कर यह मंतर वसूल किये हैं और इसका पूरा राज़ गुरु से ज़रुर हासिल कर लेना चाहिए ! अविनाशी ने यह भी कहा कि गुरुशंकर देव किसी कारन से अभी दवा बाँट रहे हैं और उस जोगिनी के कहने में आकर इन्होंने अगर दवा बाँटना बंद कर दिया तो हम लोग तो कहीं के न रह जायँगे। इसके लिए इन्होंने यह तै किया कि किसी न किसी तरह से गुरु से सारा राज़ मालूम कर लिया जाय ताकि आखिर में हम चेले लोग एकदम बेवकूफ़ न साबित हों ! सब चेलों ने तय किया कि 'गुरु-शंकरदेव की बानी ज़बानी याद कर ली जाय ताकि मौका पड़ने पर इसका पूरा इस्तेमाल वे सब कर सकें।

ए मेरे मेहमान ! अब आँखों में नींद न लाना और मन पर सुस्ती न आने देना क्योंकि असली कहानी यहीं से शुरू होती है। एक दिन गुरू शंकर देव सुबह से ग़ायब रहे और जब शाम को लौटे तो उनके साथ एक खूबसूरत लड़की थी। लड़की क्या थी कि बस उसका भी अनोखा सिंगार था। वह लहँगा दुपट्टा पहिने हुए थी लेकिन उसकी सारी सजावट अंग्रेज़ी ढँग पर की गई थी। मुँह पर पाउडर और ओठ रँगे हुए। बालों को घुघँराले बनाए हुए, हाथों में हाथी दाँत की एकाध चूड़ियाँ, कानों में हीरे की तरह चमकने वाले पत्थर के एक-एक नग, पैरों में मोज़े और जूते। चेहरा गोरा। नाक-नक्शा देखने लायक।

बात-बात में हँसकर ठिठोली करने की आदत। उसको लेकर गुरू शंकर देव अपने दवाख़ाने में क्या घुसे कि बैठी हुई चेला-मण्डली में कनफुसकी शुरू हो गई।

शंकर देव बहुत दुनियाँ-देखे आदमियों में से था। लड़की को लेकर वह दूसरे कमरे में चला गया। उसके बाद सब चेलों को उसने इकट्ठा किया और अपनी आवाज़ को गम्भीर बना कर बोलना शुरू किया—

'ए मेरे चेलो! इस लड़की के एका एक यहाँ आ जाने से तुम सब में घबराहट और बेचैनी होती दिखाई पड़ रही है। तुम सब एक दूसरे के कानों में हर तरह से मंत्र फूँक रहे हो! इस लड़की को तुम सब देख ही रहे हो। इसका नाम 'प्रयोगा' है। मैं अपने दवाख़ाने और दवाइयों के सिलसिले में एक नया तजुरबा करना चाहता हूँ इसलिए इस प्रयोगा लड़की को यहाँ लाया हूँ। जिस तरह विलायत में हर बड़ी दूकान पर लड़कियाँ सामान बेचतीं हैं उसी तरह से यह लड़की यहाँ पर दवा बाँटा करेगी। अब से दवा मुफ्त नहीं मिलेगी। हरेक को उसके लिए दो-दो आने हर बार देनेहोंगे इससे भीड़ में कोई भी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।'

चेले चुपचाप सुनते रहे।

गुरू ने आगे कहा—

'ए नौजवानों यह उम्र बुरी होती है और हर आदमी उसी गड्ढे में गिरता है जिस पर, अलग होकर, वह हँसता है। इसलिए अगर इस दवाख़ाने में तुम सब इस प्रयोगा के साथ बेतरह मुहब्बत करने लगे तो फिर सारा दवाख़ाना चौपट हो जायगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम सब यह दवा, जो मैं दे रहा हूँ, खालो। सबके लिए मैं मंतर पढ़े दे रहा हूँ। तुम सब यह दवा खा लोगे तो तुम में से कोई भी इस लड़की से मुहब्बत करने के क़ाबिल नहीं रह जायगा।'

इतना कह कर गुरू शंकरदेव ने सब को एक शीशी में से गोली बाँटना शुरू किया। सब चेलों को वह दवा मजबूरन खानी पड़ी। मगर ए मेरे कबूतर! अब तू यह कुदरत का तमाशा देख कि सब ने इस दवा को खा लिया। एक अगर दवा नहीं खायी गई तो इसी अविनाशी से। गुरू की आँख दूसरी तरफ़ फिरते ही हमने चटपट मुँह की गोली थूक दी और···।

और इस तरह धीरे-धीरे उसने प्रयोगा की तरफ़ अपना मन फेंका।

इस लड़की के उस दवाख़ाने में आ जाने से बड़ी सनसनी मची। सब

यह ख़ास तौर से कहा गया था कि इस दवाख़ाने में दवा बाँटने
शंकरदेव की चेलिन मशहूर प्रयोगा देवी खुद तशरीफ़ ले आईं

भाई कबूतर ! हिन्दोस्तान में भी इश्तहारों के सहारे
कर लेते हैं। सब तरफ़ शहर में शोहरत हो गई। अविना
जान पहिचानी भी निकल आए। मन्तर अविनाशी की याद
पहिचान भी थी। सब की मदद से अविनाशी ने अपनी
जमा ली।'

कबूतर ने पूछा कि

'ए भाई ! लेकिन उस लड़की का क्या हाल हुआ ?'

काठ के उल्लू ने जवाब दिया—

'ए मेरे दोस्त ! अब तू उसका हाल भी सुन ! प्रयो
बड़ा सब्ज़ बाग़ देखकर इस चेले के साथ भागी थी लेकिन
जब रोटी कमाने के लिए इतनी दौड़ मचानी पड़ी तो सारा
रखा रह गया। लेकिन चूँकि वह जवानी के और, फिर, मुहब्ब
इसलिए यह सब उस वक्त कुछ पता नहीं चला। जिन्हें इस
के अलावा कुछ और सूझता है उन पर तू यह समझ कि जवा
किसी तरह प्रयोगा की मेहनत से दूकान जम गई !

'ए कबूतर बड़े जो यह कह गए हैं कि मक्कार हमेशा
है और अपनी मक्कारी से बाज़ नहीं आता है वह ठीक ही कह
किसी को भी धोखा देने से हिचकता नहीं !! ए भाई, मर्द
जितना तेज़ होता है, उतनी लड़की कभी नहीं हो पाती ! मर्द
मतलब देखता और उसी के मुताबिक अपना काम निकालता है

जैसे-जैसे दूकान चल निकली, अविनाशी का मन
किसी नई लड़की से लग गया जो कि उसी दिलवराबाद की
इस लड़की का नाम शमा था। शमा का बाप किसी अखब
था और वह खुद किसी की तरफ से नेतागीरी का पेशा क
चमक-दमक, तौर तरीका, तेज़ तबीर मिजाज़ देखकर अविना
हो गया और कुछ ही दिनों के अन्दर वह उसके साथ गल
लगा। यह लड़की शमा इसी तरह की लड़की थी जो नौजव

इधर से मोहरा फेंका गया उधर से उसका जवाब मिला। धीरे-धीरे घुलना-मिलना जारी हो गया। दोनों चुपचाप अपना काम करते रहे।

एक दिन जब शंकरदेव सुबह सोकर उठे तो उन्हें पता चला कि पिछली रात को उनकी 'मानसपुत्री प्रयोगा' उनके चेले महाशय अविनाशी के साथ शहर छोड़कर भाग गई। गुरु ने जिस बात की हिफ़ाज़त करनी चाही थी आख़िर वही घटकर रही। बड़ा सदमा पहुँचा। माथा पीट लिया! दिल को मज़बूत करने के लिए दवा के बक्स से एक पुड़िया निकाल कर खाई और चुपचाप पड़ रहे।

गुरु शंकरदेव को प्रयोगा के इस तरह भाग निकलने पर काफ़ी अफ़सोस रहा। लेकिन ए सन्देशा ले जाने वाले पंछी, तुझे बता ही चुका हूँ कि यह शंकरदेव दूसरी तबीयत का आदमी था और उसने धीरे-धीरे अपने मन से इस हादसे की याद भुला दी। लेकिन इसका यह असर ज़रूर उस पर पड़ा कि वह अब अपने चेलों से ज्यादा चौकन्ना रहने लगा। दूसरे चेले उसी तरह से गुरु की सेवा करते रहे और गुरु उनकी सेवा क़बूल करता रहा।

ए दोस्त मुसाफिर दूसरा असर इसका यह हुआ कि प्रयोगा के चेहरे मोहरे पर लुभा कर दूकान पर भीड़ करने वाले धीरे-धीरे कम होने लगे। प्रयोगा जब तक थी तब तक तो बहुत से तन्दुरुस्त लोग भी कोई न कोई बीमारी लेकर दवाख़ाने आ पहुँचते थे। ए भाई, खूबसूरती वह चीज़ है कि अच्छे भले चंगे नौजवानों को भी बीमार बनवा देती है! तो जैसा कि जग जाहिर है जब खूबसूरती उस दूकान से हटी तो भीड़ भी छँटनी शुरू हो गई। गुरु शंकरदेव समझ रहे थे कि उनका चेला उनके पेट पर भी लात मार कर चला गया था। बिना लौंडिया रक्खे गुरु ने दवाख़ाने चलाने में बड़ी मुश्किल देखी। मगर चारा ही क्या था?

ए घुमन्तू पंछी! अब तू उधर चेले अविनाशी का हाल चाल सुन!

इस तरह उसके एकाएक भागने के पीछे चरकानन्द वैद्य का बहुत बड़ा हाथ था। चरकानन्द ने उसे अच्छी तरह समझाया था कि अविनाशी अलग दवाखाना खोल कर ज्यादा कमा सकता है। चरकानन्द तो सिर्फ़ यह चाहता था कि किसी तरह शंकरदेव का दवाख़ाना टूट जाय और उसका बदला पूरा हो जाय। सो वह होकर रहा।

अविनाशी भागकर पड़ोस के शहर दिलवराबाद में पहुँचा जहाँ उसने अपनी दूकान खोलने का इश्तहार छपवा कर बँटवाना शुरू किया। इश्तहार में

प्रयोगा के सामने समझौते का कोई सवाल नहीं था। चोट खाई नागिन की तरह वापस पलट पड़ी और बाहर निकल गई। शमा ने जो यह देखा तो अविनाशी को अपनी गोद में खींच लिया।

अब तू उधर गुरु शंकरदेव का बयान सुन।

गुरु अपनी नई दवा बनाने में लगे हुए थे कि जिसे खाकर उनके चेले हमेशा हमेशा के लिए अपने गुरू की सेवा टहल में लग जायँ और कभी भी भाग न सकें। वह अब दवाइयाँ बना बनाकर मशहूर होना चाहता था। इसी तरह एक दिन जब वह अपने दवाखाने के चबूतरे पर एक बेत की कुर्सी पर बैठा हुआ अपनी दाढ़ी पर कंघी फेरते-फेरते अष्टभुजा सिंह को कुछ समझा रहा था कि अष्टभुजासिंह ने चिल्लाकर कहा—

'गुरु ! प्रयोगा जी शायद फिर आ रही हैं !'

प्रयोगा का नाम लेते ही गुरु उछलकर खड़े हो गए। देखा तो सचमुच प्रयोगा ही थीं। रूपरंग सब बिगड़ गया था। मैली कुचैली फटी सी धोती में वह पहिचानी भी न जाती थी ! चेले के हाथों पड़कर उसकी दुर्गति हो गई थी ! गुरु की आँखों में पानी आते-आते रह गया। चटपट बक्स से निकालकर एक पुड़िया खाई और आँखों के आँसू को रोक दिया ! सबके सामने रोना ठीक नहीं था। सिर्फ इतना बोले—तुम...?

प्रयोगा ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप कमरे में आकर बैठ गई। धीरे-धीरे चेलों को पता चला कि अविनाशी ने जिस लड़की से इस तरह इश्क किया था उसके साथ कैसा बदसलूक किया और अपना कमीनापन दिखाने में नहीं चूका।

ए कबूतर ! गुरु का बड़प्पन देख कि उसने फिर उस लड़की को उसी तरह अपने यहाँ रख लिया जैसे कि वह पहिले रहती थी। प्रयोगा के आँसू जैसे ही कुछ थमे, वैसे ही उसने गुरु से कहा कि अविनाशी पर वह मुकदमा चलाये क्योंकि वह प्रयोगा और गुरु शंकरदेव की ही कमाई खा रहा है, इसलिए उसकी पूँजी हमारी है ! प्रयोगा ने यह भी कहा कि इस तरह उसकी दूकान की साख बिगाड़ देना चाहिये मगर तू यह जान गया होगा कि शंकरदेव किस तबीयत का आदमी था। उसने कहा कि—

'ए प्रयोगा, आखिर को तो अविनाशी मेरा ही चेला है। वह चाहे जहाँ जाय लेकिन मेरा ही चेला कहाएगा। चेले पर कोई गुरु हाथ नहीं उठाता। वह

अपनी करनी का फल पा जायगा। इस जन्म में उसके लिए यही बहुत है कि वह लाख कोशिश करके भी शंकरदेव के नाम के फन्द से नहीं निकल पाएगा और वह जब याद किया जायगा तो 'छगुँहे औलिया' में से ही एक गिना जायगा।'

समझा बुझा कर और ढाढस देकर शंकरदेव ने प्रयोगा का मन धीरे धीरे ठीक कर लिया और अपने दवाखाने को फिर से चलाने का हिसाब करने लगा।

इस तरह गोपाल चौरसिया ने यह किस्सा मेरी दूकान के मालिक रामेश्वर को सुनाया और कहा कि—

ए दोस्त तू देख कि शंकरदेव जितने बड़े दिल का आदमी निकला उतना ही अविनाशी टुच्चा निकला।

ए कबूतर तूने यह देखा होगा कि मर्द जब भोली माशूका को इस तरह फसा कर ले आता है तो वह हमेशा जाल में पड़ी मछली की तरह छटपटाती रहती है और मर्द मौज करता है। मर्द या आशिक हमेशा इसी तरह बेवफाई करते हैं।'

इतना किस्सा कह चुकने के बाद काठ का उल्लू जब चुप हुआ तो उसके चेहरे पर वही सौम्यता शांति और गंभीरता विराजमान थी।

●

कहानी की उठान

कबूतर पंख फड़फड़ा रहा था। लगता था कि जैसे वह कुछ कहने के लिए व्याकुल है। रात का पिछला पहर शुरू हो गया था। सर्दी भी इसीलिए बढ़ सी गई थी। हवा के झोंकों के कारण दरवाजों पर लटके हुए परदे भी कभी-कभी हिलने लगते थे।

काठ का उल्लू समझ गया। उसने पूछा—

'क्या मेरे मेहमान! तुझे सरदी बहुत लग रही है?'

कबूतर ने शालीनता के चक्कर में पड़कर गुटर-गुटर दाँत चबाते हुए कहा कि—

'नहीं भाई! कोई खास नहीं लग रही है!.....'

काठ का उल्लू इतना नासमझ नहीं था। उसने इधर-उधर निगाह घुमाई। देखा और बोला कि—

'ए मेरे मेहमान पंछी, वह देख रेडियो बाजा रक्खा हुआ है। उसे सरदी गरमी मेरी ही तरह कुछ भी नहीं लगती है! सिर्फ शौक के लिए उसे यह मखमली ओहार उढ़ाया हुआ है। अगर तू यह काम कर सके तो उस ओहार को अपनी चोंच से पकड़ कर खींच ला और यहाँ ओढ़ कर बैठ। देख आहट न हो, नहीं तो फिर मुसीबत हो जायगी!'

कबूतर सचमुच सर्दी से परेशान था। बिना कुछ ननु-नुच किये वह ओहार ले आया और उसे ओढ़ कर बैठ गया। उसकी कँपकँपी कम हो गई। उसने बात-चीत का सिलसिला जारी करते हुए कहा कि—

'ए भाई! तूने जिस कदर आज मेरी खातिर की है वह मैं अपनी उम्र भर भूल नहीं पाऊँगा। अभी जो तूने कहानी सुनाई थी, वह अपने में निहायत दिलपसंद और मनहर थी लेकिन मैं तेरी यह बात नहीं मानने को तैयार हूँ कि आशिक ही बेचारा हमेशा बेवफा साबित होता है! मैंने ऐसे माशूक़ देखे हैं जो अपने आशिकों को लात मारकर चले गए!'

काठ के उल्लू ने हँसकर कहा—

'सो तो मुझे मालूम ही है मेरे दोस्त, कि कोई नौजवान मर्द मेरी इस कहानी के नतीजे को मानने के लिए तैयार नहीं होगा। बात यह है कि वहाँ आशिक की मर्दानगी का सवाल उठ जाता है!

कबूतर ने हँसते हुए ही कहा—

'नहीं भाई, इसमें मर्दांगनी का सवाल नहीं बल्कि आशिक और माशूक़ की पेचीदा हरक़तों का मामला उठता है। माशूक़ चाहे मर्द हो या औरत लेकिन वह हमेशा माशूक़ बनने पर उसी तरह बेवफ़ाई और मक्कारी करेगा ! ए काठ के उल्लू ! अगर मैं अपनी बात को पुख्ता करने के लिए कोई सबूत नहीं देता हूँ तो मेरी बात आप से आप दब जायगी। इसलिए मैं तुझे माशूक़ की बेवफ़ाई की एक दास्तान सुनाऊँगा ताकि तुझे मेरी बातों को परखने का मौका मिल सके।

काठ के उल्लू ने कहा...

'हाँ हाँ ज़रूर सुना ! मेरे मेहमान ! मैं तो खुद तेरे मुँह से ऐसा किस्सा सुनने के लिए बेताब हो रहा हूँ।

कबूतर ने बातें शुरू की।

'मेरे बचपन की बात है कि खालिकगंज नामी एक शहर में एक नौजवान कबूतर लड़ाने वाला मुहम्मदपीर नामका रहता था। उसने एक दिन एकजमादार से कुछ कबूतर खरीदे जिसमें एक मैं भी था। यह मुहम्मद पीर 'नाटी-नीम' मुहल्ले में रहता था और उस मुहल्ले के आवारा नौजवानों का अगुवा गिना जाता था। कबूतरबाज़ी, बटेरबाज़ी, पतंगबाज़ी और इस तरह की दूसरी 'बाज़ियों' में उसका रातोदिन कट जाता था। मुहम्मद पीर बहुत दुबले-पतले जिस्म का आदमी था लेकिन उसका चेहरा सलोना था। बात करने में उसकी लच्छेदार अदाओं को देखकर सब उस पर मोह जाते थे। जिस महफिल में वह जा बैठता वहाँ चार निगाहों को अपनी तरफ़ खींच लेना, उसके लिए बाईं आँख का खेल था। मुहम्मद पीर के पालतू कबूतरों में सबसे छोटा और खूबसूरत मैं ही था। अपने शौक में वह मुझे हमेशा हाथों में बाँधे रहता था !

'ऐ भाई, उसके पास के मुहल्ले बटेरगंज में एक भठियारिन रहती थी जिसे सब मुहल्ले के लोग सितारा खालू के नाम से पुकारते रहते थे। उसकी उम्र तो बहुत हो चली थी लेकिन अपनी अदाओं और नाज़के सहारे वह सदाबहार बनी हुई थी। सितारा भठियारिन की उम्र यही तीस पैंतीस साल के आस पास थी। उसके बारे में मशहूर था कि उसका इश्क किसी सौदागर से लड़ा था और वह ब्याहता हुई थी लेकिन जब वह सौदागर ब्यौपार करने के लिए सात समुंदर पार चला गया और लौट कर न आया तो सितारा खालू को बड़ी नाउम्मीदी हुई ; तब से सितारा भठियारिन उसकी इंतजार में सदा सोहागिन बनी हुई बैठी

रही और धीरे धीरे सितारा भौजी से वह सितारा ख़ालू तक खिसिकते खिसिकते आ पहुँची थी। सितारा ख़ालू का यह पेशा था कि वह शहर के नौजवान लड़के-लड़कियों को इश्क लड़ाने का पेंच सिखलाया करती थी और अगर हारे गाढ़े कोई दिक्कत या मुसीबत आन खड़ी होती थी तो सितारा भठियारिन उसको अपने करामात से हल कर देती थी।

'तो ए काठ के बोलते हुए पंछी, एक दिन ऐसा हुआ कि मुहम्मदपीर अपने एक मुहब्वत नामे को लेकर उसके पास पहुँचा और उसकी मदद चाही। सितारा खालू उस मासूम को देखकर मुस्काई और उसकी मुसीबत का हल उसने उसे बता दिया। करने को उसने हल कर भी दिया लेकिन उसकी तजुर्बेकर हरकतों ने एक ऐसा पेंच लड़ा दिया कि कुछ ही दिनों में मुहम्मदपीर के हाथों से उसकी माशूका निकल कर एक निहायत चपरकनाती के हाथों में जा पड़ी!

अब तू यह जानना चाहता होगा कि भला सितारा भठियारिन ने ऐसा पेंच क्यों अड़ाया और मुहम्मदपीर के इश्क का लोटा क्यों डुबाया? तो ए भाई इसमें बात यह खुली कि मुहम्मदपीर के रँगीले चेहरे ने उस सितारा भठियारिन का मन मोह लिया था। कहा गया है कि मुहब्बत कभी उम्र का ख्याल नहीं करती। सो भटियारिन की तबीयत उस पर आ गई और मुहम्मदपीर की असली माशूका देखते-देखते हाथ से निकल गई!

मुहम्मदपीर नौजवान था। नौजवान आदमी हमेशा बेवकूफ होता है। सितारा भठियारिन ने उस पर डोरे डालने शुरू किए और जब उसे अक्सर अपने घर बुलाना शुरू किया तो मुहम्मदपीर को यह हवा भी न लगी कि इसके नीचे कितना पड़ा मगरमच्छ है! उसका पता तो उसे उस दिन चला जब एक दिन सितारा ने बड़ी नजाकत से पान का एक बीड़ा उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा कि—

'ए मेरे सलोने जवान! तेरे सदके लेती हूँ। कहीं मेरी मुई नज़र तेरे न लग जाय! तेरी कटीली आँखों ने मेरे मन को बेध दिया है। अब तू मेरा हाथ पकड़ ले और मुझे छोड़ कर कहीं भी दूसरे का मुँह देखने न जा!

मुहम्मदपीर का कुँआरा मन थोड़ा डोला। लेकिन उसने फिर हिम्मत बाँधते हुए कहा कि—

ओ मेरी सितारा खालू! मैं तेरी मुहब्बत कबूलकर लेता लेकिन मुझे पक्का यकीन है कि हर माशूक वक्त पड़ने पर निकम्मा और बेवफा साबित होता

है और वह तोते की मानिंद अपने आशिक को तड़पता हुआ छोड़ कर आंखें बदल कर दूसरे आशिक के चक्कर में पड़ जाता है ! इसलिए ए मेरी जान ! मैंने तय किया है कि अब मैं किसी की मुहब्बत कबूल नहीं करूँगा ।'

सितारा खालू ने समझ लिया कि इसके दिलपर कोई गहरी ठेस लगी है । वह उठकर मुहम्मदपीर के करीब आई और सुरमे की एक सलाई उसकी आँखों में डालती हुई बोली—

'नहीं मेरे भोले आशिक ! तेरे मासूम दिल को, हो सकता है, किसी बेदर्द ने ठेस लगाई हो ! लेकिन सभी माशूक ऐसे बेवफा नहीं होते ! तू इतनी जल्दी माशूक की ज़ात बदनाम नहीं कर सकता !'

इतना कह कर वह मुहम्मदपीर से चिपट गई और उसे गुदगुदाते हुए बोली—

'अपनी यह उदास सूरत बदल डालो मेरे मालिक, और अपनी सितारा के लिए मुस्कराओं !'

भठियारिन और मुहम्मदपीर गुदगुदाने के साथ ही इस बात पर इतनी जोर से हँसे कि सितारा भठियारिन की बाँदी घबड़ाई हुई दौड़कर बैठक में आगई लेकिन सितारा की डाँट खाकर वह फिर वापस जननाखाने लौट गई ।

मुहम्मदपीर कुछ सकपका लेकिन गया भठियारिन ने दिलासा दिया । तब फिर उसने अपनी नरम गदेलियों से मेरा पंख सहलाते हुए कहा कि—

'ए भठियारिन तू ऐसे नहीं मानेगी तो मैं तुझे एक किस्सा सुनाता हूँ कि जिससे तुझे यह पता चले जायगा कि माशूक की जात कितनी बेवफ़ा होती है और उल्फ़त का अंजाम हमेशा कितना बुरा होता है ।

भठियारिन पानदान लेकर बैठी और मुस्कराते हुए इस मासूम मुहम्मद-पीर की जबानी किस्सा सुनने को तैयार हो गई।

मुहम्मदपीर ने अपनी कहनी शुरू की !

ए भाई, मुहम्मदपीर ने जो कहानी इस भठियारिन को सुनाई थी, आज मैं तेरे सामने वह कहानी बयान करने जा रहा हूँ । ध्यान धर कर सुनना ।'

●

बेवफ़ा माशूक की कहानी
उर्फ़
दास्तान उल्फ़त का अन्जाम

'ए भाई देख और सुन कि मुहम्मद पीर ने शुरू किया कि—

ए सितारा भठियारिन ! मुल्क हिंदोस्तान के बीच एक शहर आदिलपूर नाम से हुआ करता था ! तिस आदिलपूर शहर के अन्दर एक बड़ा मशहूर साहूकार बसता था जिसका नाम राम गोपाल था ! राम गोपाल के यहाँ सर्राफे का काम होता था और चाँदी-सोने के गहने बनते थे। इसके अलावा राम गोपाल के यहाँ लेन-देन का भी काम होता था। रामगोपाल को सब सुख था, सिर्फ उन्हें एक ही दुख था कि उनके कोई लड़का-बाला नहीं था। हर वक्त उनको यही फिक्र खाये जा रही थी कि उनकी जायदाद इस्तेमाल भला कौन करेगा ! हार कर बुढ़ौती में उनको परमात्मा ने आखिरकार एक लड़का दे ही दिया जिसका उन्होंने नाम दीनानाथ रक्खा।

दीनानाथ एक खूबसूरत लड़का था। उसे अपने खान्दान में चारों तरफ प्यार और मुहब्बत ही मिला जिससे वह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करता, बढ़ता चला गया। दीनानाथ बढ़ते-बढ़ते पन्द्रह साल का हो गया। उसे अपने चारों तरफ सब कुछ इतना अच्छा और खूबसूरत दिखाई पड़ता था था कि वह खूबसूरती का दीवाना हो गया। उसे हर जगह सुन्दर से सुन्दर चीजें इकट्ठा करने उन्हें इस्तेमाल करने, अपने कमरे में सजाने और उनके बारे में बात करने में मजा आता था।

बड़े आदमियों को और उनके बेटों को हमेशा बड़े-बड़े अजीब तरह के शौक होते हैं ! सो ए मेरे उल्लू दोस्त। दीनानाथ को भी अजब-अजब शौक हुए। कुछ दिनों इस लड़के को बगीचा लगाने का शौक समाया। राम गोपाल साहूकार की कोठी भरे बजार में थी। वहाँ भला बगीचा लगाने की जगह कहाँ थी ? ऊपर से नीचे तक मकानियत ही मकानियत थी। मगर इक-लौते लड़के का मन रखने के लिये रामगोपाल ने अपने मकान का एक हिस्सा तोड़वा कर उसपर पटेला चलवा दिया ताकि वहाँ पर बगीचा और फूलपत्ती लगा कर वह अपने बेटे के शौक को पूरा कर सकें !

जब दीनानाथ को बाग लगवाने का शौक चर्राया तो सारे आँगन से सीमेंट का पलस्तर तोड़वा कर उसे गुड़वाया गया और उसमें फूलों की क्यारियाँ बननी शुरू हुईं। मेल-मेल के देसी और विलायती फूलों के बीज और बेहन

मँगवाए जाने लगे। दुनियाँ भर की बीजकम्पनियों का ब्यौरा, सबके पते, सब का माल रोज़ आता रहा। कितनी फूल-सोसाइटी का वह मेम्बर बना जो उसके पास ताज़े और नए फूल की किस्में भेजती रहती थीं। ए भाई, इस फूल क्यारी के हाल में भी दीनानाथ ने कमाल दिखलाया! अपनी तरफ से पढ़-पढ़ कर इसने मूँगिया, गुलाब पैदा किया, लाल-चमेली पैदा की, हरा चम्पा का फूल बनाया! घर के चार नौकर इस बात पर तैनात हुए कि वह सिर्फ बागीचे की ही देख-भाल किया करें। ये नौकर रोज़ हर पत्ती की लम्बाई और नक्शा एक रजिस्टर में चढ़ाते रहते थे। फूलों के अलावा विलायती किस्म के फल भी लगाये गए। हर क्यारी में छोटी-छोटी तख्ती लगा कर उस पर पौधे का नाम, उसकी पैदाइश की तारीख़ और आगे का सारा ब्यौरा तैयार किया गया था विलायती-फलों का दौर जब चला तो फिर विलायती आम, विलायती किशमिश, विलायती सेब, विलायती टमाटर, विलायती अख़रोट सभी फलों की तख्तियाँ लटकीं। दीनानाथ ने खास तौर पर कुछ चाँदी की छोटी-छोटी खुरपियाँ, कुदालियाँ और फल तराशने वाले छूरे बनवाए जिनसे वह अपने बगीचे की क्यारियों में बोकर गुड़ाई निराई किया करता था। इन औज़ारों की मूठ हाथीदाँत की बनी हुई थी। उसके इस बगीचे और इन औज़ारों को देखने के लिए शहर के कितने ही आदमी रोज़ आया करते थे। ए मेरे उल्लू भाई! जब बड़े आदमियों को किसी चीज़ का खब्त हो जाता है तो उसकी तारीफ़ करने के लिये हज़ारों आदमी आने लगते हैं!

इस तरह ए काठ के पंछी, दीनानाथ के मन में खूबसूरती के लिये जो मुहब्बत पैदा हुई थी, वह इन रंग-बिरंगे फूलों का रस पाकर और भी बढ़ती चली गई। धीरे-धीरे जब दीनानाथ अठारह-उन्नीस साल का हुआ तो उसे तस्वीरें खींचने का शौक पैदा हुआ! ए पंछी, पैसे वालों के लिए यह भी एक अच्छा शगल माना जाता है! हाथ में तस्वीर खींचने का बक्स, जिसे कैमरा बोलते हैं, लेकर वह दर-दर की खाक छानने लगा ताकि उसे खूबसूरत चीज़ें अपने कैमरे में बन्द करने के लिए मिल जायँ।

कहते हैं विधिना के मन में क्या है, इसे कोई नहीं जानता! इसी तस्वीर खींचने की आदत ने दीनानाथ को एक अजीब मुलाकात कराई। खूबसूरती की खोज में इधर-उधर घूमती उसकी आँखों ने एक दिन देखा कि उसके सामने से एक बेहतरीन नौजवान, जिसकी मसें अभी भीग हो रहीं थीं, इठलाता हुआ चला

आ रहा है। उसकी आँखों में जैसे जवानी नशा बनकर झूम रही थी। गोरा इतना कि काबुली चना शरमा जाय, लाली इतनी कि अंगूरी शराब मात खाय, बाल ऐसे कि हमेशा एक ही तरह लहरायें, चाल ढाल ऐसी कि जो देखे वह उस पर लट्टू हो जाय! सारा बदन ऐसा कि हर कोई चाहे कि यह खूबसूरती हमारे पास रहे! सच है, खूबसूरती को सब अपने पास रखना चाहते हैं! फिर दीनानाथ तो खूबसूरती का दिवाना था। उसने इस नौजवान को देखा तो उसे जैसे एक मिनट के लिए काठ मार गया!

दीनानाथ यह भूल गया कि वह सिर्फ़ खूबसूरती को पसंद करनेवाला ही है उसमें रमने वाला नहीं! लेकिन ए पंछी, देख जब आदमी अपना काम, अपना फर्ज भूल जाता है तो वह ऐसी ही ग़लती करता है जैसी कि इस साहूकार के बेटे ने की! उसने आगे बढ़कर पूछ ही तो दिया कि—

'ए मेरे भाई! तेरे हुस्न पर मैं रीझ गया हूँ। तू कहाँ रहता है और तेरा भला क्या नाम है?'

रँगीले नौजवान ने जवाब दिया—

'सुन कि ए शख्स! मेरा नाम अब्दुल मजीद है और मैं इसी आदिल-पूर के पिपरिया मुहल्ले में बसता हूँ। लेकिन मेरा नाम गाम पूछने से तेरी क्या ग़रज़ है?'

दीनानाथ ने कहा कि :

'ए अब्दुल मजीद, मेरा नाम दीनानाथ है और मैं शहर के साहूकार रामगोपाल का बेटा हूँ। मैं तुझसे दोस्ती का हाथ माँगता हूँ। मैं खूबसूरती का पारखी हूँ और जहाँ कहीं भी मुझे खूबसूरती दिखाई पड़ती है तहाँ उसे इकट्ठा करके रखने का बीड़ा मैंने उठाया है!

रँगीले अब्दुल मजीद ने कहा कि वह एक ग़रीब बाप का बेटा है। और लाख खूबसूरत होने पर भी उसके पास अपना खर्चा चलाने के लिए एक पैसा नहीं है। इसलिए अगर उससे दोस्त का दम दीनानाथ भरेगा तो उसे उसका खरचा चलाने के लिए अपने बाप की तिजोरी पर हाथ लगाना पड़ेगा।

दीनानाथ इसके लिए कभी उज्र नहीं करता था क्योंकि वह अपने अमीर बाप का इकलौता लड़का था। ए भाई! दोनों की इस तरह दोस्ती हो गई!

ए उल्लू! मुहम्मदपीर ने सितारा भठियारिन को समझाते हुए कहा कि ए भठियारिन मैं, तुझे अब यहाँ की दास्तान बंद करके हिन्दोस्तान के बाहर लिए

चलता हूँ जिससे इस किस्से की डोर को पकड़ने में तुझे मदद मिलेगी। मुल्क हिंदोस्तान की सरहद से मिली एक जगह है जिसका नाम हर खूबसूरत-पसन्द आदमी जानता है। उस जगह को कोहकाफ़ का मुल्क कहते हैं! जैसा कि तू भी जानता होगा कोहकाफ़ की परियाँ न सिर्फ़ अपनी खूबसूरती में लासानी होती हैं बल्कि उनका जोड़ मिलना बड़ा मुश्किल है! जब कहीं किसी खूबसूरती के बारे में सवाल उठता है तो हमेशा कोहकाफ़ की परियों से उसकी खूबसूरती का मिलान करके झगड़े का निपटारा कर लिया जाता है! अब इस बीच यह किस्सा हुआ कि जब कोहकाफ़ की परियों ने यह देखा कि उन परियों और हूरों की ऐसी धाक सब तरफ़ जमी हुई है तो उन्होंने ठीक ही सोचा, कि क्यों न इसका फ़ायदा उठाया जाय? आजकल दुनियाँ में हर मुल्क अपनी यकता बात को सामने रख कर दुनियाँ की रहनुमाई और नेतागीरी के सपने देखने लगता है! ए भाई परियों और हूरों ने सोचा कि क्यों न अपनी खूबसूरती के पैमाने की रजिस्ट्री करा के देस बिदेस के खूबसूरत और खूबसूरती पसन्द लोगों की नेतागीरी वह अपने हाथ में ले लें।

इस तरह सोच विचार कर उन कोहकाफ़ की परियों और हूरों ने एक सभा बुलाई जिसमें यह तै किया गया कि देस बिदेस के खूबसूरती पसन्द लोगों को चूँकि दिक़्क़त का सामना करना पड़ता है कि वह किस तरह से इसके पैमाने और नापजोख तय करें, इसलिए यह कोहकाफ़ की हूरों और परियों की सभा, एक पैमाना तै करती है जिसके हिसाब से सारी दुनियाँ में खूबसूरती की परख की जाया करे। इन हूरों ने यह भी सोचा कि हर मुल्क में इन परियों और हूरों के गुन बखानने वाले रहने चाहिए ताकि हर जगह पर इनकी खूबसूरती के पैमाने चलें और राज फैले। इसके लिए एक आंदोलन चलाया गया जिसका नाम 'सुन्दरता आंदोलन' रक्खा गया। इस 'सुन्दरता-आंदोलन' का एक यह उद्देश्य या मक़सद रक्खा गया कि दुनियाँ से बदसूरती या कुरूपता मिटा दी जाय और हर इंसान उसी तरह खूबसूरत या सुन्दर दिखाई पड़ने लगे जिस तरह कि कोहकाफ़ की परियाँ अपने हुस्न के लिए प्रसिद्ध हैं और जहाँ बदसूरती है ही नहीं!

ए रात की दुनियाँ की भी नस-नस को देखने बूझने वाले उल्लू! आजकल दुनियाँ में बीमारी भी उतनी तेज़ी से नहीं फैल पाती जितनी जल्दी यह आंदोलन फैलते हैं। धीरे-धीरे दुनियाँ के हर कोने अँतरे में यह सुन्दरता आंदोलन फैलने लगा और खबर आने लगी कि लोग बदसूरती मिटाने के लिए

कमर कस कर तैयार हो गए हैं ! रेंगता-रेंगता यह आंदोलन इसी तरह से हिन्दोस्तान भी आ पहुँचा !

हिन्दोस्तान आते ही यह चीज़ आदिलपूर जा पहुँची जहाँ इसे जड़ पकड़ते देर न लगी क्योंकि वहाँ खूबसूरती के पारखी पहिले से ही मौजूद थे ! उन लोगों को एक जगह इकट्ठा करके यही समझाना था कि वह जो कुछ कर रहे हैं उसकी चर्चा दुनियाँ भर में फैली हुई है ! सब तरफ़ यह हल्ला उठा कि अब लोग दुनियाँ से बदसूरती और कुरूपता मिटा कर ही दम लेंगे और सब तरफ़ सिर्फ खूबसूरत ही खूबसूरत लोग नजर आएँगे । लोगों में यह हवा फैला दी गई कि कोहकाफ़ की सरकार साइंसी चीर फाड़ से और प्लास्टिक नामी मसाले से ऐसे नकली चेहरे तैयार कर देगी जो आगे आने वाली नस्लों के लिए एक नमूना बन जायँगे । इस तरह दुनियाँ से बदसूरती उठ जायगी और वह अपनी मौत मरेगी !

कोहकाफ़ के इस सुन्दरता आंदोलन ने क्या-क्या सब्ज-बाग दिखाए कि हर तरफ उसी की चर्चा होने लगी । आदिलपूर में सबको इकट्ठा करके यह आंदोलन चलाने का काम किया दीनानाथ ने । उसके समझाने का असर अच्छा हुआ क्योंकि वह बड़े बाप का बेटा था और लोग उसकी बात मानते थे ।

लोग दीनानाथ के चारों तरफ इकट्ठा होने लगे । दीनानाथ के पास खूबसूरती का एक ही पैमाना था, और वह था अब्दुल मजीद ! दीनानाथ के जोर देने पर सब लोगों ने आदिलपूर में अब्दुल मजीद को इस 'सुन्दरता-आंदोलन' का नेता चुना ।

अब्दुल मजीद जैसे ही नेता चुन लिया गया वैसे ही दीनानाथ ने इस आंदोलन की जड़ें मज़बूत करने के लिये सारे मुल्क का तूफ़ानी दौरा करना शुरू किया । साथ में अब्दुल मजीद को भी उसने ले लिया । जगह-जगह पर सभायें करके दोनों लम्बे चौड़े भाषण देते गये ! अब्दुल मजीद खूबसूरत होने के साथ अक्ल का भी तेज था । सारे मुल्क के खूबसूरती-पसंद लोगों का ध्यान उसकी तरफ़ उसी तरह खिंचा जैसा कि दीनानाथ चाहता था ! जो कुछ भी वह कहता उसे लोग ऐसे सुनते कि गोया कि खूबसूरती का मसीहा ही उनकी बद-सूरती मिटाने के लिये आया है । होते करते दीनानाथ ने अब्दुल मजीद को एक मशहूर आदमी बना दिया । एक दिन वह इन तमाम सुन्दरता वादी आदमियों का 'सेक्रेटरी' चुन लिया गया । ए भाई सेक्रेटरी का कहना उसी तरह लोगों को

मानना पड़ता है जैसे एक 'जब्रजङ्ग जोरू' का कहना नामर्द को मानना पड़ता है !

कोहकाफ़ की परियों और हूरों ने अपनी सरकार के नाम पर अब्दुल मजीद को हिन्दुस्तान को 'सुन्दरता आंदोलन' का नेता मान लिया और फ़तवा दे दिया कि हिन्दुस्तान की बदसूरती उसी नेता के कहने सुनने से मिट सकती है ! दीनानाथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वह खुद तो इतना खूबसूरत था नहीं कि वह नेता बनता लेकिन उसका जिगरी दोस्त नेता था, यही क्या कम था! यह राज तो सबको मालूम ही था कि दीनानाथ की ही कोशिशों के बल पर अब्दुल मजीद गद्दी पर बैठा हुआ है।

ऐ मेरी सितारा भठियारिन ! जैसा कि दुनिया जानती है, तू भी इस बात को जानती ही होगी कि एक आदमी को तरक्की करते देखकर हमेशा चार आदमी जलते हैं और इस बात की पूरी कोशिश करते हैं कि तरक्की करने वाले आदमी की टाँग पकड़ कर पीछे खींची जाय। आदमी का यह 'सुभाव' होता है कि वह जब तरक्की करने के चक्कर में पड़ता है तो खुद वह आगे बढ़ने की कभी कोशिश नहीं करता बल्कि आगे बढ़े हुये को पीछे घसीटने की भरसक कोशिश करता है ताकि दुनिया यह समझे कि जितनी अक्ल तरक्की करने वाले के पास है उतनी ही या उससे भी ज्यादा अक्ल उनके पास है जिन्हें तरक्की नहीं मिली है। बात यूँ समझ कि अब्दुल मजीद की किस्मत का सितारा जब इतना ऊँचा उठा कि उसकी चमक हिन्दुस्तान के बाहर भी पहूँची तो उसकी टाँग खींचने वाले भो बहुत से लोग उसी 'सुन्दरता-आंदोलन' में से ही निकल आये।

अब तू इन टांग खींचने वालों की दास्तान सुन ! टांग खींचने वालों का सरदार था संग्रामसिंह। जैसा कि नाम से ज़ाहिर होता होगा कि ये आदमी न सिर्फ़ बदसूरत था बल्कि झगड़ालू भी था। अपनी पैठ कहीं नहीं न पाकर इस बदसूरत आदमी ने 'सुन्दरता — आंदोलन' में घुसने की सोची। उसके लिये इसने अपनी टेढ़ी नाक को प्लास्टिक की मसाले वाली नकली नाक से ठीक कराया और पत्थर की एक आँख जड़वा कर उस पर काला चश्मा लगाते हुए काने होने का दोष भी छिपा ले गया। यह राज़ किसी को मालूम न हुआ और वह उस आंदोलन में शामिल हो गया। शामिल होते ही इसने अपने पैंतरे दिखाने शुरू किये और वह सब तरह से इस बात की कोशिश करने लगा कि

सुन्दरता आंदोलन' की लीडरी अब्दुल मजीद के हाथों से निकल कर इसके पास आ जाय यही वजह थी कि वह दीनानाथ से भी बहुत जलता था क्योंकि दीना नाथ की ज़बरदस्त गुटबन्दी की वजह से वह हमेशा नाकामयाब रहता था।

संग्रामसिंह ने धीरे-धीरे अपने पांव मज़बूत करने शुरू किये। उधर उसने पाँव मज़बूत करने शुरू किये तो आंदोलन के ही पांव डगमगाने लगे। काफ़ी मेहनत और लोगों को ऊँच-नीच समझाने पर संग्रामसिंह ने बहुत से लोगों को अपने साथ कर लिया। जब उसने अच्छी तरह देख लिया कि अब उस दल में इसके डगमगाने या गिरने का कोई डर नहीं है जो फिर उसने एक चाल खेली। अपने फ़रेब से उसने कोहकाफ़ की सरकार पर ज़ोर डलवाना शुरू किया। इस तरह हुआ यह कि कोहकाफ़ी सरकार ने सुन्दरता की कसौटी का एक नया फ़तवा दिया जिसके हिसाब से दायें गाल पर जिस आदमी के तिल हो वह खूबसूरत न माना जाय और वह किसी भी तरह आंदोलन या पार्टी का नेता न चुना जाय। इसके बजाय बायें गाल का तिल ख़ूब सूरती की निशानी माना जाय। क्योंकि बायें गाल पर ख़ुदा का बनाया हुआ वामपन्थी तिल है जो सच्ची तरक्की-पसंद ख़ूबसूरती की निशानी है। आगे कोह काफ़ी सरकार ने अपने बयान में कहा था कि ख़ूबसूरती के इन्हीं पैमानों को मज़ बूती से पकड़ते हुये अगर 'सुन्दरता-आंदोलन' के लोग आगे बढ़ते रहे तो दुनिया से एक दिन बदसूरती अपने आप मिट जायेगी।

ऐ मेरे उल्लू! तू यह न समझ पाया होगा कि इस दायें गाल के तिल और बायें गाल के तिल में क्या फ़र्क़ हो गया था जिससे संग्राम सिंह और अब्दुल मजीद की लागडांट में नया गुल खिला। दरअस्ल बात यह थी कि इस फ़तवे से मामला एकदम उलट गया। अब्दुल मजीद नामी नौजवान के दाहिने गाल पर तिल था जिसे खूबसूरती की निशानी मानते हुए उसे लीडर बनाया गया था। नेता बनने में इस तिल ने बड़ी मदद की थी। संग्रामसिंह ने बालाबाला ऐसी चाल चली थी कि एकाएक अब्दुल मजीद की बिछी बिछाई बिसात की गोटें उलट गई थीं। दीनानाथ की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। लेकिन कोई चारा न था। सदर मुकाम-दफ्तर के कोहकाफ़ी सरकार से जो कुछ आया था उसे टाला नहीं जा सकता था। देखते-ही-देखते दल के लोग बुलाये गये। अब्दुल मजीद बरख़ास्त हुआ और संग्रामसिंह नया नेता चुना गया।

संग्रामसिंह जिस वक्त इस दल में शरीक़ हुआ था उस वक्त उसके बायें

गाल पर तिल नहीं था लेकिन जब वह इस बार की मीटिंग में आया तो उसके गाल पर तिल मौजूद था। दीनानाथ का ऐसा कहना था कि उसने बायें गाल पर नकली तिल बनवाया है, क्योंकि वह सरकारी हुकुम पहिले से ही जान गया था और यह नया फ़रमान उसी की साज़िश से निकला था। दीनानाथ के माशूक़ दोस्त की साख ऐसी बिगड़ी कि वह दो-तीन महीने के अन्दर-अन्दर बिलकुल निकम्मा हो गया। उसकी गिनती खूबसूरतों में बन्द हो गई और मुख़ालिफ़ लोगों ने उसे गालियाँ देना शुरू कर दिया।

ऐ मेरे दोस्त! इस आंदोलन में बहुत से ऐसे लोग थे जो प्लास्टिक यानी नकली मसाले का सब सामान अपने साथ बटुवे में रखते थे। और कोह-काफ़ी सरकार खूबसूरती के नाम परजैसे जैसे फ़तवे निकालती थीं अपने-अपने चेहरों में उसी तरह के रद्दोबदल ये लोग कर लेते थे। फ़तवे में दायें गाल का तिल बदलकर जैसे ही बायें गाल का तिल हुआ तैसे ही उन चालाक लोगों ने अपना बटुआ खोला और उसमें से चिपकाने वाला मसाला निकाल कर बायें गाल पर नये क़िस्म का तिल लगा लिया और दायें गाल का तिल चुपचाप उतार कर बटुवे में रख लिया। उसी तरह से भौं को घटाने बढ़ाने के लिये बटुवे में 'भौ-पेंसिलें' रखी रहतीं थीं। सब एक इशारे का मुँह देखते थे सब जानते थे कि इसने अपने दायें गाल का तिल हटाकर बायें गाल पर चिपकाया है या इसने अपनी भौं की लम्बाई चौड़ाई घटाई बढ़ाई है। लेकिन कोई किसी को कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। हर एक की चोटी एक दूसरे के हाथ में थी।

ऐसे ही कुछ लोगों ने दीनानाथ और अब्दुल मजीद को अकेले में समझाया कि अगर वह अपनी लीडरी क़ायम रखना चाहे तो वे लोग अपने बटुवे के तिल से उसकी मदद करने को तैयार हैं, और सरे आम यह भी कह सकते हैं कि अब्दुल मजीद के बायें गाल पर शुरू से ही तिल था और उसके दाहिने गाल पर कोई तिल था ही नहीं। दाहिने गाल के तिल के बारे में कहने वाले लोग फ़रेबी हैं। इस बीच वह चाहे तो अपने दाहिने गाल पर से चीड़-फाड़' करवा कर तिल निकलवा दे।

लेकिन यह बात दीनानाथ को सख्त नापसंद आई और वह किसी तरह से इस बात के लिये राजी न हुआ कि उसका माशूक़ अब्दुल मजीद नकली तिल लगाकर लीडर बने। लिहाज़ा अब्दुल मजीद ने भी इन्कार कर दिया।

दीनानाथ का वह दीवानापन जो हर जगह उससे खूबसूरती और कला-

बाजी की खोज करवाया करता था, अब ग़ायब हो चुका था। अब तो वह अपने माशूक़ को किसी तरह से फिर गद्दी पर बैठाने का सपना देख रहा था। दिनो-रात वह हर चाल के जोड़-तोड़ सोचा करता। ऐ भाई! जैसा कि हम दोनों ही मान चुके हैं कि लगन लग जाने पर आदमी खुदाको भी पा लेता है। इस बीच अब्दुल मजीद को जितने ताने सुनने पड़ते थे, वह सब दीनानाथ की छाती बेधते रहते थे।

हुआ यह कि दीनानाथ ने खूबसूरती पर लिखी हुई मोटी-मोटी किताबें पढ़ीं। कोहकाफ़ी सरकार के पुराने फ़तवे पढ़े। हूरों और परियों की तस्वीरें निकाल कर देखीं। धीरे-धीरे छाँट-छाँट कर ऐसे-ऐसे हूरों के फ़तवे निकाले जिनमें यह साफ़ कहा गया था कि गाल पर सिर्फ़ तिल होना ज़रूरी है। यह क़तई ज़रूरी नहीं कि यह भी देखा जाय कि वह किस गाल पर है। अगर यह देखा भी जाय तो जनता को यह मालूम रहे कि दाहिने गाल का ही तिल उसकी उम्र दराज़ और लम्बी करता है।'

दीनानाथ को यह फ़तवा क्या हाथ लगा कि उसने फ़ौरन एक दरख्वास्त कोहकाफ़ की खूबसूरत सरकार के पास भिजवाई, जिसमें इन किताबों और फ़तवों का जिक्र किया गया था और कहा गया था कि उस अब्दुल मजीद के साथ सरकार ने बड़ी बेइंसाफ़ी बरती थी जिसने इतने लम्बे चौड़े मुल्क में 'सुन्दरता-आंदोलन' की पूरी नींव रक्खी थी और जिसकी वजह से तमाम लोग आज इसमें यक़ीन करते हैं।

उधर अर्जी गई इधर अब्दुल मजीद ने कोहकाफ़ी सरकार के अपने जान पहिचानियों को अपना रोना लिखकर भेजा और कहा कि —

'ऐ मेरे आक़ा! जब तुमने ही हमको इस लायक बनाया कि हम चार आदमियों में अपना सिर ऊँचा करके चल सकें तो आज ऐसा क्यों कहते हो कि हम चुल्लू भर पानी में डूब मरें, और किसी को मुँह न दिखा पायें।'

ऐ काठ के उल्लू! हर आदमी के चार दोस्त और चार दुश्मन होते हैं। इसलिये जब अब्दुल मजीद ने अपना पूरा ज़ोर लगाया तो पांसा पलटने लगा।

कोहकाफ़ी-सरकार पुराने फतवों को पढ़कर दंग रह गई। क्या करती!! कुछ बाहरी दबाव, कुछ अन्दरूनी चाल, कुछ अर्ज़ी का ज़ोर, सब मिला जुला कर यह हुआ कि अब्दुल मजीद की हैसियत बहाल हो गई। लेकिन एक यह

बात हुई कि कोहकाफ़ी-सरकार ने खूबसूरती के सारे पुराने फ़तवों को फ़ौरन वापस मँगवा लिया और फ़रमान निकाला कि आगे से कोई पुराने फतबों का हवाला न दे क्योंकि खूबसूरती के पैमाने हर ज़माने में हर वक्त मौका देखकर बदलते रहते हैं। इसलिये बुजुर्ग हूरों के नाम पर ऐसी चीज़ो की माँग न की जाय जिसे नये फ़तवों के ज़रिये अब बदल दिया गया है।

ऐ भठियारिन ! हुकुम तो सब कुछ हुआ लेकिन हिन्दुस्तान मुल्क में अब्दुल मजीद और दीनानाथ के हटाये संग्रामसिंह की लीडरी न हटी। यह ज़रूर हुआ कि 'सुन्दरता-आन्दोलन' के लोगों ने अब्दुल मजीद की खूबसूरती फिर से मान ली और बायें गाल का तिल फिर खिसक कर दाहिने गाल पर आ गया। चूँकि संग्रामसिंह और उसके साथी नकली तिल लगाकर भी लीडरी झप-टने में यक़ीन करते थे इसलिये उन्होंने अपना तिल बदल लिया और संग्राम-की नेतागीरी बनी रही। दल के लोगों ने इतना ज़रूर किया कि अब्दुल मजीद को फिर से बीच में उठाना-बैठाना शुरू किया और उस पर से हर तरह की रोक हटा ली। उसे खुद अपनी हालत पर तरस आता था। दीनानाथ तो और शरम से गड़ा जा रहा था और इन लोगों के बीच में नहीं उठता बैठता था। अब्दुल मजीद ने फिर कोहकाफ़ की बादशाहत को लिख भेजा कि उसकी इस हालत पर किसी तरह तरस खाया जाय।

यूँ तो कोहकाफ़ की सरकार की निगाहों में अब्दुल मजीद एक बेकार इन्सान साबित हो चुका था, लेकिन दुनिया के सामने नाक बचाने के लिये उस सरकार ने एक नया ओहदा क़ायम किया जिसका नाम 'सरकारी ख़ूबसूरती का अफ़सर' रखा। इस अफ़सर का काम यह रखा गया कि वह घूम-घूम कर ख़ूब-सूरती की तलाश करे और ख़ूबसूरती और बदसूरती के झगड़ों पर अख़बारों में क़िस्से छपवाये। जिस दिन हिंदुस्तान में कोहकाफ़ी सरकार का यह हुक्मनामा पहुँचा, उस दिन संग्रामसिंह के दल वाले बड़े ख़ुश हुये और उन्होंने सोचा कि चलो सिर से बला टली। उसी दिन एक बड़ी दावत का इन्तज़ाम किया गया जिसमें अब्दुल मजीद को विदाई दी गई कि वह दुनिया में ख़ूबसूरती लाने के लिये देस-बिदेस घूमे और सारी दुनिया से बदसूरती मिटाने के ख़याल से आंदो-लन की मदद करे।

ऐ मेरी भठियारिन ! इस दावत में संग्रामसिंह ने दीना नाथ को एकदम काट दिया और उसको शामिल होने के लिये भी नहीं बुलाया। उस दावत में

संग्रामसिंह ने अब्दुल मजीद को बहुत समझाया और उससे एक समझौते पर दस्तख़त करवाये जिसमें दीनानाथ को आंदोलन से हटा देने के बारे में एक फ़रमान था। जब अब्दुल मजीद दावत खाकर समझौते पर दस्तख़त कर रहा था तब दीनानाथ अपने माशूका की जुदाई सोच-सोच कर अपने कमरे में आठ-आठ आँसू बहा रहा था।

ऐ मेरे दोस्त! तूने यह न समझा होगा कि अब्दुल मजीद ने क्यों दीनानाथ के ख़िलाफ़ ऐसी हरकत की। बात यह थी कि उसे अपनी गद्दी से अलग रह कर इतनी तकलीफ़ हुई थी कि दुबारा गद्दी पाते ही उसका दिमाग़ एक दम ख़राब हो गया। उसने हर तरह से अपने आपको क़ाबिल साबित करना चाहा। चूँकि दीनानाथ को सब नापसन्द करते थे इसलिये उसने सबकी ख़ैर-ख़्वाही लूटने के लिये दीनानाथ के ही ख़िलाफ़ फ़रमान निकाला। उसने कहा कि—

'दीनानाथ नाम का आदमी ख़ूबसूरती-पसन्द आदमियों की जमात से बाहर किया जाता है क्योंकि न तो वह ख़ुद ख़ूबसूरत है और न उसके ख्याल ही ख़ूबसूरत हैं। वह पुराने ढंग का आदमी है और नई फ़िज़ा और नये फ़तवों की ख़िलाफ़त करता है। इसलिये कोहकाफ़ी-सरकार से इस आदमी को मुअत्तल करने की सिफ़ारिश की जाती है।'

कोहकाफ़ी सरकार ने इस रपट पर दीनानाथ को 'सुन्दरता-आंदोलन' से हटा दिया। ऐ मेरी सितारा ख़ालू! इस तरह तू देखती जा कि आशिक दीनानाथ की कैसी गत इस बेवफ़ा माशूक ने बनाई।

इधर तो यह गुल खिला, और उधर अब्दुल मजीद को अपने दौरे के सिलसिले में कोहकाफ़ का सफ़र करना पड़ा। जाते वक्त अब्दुल मजीद ने दीनानाथ से मुलाकात भी नहीं की। उसे हवाई जहाज के अड्डे तक पहुँचाने के लिये दल के बहुत से लोग आये। ऐ ख़ालू! इश्क़ का रोग बुरा होता है, सो दीनानाथ भी यह सुनकर हवाई जहाज के अड्डे तक आया और जब तक हवाई जहाज आसमान में दिखाई देता रहा तब तक वह जमीन से बराबर रूमाल हिलाता रहा। आखिरकार उसी रूमाल से अपनी नम आँखें पोंछता हुआ वह घर चला आया।

दीनानाथ चूँकि बराबर रंज से ग़मगीन रहता था इसलिये उसके बाप साहूकार रामगोपाल ने अपने लड़के के लिये एक किताब-कापी की दूकान खोलवा

दी, ताकि वह ब्यौपार भी करता रहे और पढ़-लिख कर अपना जी भी बहलाता रहे।

इस तरह ओ सितारा भठियारिन ! तू देख कि न सिर्फ उल्फ़त का अंजाम बुरा हो सकता है बल्कि माशूक की बेवफ़ाई से आशिक को हर जगह नीचा भी देखना पड़ता है।

ओ मेरे साग़ौनी उल्लू ! उधर इस तरह मोहम्मद पीर ने यह कहानी सितारा भठियारिन को सुनाई और अपनी गर्दन छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ और इधर इस कहानी से यह बात तेरे सामने साफ़ हो गई होगी कि जो अपनी खूबसूरती के पैमाने और कसौटी छोड़ कर इस तरह की गुटबन्दी और राजनीति के झगड़ों में जा उलझता है वह बेमौत मारा जाता है और कहीं का भी नहीं रह जाता। एक ही काम में आदमी चित्त लगा कर चले तभी उसका कल्यान हो सकता है।"

कबूतर ने इस तरह संक्षेप में अपनी बात की पुष्टि के लिये कहानी सुनाई और सुना कर काठ के उल्लू की तरफ़, जैसे उसकी राय जानने के लिये, उसने अपनी आँखें नचाकर देखा।

●

कहानी का अँखुवा

कबूतर की बातें सुनकर काठ का उल्लू एकदम चुप हो गया। जैसे वह किसी गम्भीर चिन्तन में पड़ गया। उसके इस तरह एकाएक चुप हो जाने पर कबूतर से न रहा गया।

कबूतर ने अपनी आवाज़ को थोड़ा गम्भीर बनाते हुए पूछा कि—

'ए मेरे बुजुर्ग काठ के उल्लू! भला तू इस तरह चुप होकर क्या सोच रहा है? क्या मेरी कही बात ने तेरे दिल को अपनी तरफ नहीं खींचा?'

काठ के उल्लू ने थोड़ी देर चुप रह कर कहा कि—

'ए मेहमान दोस्त! आज की इस रात के बाद जाने कहाँ तू होगा और जाने कहाँ मैं रहूँगा। हो सकता है कि इसके बाद हम दोनों की कभी भी मुलाकात न हो। इसलिए मैं ऐसी कोई बात नहीं कहना चाहता हूँ जिससे तेरे दिल को टेस लगे लेकिन यह भी तय है मेरा मन जो कुछ कहने को उमड़ रहा है वह अगर मैं न कहूँ तो मैं अपने साथ साफ बेईमानी कर बैठूँगा। यही फ़िक्र है जो मुझको खाए डाल रही है।'

कबूतर ने कहा कि—

'ए भाई सच है कि सच्चा मेजबान अपने घर आए मेहमान का दिल किसी तरह नहीं दुखाता! लेकिन मैं तुझे पूरी तरह से विश्वास दिलाता हूँ कि मैं तेरी बातों से तनिक भी दुखी न होऊँगा बल्कि मैं यह समझूँगा कि तूने दो छिन को मिले हुए परदेसी को अपना ही समझा और अपने मन की कोई बात कहने से नहीं हिचका। यह भी तू सच मान कि मुझे तेरी बातों का चाहे जितना विरोध या चाहे जितनी खिलाफ़त करनी पड़े लेकिन मैं तेरी बातों की कद्र करता हूँ और मुझे उनसे किसी न किसी तरह ज़रूर नसीहत मिलती है।

काठ के उल्लू ने कहा कि—

'अगर सचमुच ऐसा ही तू समझता है तो ए भाई, मैं यह कहना चाहता हूँ कि असली चीज़ अक्ल या बुद्धि होती है! जो भगवान की दी हुई इस नियामत को ठीक ढंग से इस्तेमाल नहीं करता वह मेरी ही तरह होकर रह जाता है और लोग उसे उल्टी सीधी कहते हैं। इस चीज़ का जो भी इस्तेमाल करता है वह अपनी सभी बातों में खरा और पक्का उतरता है।'

कबूतर ने कहा कि—

'तूने बात तो बड़े पते की कही है मेरे भाई। लेकिन'...काठ के उल्लू ने चट उसकी बात काटते हुए आगे कहा—

'ए कबूतर ! तुझे अब फिर मैं इसी बात को समझाने के लिए एक दास्तान सुनाता है। याद रख यह मेरी आख़िरी दास्तान होगी। अब तुझे मैं बताता हूँ कि तूने जो यह बात कही कि सिर्फ आदमी एक ही काम कर सकता है यानी चाहे वह राजनीति में घुसे और चाहे कलाबाज़ी या 'कल्चर' के काम धाम करे—सो मैं नहीं मान सकता क्योंकि इसके पीछे एक बड़ा भारी राज़ है !'

दोनों पंछियो की इस तरह बातों ही बातों में सारी रात कटती चली जा रही। अब सवेरा होने में कुछ ही घंटों की देरी थी। आसमान पर एक मरियल सा चाँद अपनी पीली थी पीली रोशनी फैला रहा था। प्रकाश बिल्कुल मद्धिम-सा था जैसे दुनियाँ के घर पर कोई चोर अपनी सर्तक टार्च की रोशनी फेंके ! कभी-कभी पहरे वालों की जोरदार सीटियाँ बजती सुनाई पड़ती थीं। लेकिन इन सब से न तो काठ के उल्लू ने अपने आतिथ्यसत्कार में ही कोई कमी दिखलाई और नहीं कबूतर किस्सा सुनने-सुनाने में पीछे हटा। इसीलिए एक के बाद दूसरा सूत्र बड़ी सरलता के साथ दोनों की चोंचे उठाती रहीं !

कबूतर ने पूछा कि

'भाई काठ के उल्लू' ! यह तो तूने बड़ी रोचक और दिलचस्प बात कही है। ज़रूर कोई ऐसी चीज़ तेरे सामने आयी होगी कि तू मेरी बात को नहीं मान रहा है क्योंकि ए भाई, इतना तो मैं जान गया हूँ कि तू कठहुज्जती नहीं है ! सो ए सागौनी उल्लू, मेहरबानी करके वह भी दास्तान कह डाल।'

काठ के उल्लू ने फिर अपनी बात दोहराते हुए कहा—

'मेरे भूले मेहमान ! यह बात तू गाँठ बाँध ले कि जहाँ आदमी अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करता है तहाँ वह बड़ी आसानी के साथ हर मुहिम पार कर ले जाता है। क्या राजनीति, क्या 'कल्चर बाजी' क्या तेरा 'साहित्य' क्या तेरा 'संगीत' सब कुछ एक साथ चल जाता है जब कि आदमी हर चीज़ की असली जगह की पहिचान रक्खे और उसके साथ ही उस पर अमल करे ! ए कबूतर इसने चक्कर में वही आदमी डूबता है जो इन मामलों में बिल्कुल जानकारी नहीं रखता और राजनीति के धोखे में पड़कर अपना गला अपने ही हाथों घोंट लेता है।'

कबूतर ने फिर उससे प्रार्थना की कि वह उसे वह कहानी सुनाए जिसने उसके मन में ऐसी बात भर दी थी और जिसे सुनकर वह इसी बात पर यकीन कर बैठा है।

काठ के उल्लू ने सहसा अपनी गर्दन घुमाई और कहा कि—

'एक बार ऐसा हुआ कि पंडित रामअधार शर्मा नाम के एक आदमी जो ऊपर से नीचे तक खद्दर धारी लिबास में ढँके हुए थे, मेरे मालिक के बंक में अपना हिसाब खोलने के लिए आए! ए कबूतर! शर्मा जी को कबिताई करनी का शौक था लेकिन उन्हें राजनीति में डँड लगाए बिना चैन नहीं पड़ता था। सो जब वह मेरे मालिक के पास आए तो मेरे मालिक ने उनसे हँसकर कहा कि 'ए पंडित जी भला यह दो नावों पर आपने जो सवरी गाँठी है, वह आपको कहाँ ले जाकर पटकेगी, इसका आपको कुछ इल्म है या नहीं?

लगा ऐसा जैसे शर्मा जी इस तरह के सवाल का जवाब बहुतों को दे चुके थे! इसलिए फ़ौरन ही उन्होंने बताया कि 'नहीं वह इस तरह के फ़न में होशियार हैं और जहाँ जैसा वक्त देखते हैं वैसा ही करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कबिताई के मैदान में राजनीति की और राजनीति के मैदान में कबिताई की बड़ी ज़रूरत पड़ती है।

जब कोई मालिक को पूरी तौर से यकीन नहीं हुआ तो फिर पंडित जी ने मेरे मालिक के सामने एक बात सुनाई जिसमें उन्होंने यह साबित किया कि अक़्ल का इस्तेमाल करनेवालों से सब कुछ निभ जाता है लेकिन बेअक़्लों का वही हाल होता है जो कि चुरई मिसिर का हाल हुआ!

तब मेरे मालिक ने पूछा कि 'ए भाई, यह चुरई मिसिर की क्या कहानी है?

इस पर जो कहानी उन पंडित महाराज मेरे मालिक को सुनाई थी और जिस के ऊपर झूम कर मेरे मालिक ने शर्मा जी का बंक में हिसाब खुलवा लिया था वही कहानी तुझे अब मैं सुनाता हूँ ताकि तुझे मेरी बात की असलियत का पूरा पता चल जाये।

कबूतर को ध्यान में मगन देखकर काठ के उल्लू ने वही कहानी सुनानी शुरू की!

लछमिनियाँ बनिन की दास्तान
उर्फ
अक्ल के कच्चे की कहानी

' ए भाई, ऐसा हुआ कि विचित्र पुरी नगरी में एक बार कहीं से लछमी नाम की एक बनिन आकर बस गई। लछमी, सिर्फ नाम की बनिन थी लेकिन काम वह गाने-बजाने का करती थी और जहाँ उसे बुलाया जाता था, तहाँ वह गाने के लिए जाया करती थी! ए मेरे नौजवान, वह बनिन बला की खूबसूरत थी! उसके हुस्न की चर्चा सारी विचित्रपुरी में हुआ करती थी! जब वह अपने मकान की छत पर चढ़ती थी तो सारा मुहल्ला रौशन हो जाता था और लोग यह समझते थे कि दिन में चाँद निकल आया है या रात में सूरज जगमगा रहा है। उसकी आँखें हरिन की मानिंद खूबसूरत थीं। कमल समझ कर भौरों ने उन आँखों पर जब हमला किया था, तब से ही वह बराबर लाल लाल बनी रहतीं थीं। उसके नागिन जैसे लहराते बाल ऐसे कि जैसे काली घटा आए, उमड़े, गरजे और झूम-झूम जाय। उसकी मुस्कुराती हुई दिलफरेब अदाएँ ऐसी कि जिसको उसकी एक बार कँटीली चितवन छू जाय, वह बेताब हो उठे! ए दोस्त, उसके अंदर उसके 'सरूप' से कई गुना बढ़े चढ़े उसके गुन थे! वह जब किसी भरी महफिल में बरखा की ऋतु में झूम कर गाती तो लोग पानी की झड़ी में भी अपने घरों से भाग-भाग कर उसका गाना सुनने के लिए आते! जैसे-जैसे खटके और मुरकियाँ भगवान ने उसके गले में बिठा दी वह जरा मुश्किल से ही लोगों के अंदर मिलती हैं। ए कबूतर तुझे यकीन न होगा लेकिन बड़े बड़े दिलदीदा संगीत और मौसीकी के जानकार आन कर वहाँ खड़े रहते और उसके घर के सामने सिजदा करके चले जाया करते।

तो ए मेरे भाई रंगीले लक्का कबूतर! अब तू यह देख कि जिस औरत के पास इतने गुन और हुनर थे और जिसके रूप की चर्चा सब जगह चलती थी, वह दरअस्ल थी कैसी! यह तू जान कर बड़ा खुश होगा कि वह कहने को तो गाने का पेशा जरूर करती थी लेकिन वह उसे सच्चे माने में कला के लिए पूजती थी। वह अपने लगन की बड़ी सच्ची और मन की बड़ी नेक थी! जैसा कि औरतों के बारे में हम सभी जानते हैं कि वे भोली और बेवफा होती हैं, वह वैसी मूरख नहीं थी! वह जाहिल नहीं थी और जमाने की नब्ज को अच्छी तरह पहिचानती थी!

इसलिए उसने जब यह देखा कि हिन्दोस्तान में विदेसी फिरंगी आकर बड़ा जोर जुलुम ढा रहे हैं तो वह बड़ी नाराज हुई और उसने अपने तन मन को देश के लिए लगाने की बात सोच ली ! अब तू यह देख कि उसने किस तरह से अपने तन मन को देश के लिए लगा दिया और उसका रुतबा कैसे बढ़ा ! लछमी ने जिसे सब लोग मारे दुलार के, लछमिनियाँ कहते थे, सबसे पहिला काम तो यह किया कि उसने अपनी सिलिक की साड़ियों को निकाल बाहर किया और उसकी जगह पर दस्ती कर्घा वाली धोतियाँ पहिनना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे वह अखबार भी पढ़ने लगी ।

लछमिनियाँ अपनी इन बातों से बड़ी जल्दी मशहूर हो चली । अब तक उसके रूप और गुन की ही सब जगह चर्चा होती थी लेकिन अब तो उसके इन लच्छनों की भी चर्चा होने लगी और जहाँ कहीं भी अच्छे गाने के साथ उसका नाम लिया जाता था तहाँ उसके इस देशी रुख की भी अच्छी तरह याद की जाती !

अच्छा भाई ! अब यहाँ से ही तुझे एक ऐसी आदमी का बयान सुनाता हूँ जिसकी वजह से लछमिनियाँ कुछ से कुछ बन कर तैयार हुई ! उसी विचित्र-पुरी में एक नेता रहते थे जिनका नाम था भूषनदत्त ! आज के जमाने में आदमी जिस तरह दाल और रोटी को पहिचानता है उसी तरह नेता को भी पहिचानता है, क्योंकि यह नेता ही है जो उसे हमेशा रोटी दाल का सहारा देते हैं । लेकिन फिर भी मैं तुझे बताता हूँ कि नेताओं की कई किस्में होती हैं और उनके कई दर्जे होते हैं । ए दोस्त, नेताओं के इन दर्जों का पता आसानी से नहीं चल सकता । उसको जानना हो तो जाकर किसी मीटिंग या सभा में उनका असली रूप देख ।

नेताओं में सबसे नीचे दरजे का जो नेता होता है उसका काम है कि वह सड़क पर से चलते लोगों को जबर्दस्ती खींच-खींचकर सभा में बैठाने के लिए ले आवे । ऐसे नेता के ऊपर वह नेता होता है जो कि रंगीन बिल्ले लगाकर सभा में खड़ा होता है, आने-जाने वालों को ठीक से बिठलाता है और लोगों को रस्सी फाँदकर 'माताओं और बहिनों के बैठने को जगह' की ओर जाने से रोकता है । उसके भी ऊपर दर्जे वाला वह नेता कहा गया है, जो भीड़ को फाँसकर बिठाए रखने के लिए तब तक बोलता रहता है जब तक असली वाला नेता, जो किसी सेठ के यहाँ चाय पीने गया रहा होता है वापस मीटिंग में आ नहीं जाता ! इस नेता के ऊपर वह शख्स अपने को नेता गिनता है जो असली नेता के साथ-साथ उसी सेठ के यहाँ जलपान करने जाता है । वो असली नेता

के साथ-साथ माला पहिनता है; और वक्त ज़रूरत सभा की प्रेसीडेन्टी भी करने को तैयार रहता है ! ए कबूतर, इन सबके ऊपर वह असली नेता होता है जिसके आने-जाने उटने-बैठने, खड़े होने, बोलने, कूदने, हाथ जोड़ने तक पर भी जनता 'जय जयकार के गगन भेदी नारे' लगाती है और वह शोर बरपा करती है कि भले चंगे आदमी अपने घरों में सो भी नहीं सकते ! यही असली नेता, फूल की नहीं, बल्कि सल्में सितारे वाली, एक माला पहिनता है, तालियाँ बजवाता है फिर खड़े होकर हाथ जोड़कर, एक नाटक सा रचता हुआ लोगों के कान तीन चार घंटे तक बराबर पकड़े रहता है।

यह हमारा भूषनदत्त तीसरे किस्म का नेता था—यानी वह हर मीटिंग में सभा शुरू होने के पहिले देर तक बोलता था—लेकिन ऐसे उसमें नेतागिरी के पहिले से और दूसरे गुण भी मौजूद थे ! भूषनदत्त को ऐसे कामों में बड़ी दिल-चस्पी थी। वह घंटों इस तरह के लेक्चर देने में कमाल हासिल कर चुका था। भूषनदत्त ने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली थी। बाल भी कुछ बढ़ गए थे। खद्दर के कुरते पर वह पतलून किस्म का पैजामा पहिनता था। हाथों में चमड़े का लट-कौउवा थैला रखता था। भूषनदत्त को सारे शहर की रत्ती-रत्ती खबर पता रहती थी। वह था भी शहरी नेता। किस मुहल्ले में कूड़ा उठाकर मेहतर नहीं ले गया, इससे लेकर किस मुहल्ले में म्युनिस्पिलटी की तरफ़ से पानी का इंतिज़ाम नहीं है, वह सब कुछ अपनी पाकिट में रखता था। नतीजा यह था कि वह शुरू होने वाली तक़रीरों में बराबर इसी बात ज़िक्र कर देता था और लोग अपनी जगह पर ज्यूँ-के-त्यूँ बैठे रह जाते थे ! नेता भूषनदत्त को हिन्दी में भी बोलने का बड़ा शौक था, और वह इसके लिए बड़ी कोशिशें करता था कि सभी नेता हिंदी में बोलें। लछमिनियाँ भी चूँकि शहर की एक ख़ास आदमी थी इसलिए नेता भूषनदत्त को अपनी नेतागिरी की पूरी जानकारी रखने के लिए उसके बारे में भी जानकारी हासिल करनी पड़ी।

ए मेरे घुमंतू कबूतर, शायद तुझे पता हो कि न हो लेकिन सुन कि मेरे भाई, एक बार हिन्दोस्तान में मशहूर बंगाले का अकाल आन पड़ा जिसकी वजह से सारा मुल्क एक परेशानी के आलम में डूब गया। इस कदर बंगाली उस अकाल में मरे कि सारे देश में एक बेचैनी बरपा हो गई ! सब ने एक सुर में फिरंगियों को थुड़ी-थुड़ी करना शुरू कर दिया। लछमिनियाँ तो ज़माने की नब्ज़ अच्छी तरह जानती थी ! उसने जो यह क़िस्सा सुना तो अपने उस्ताद से एक

ऐसी गज़ल कहलवाई जिसमें बंगाले के अकाल का ज़िक्र था और घुमा फिराकर फिरंगी को थुड़ी कहा गया था। अब जो यह गज़ल महफिल में उतरी तो लोग भुनगे की तरह पटापट झूमकर गिरने लगे। लछमिनियाँ ने गाया भी अच्छा और शैर भी बढ़िया कहे। बस फिर क्या था, धूम मच गई। भाई कबूतर! ख़ालिस गाने से वह रौनक नहीं पैदा होती जब तक कि उसमें वाजिब शैर भी न कहे जायँ। नेता भूषनदत्त ने जो लछमिनियाँ का यह जौहर देखा तो उसने अब चूकना ठीक न समझा। भूषनदत्त ने एक 'उद्धार-सभा' कायम की उसमें इस तरह की 'माताओं और बहनों' को उठा कर सेवा के लिए लगाये जाने का प्रोग्राम बना। धनी मानी लोगों ने पैसे दिए और नेता भूषनदत्त ने लछमिनियाँ को इस 'उद्धार-सभा' की लीडरी सौंपी।

अब तू देख मेरे मेहमान! कि जब इस तरह के किस्से चल रहे थे तभी लछमिनियाँ किसी महफ़िल के चक्कर में इन्दरपूर गई जहाँ उसकी चुल्हई मिसिर से भेंट हुई। ए भाई कहा भी गया है कि

आप न आवै ताहि पै
ताहि जहाँ लै जाय।

तो अब तू इस चुल्हई मिसिर का बयान सुन।

चुल्हई मिसिर इन्दरपूर के रहनेवाले मेटुका मिसिर का लड़का था। मेटुका मिसिर बड़े सीधे सादे आदमी थे और वह अपनी रोजी किसी तरह चार पुश्त से सत्यनारायन बाबा की कथा बाँच बाँच कर चलाया करते थे। मेटुका मिसिर की पत्नी बड़े अच्छे स्वभाव की थीं और उनके सहारे सारी गिरिस्थी धीरे धीरे ढुलकती चली जा रही थी। यह भी बात सुनी जाती थी कि मेटुका के बाप और चुल्हई के बाबा हरदी मिसिर इन्दरपूर के बड़े नामी पंडितों में से थे और पास पड़ोस के दस गाँव वाले उनसे बहस या शास्त्रार्थ करने की हिम्मत नहीं रखते थे। हरदी मिसिर का गला इतना जोरदार था कि वह जहाँ कथा कहने के लिए बैठते तहाँ पास पड़ोस के बीस पचीस कोस से लोग इकट्ठा हो जाया करते और उसके तीस-चालीस कोस के भीतर के पंडित दुम दबाकर भाग खड़े होते रँगीले। इन्दरपूर में यह बात बड़ी मशहूर थी कि हरदी मिसिर के यहाँ एक सुखिया चमारिन काम करने के लिए आती थी। उनकी सेवा टहल से खुश होकर अधबूढ़े हरदी मिसिर ने उसको रख लिया और कहते हैं कि बुढ़ापे की

उम्र में मेटुका का जन्म उसी से हुआ। इस बात का सबूत देने वाला अब कोई जिन्दा नहीं था इसलिए यह सिर्फ़ अफ़वाह होकर रह गई थी। हाँ, एक बात जो अलबत्ता लोगों को देखने में आई, वह यह थी कि हरदी मिसिर जैसे धुरंधर पंडित का लड़का मेटुका एकदम निकम्मा साबित हुआ। मेटुका बस सत्यनारायन बाबा की कथा ही बाँधना जानते थे, बाकी सारी की सारी हरदी मिसिर की पोथियाँ बस्ते में बँधी धरी रह गईं। हरदी मिसिर धाक की वजह से मेटुका के जजमानों में कोई फर्क नहीं आया और वह आसानी से अपना काम चलाते रहे।

इन्हीं मेटुका के साहजादे थे चुल्हई मिसिर। चुल्हई का जन्म जब हुआ तब मेटुका बैठे हुए चूल्हा फूँक रहे थे! इसीलिए उन्होंने बड़ी मुहब्बत से इस लड़के का नाम चुल्हई रख दिया! चुल्हई नाम रखने की एक यह भी वजह थी कि वह जितने लड़कों के अच्छे नाम रखते थे, उनमें से एक भी जिन्दा नहीं रहता था। इसीलिए अबकी घुरहू, फेंकन, दुखी, के नामो की तरह इसका नाम चुल्हई रख दिया। चुल्हई अपने बचपन से ही यह दिखाता जा रहा था कि आगे चल कर वह किस तरह का आदमी बनेगा। चुल्हई को कपड़े पहिनने का बड़ा शौक था। इन्दरपूर कसबे में अगर सबसे अच्छे और शोख रंग के कपड़े किसी के पास थे तो वह उसी के पास थे। उस कसबे में चुल्हई की शौकीनी वाले सामान मसलन तेल कुलेल कंघा शीशा साबुन और इत्र, वैगरह नहीं मिलते थे इसलिए वह अपने दोस्त की साइकिल पर चढ़ कर चुपचाप शहर से ख़रीद लाता था।

मेटुका को धीरे-धीरे अपने सुपुत्र की हरकतों का पता चलता रहा! वह इससे बड़े नाराज़ रहते थे। कभी-कभी मारपीट कर बचपन में पढ़ने की तरफ बहुत मन लगाने की कोशिश की लेकिन जब मेटुका ने यह देखा कि अब यह चुल्हई उनके बापपने की नाक भी कटा देगा तो वह मन मार कर बैठ गए और कहना सुनना बन्द कर दिया। चुल्हई को यह जानकर और भी आनन्द मिला!

एकाएक चुल्हई को कस्बे के अगंद पहलवान ने अपनी तरफ़ खींचा। वह रोज़ उनके अखाड़े में जाकर कुश्ती लड़ता और डंड मारता इस तरह वह इस बात की पूरी कोशिश करता कि उसका बदन बढ़िया तैयार हो जाय। अंगद पहलवान ने उसे कुश्ती के साथ ही मगन रहने के लिए भाँग की एक गोली चढ़ाने का एक नुस्ख़ा बताया। नतीजा यह हुआ कि भाँग की इस गोली के नाम पर इसने रोज़ाना अपना दिमाग बेचना शुरू कर दिया। अगंद पहलवान के अखाड़े में इसकी दोस्ती रामबरन पहलवान से हुई जिसे जोड़ लड़ने के साथ

साथ तबला बजाने का भी गहरा शौक था ! चुल्हई को उसकी दोस्ती ने तबले में भी शौक पैदा कराया।

तबले की जोड़ी खरीदने के लिए बाप से रुपया माँगने की हिम्मत चुल्हई को न पड़ा। एक दिन अपनी माँ की सलूके वाली जेब से इसने तीस रुपए ग़ायब किये और एक कलकतिया जोड़ी खरीदी जिस पर बढ़िया चटाई का काम किया हुआ था। मेटुका जब तक जिंदा रहे तब तक वह जोड़ी रामबरन पहलवान के यहाँ रक्खी रही। चुल्हई की किस्मत तेज़ थी। ज्यादा दिन जोड़ी बाहर न रखनी पड़ी। मेटुका तेज़ बुखार में चल बसे। इसी तरह साल छः महीने का अँतरा देकर मेटुका की पत्नी ने भी वही रास्ता अख्तियार किया और चुल्हई अब वैसे ही छुट्टा हो गया जिसके 'आगे नाथ न पीछे पगहा' बताया गया है।

चुल्हई को तबले की लगन लग गई ! सो ऐसा रातो दिन का शौक चढ़ा कि सैकड़ों बोल, परन, कायदे, मुखड़े, रेला, उठान, पेशकारा, चक्रदार बोल, गद्दी के बोल, उसके हाथ आ लगे। उसकी तैयारी का हाल सुनकर बेचारा रामबरन भी सकपका कर उसका बजाना ही देखता रह जाता था। ऐसी ही तैयारी पर जब उसका हाथ था, तो एक दिन उस इंदरपुरी नगरी में लछमिनियाँ का आना हुआ ! कहते हैं कि संजोग की बात किसी को नहीं मालूम। लछमिनियाँ इन्दरपूर की महफ़िल के लिए अपना तबलची लेकर आई थी लेकिन वह रास्ते में आते-आते ही बीमार पड़ गया। सो वहाँ की महफ़िल में लछमिनियाँ के साथ चुल्हई मिसिर ने तबला बजाया। और ऐसा बजाया, ऐसा बजाया, कि लछमी झूम उठी और उसने कहा कि—

'ए चुल्हई ! तू चल और चल कर मेरे साथ बिचित्रपुरी में रह, जहाँ तेरा सारा ज़िम्मा मैं उठाने का वादा करती हूँ और तुझे वहाँ पर किसी तरह की कोई रोक-टोक न रहेगी !'

चुल्हई को बाँधने वाला कोई था ही नहीं। अपने घर में दूसरे को टिकाया, अपना बकुचा बाँधा और चुपचाप लछमिनिया के साथ हो रहे !

बिचित्रपुरी नगरी में आकर चुल्हई की किस्मत तेज़ हो गई। लछमिनियाँ चूँकि मशहूर थी ही इसीलिए यह भी अपने आप मशहूर होने लगा। इसी बीच उस नगरी में रामा फिलिम कम्पनी खुली जिसमें लछमिनियाँ ने एक

दिलकश गाना गाया। इस तरह वह 'सनीमा वाली' कहलाने लगी। ए भाई, सनीमा वाली तो बड़ी जल्दी आजकल जनता का मन मोहती हैं।

अब तो लछमिनिया का राह चलना मुश्किल हो गया। जिधर से वह निकलती दस आदमी उसे घेर लेते और उससे काग़ज़ों पर दस्तख़त कराने लगते! ए भाई, यह रोग भी बड़ा बुरा रोग होता है! जब वह रेलगाड़ी से सफ़र करती तो आस-पास के मन चले जवान रेलगाड़ी की खिड़की का शीशा तोड़-डालते ताकि लछमिनिया का सरुप देख सकें। ए कबूतर दोस्त! चुल्हई तो हरवक्त इसके साथ रहता था और वह इस तरह खिड़की तोड़ने वालों पर बड़ा नाराज़ होता था! लछमिनियाँ अपने हर तरह के आराम के लिए चुल्हई को साथ रखती थी लेकिन लछमिनियाँ को जितना मानदान मिलता था, उतना चुल्हई को कभी नहीं मिलता था! इसलिए चुल्हई को यह सब बहुत खलता था!

चुल्हई अपने मन में यह बराबर सोंचा करता था कि अगर वह लछमी के साथ बराबर तबला न बजाता रहता तो वह कभी इतना न जमती! लेकिन उसे ताव इसलिए आता था कि लोग इस राज़ को जानकर भी क्यों नहीं सारी पूजा इसी चुल्हई को चढ़ाते? उधर लछमिनियाँ तमाम लोगों के दिल की रानी बनी जा रही थी और उसको कालिज स्कूल के लड़के हरवक्त घेरे रहते थे। चुल्हई अपनी ताकत और अधिकार का इस्तेमाल ऐसे वक्तों पर बेतकल्लुफ़ी से किया करता था, यानी वह इन सबको बड़ी आसानी से भगा देता था और जहाँ तक हो पाता था, इन सबको लछमी से मिलने नहीं देता था!

ए प्यारे लगन से सुनने वाले! अब तू उस नेता भूषनदत्त का बयान सुन! नेता ने लछमिनियाँ को पूरी तरह से राजनीतिक सभाओं में उछालने की कोशिश की। हर जगह वह इसे आगे आगे ले चलता था और कहता था कि देश के काम में सबको रहना चाहिए! औरत की जात! क्या करती? मजबूर हो गई धीरे धीरे यह हुआ कि जब किसी नेता का कोई भाषण या लेक्चर होने को होता था तो वहाँ पहिले लछमिनियाँ का गाना होता था। वह-वहाँ 'बंगाले का अकाल' वाली गज़ल सुनाती और-सारा मजमा ठक्क होकर सुना करता। अपनी शोहरत बढ़ते देख सबको मज़ा आता है सो लछमिनियाँ को भी आया। उसने एक ऐसी-ठुमरी तैयार की जिसका यह मतलब निकलता था कि —

'ए रसिया विदेसी फिरगी!
हमारे आँगन से चुपचाप निकल जा!

लपक झपक तूने मोरी कलाई मरोरी
मेरो बंद बंद सब तोरी
मेरी चुरिया टूट गई हैं !
तू जल्दी ही भाग जा
मेरा साजन जाग जायगा तो तुझे कच्चा ही चबा जायगा !
भाग भाग मोरे रसिया फिरंगी !

हुआ यह ठुमरी के गाते ही सारी महफ़िल झूमने लगती और 'इंकिलाब-जिंदाबाद' के नारे लगाने लगती ! होता यह था कि लोग लछमिनियाँ का गाना सुनने के लिए जितनी ज्यादा तादाद में आते थे, उतने और किसी काम के लिए नहीं आते थे। चूँकि लोग गाना सुनकर भागने लगते थे इसलिए नेता ने उसको सबसे आखिर में गवाना शुरू कर दिया था।

ए मेरे दोस्त ! अब तू इस किस्से के बदलते हुए रुख को देख कि लछमिनियाँ को क्या-क्या देखना पड़ा। लोगों के जोर लगाने और गाँधी बाबा की असीस से अपना मुल्क हिन्दुस्तान फिर आजाद हो गया। फिरंगी सचमुच आँगन से निकल भागा ! फिर जो जेलों में भरे जाते थे वह अब ठाठ से जेल भेजने वाली गद्दी पर जा जमे। इस तरह जो मुल्क आज़ाद हुआ तो नेताओं की जितनी किस्में मैंने तुझे बताई थीं, वह सब ताल ठोंक-ठोंक कर आगे आए और अपनी ख़िदमत की कीमत माँगने लगे। बस सारे चक्कर में किसी ने भूले भी लछमिनियाँ को न पूछा। इस बात पर चुल्हई भी बेहद नाराज़ हुआ !

धीरे-धीरे चुल्हई ने लछमिनियाँ को ऊँच नीच समझाना शुरू किया। लछमिनियाँ को भी यह बात बेहद खटकी ! उसे यह अच्छी तरह पता कि था किस तरह जनता को बेवकूफ़ बना कर उसने अपना गाना सुनाने के बहाने नेताओं की चार-चार घण्टे की लम्बी तकरीरें उनके गले के पार उतार दी थीं ! अब आज उसे कोई पूछता भी नहीं !

लछमिनियाँ ने एक रोज़ चुल्हई से शाम के चिराग़ जले के वक्त कहा कि—

'ए भाई चुल्हई ! तू मेरे दिल के दर्द को जानता है। मैं सचमुच बेवकूफ बनाई गई हूँ लेकिन क्या तू सोचता है कि अगर मैं इनसे बदला लेने के लिए चुनाव लड़ूँ तो मैं जीत जाऊँगी ?'

चुल्हई तो यही बात चाहता ही था। उसने उसे हर तरह से जीतने का यकीन दिलाया और घर-घर घूम कर उसने लछमिनियाँ के खड़े होने की ख़बर फैलानी शुरू की! एक दिन उसने एक जबर्दस्त मीटिंग करवाई जिसमें लछ-मिनियाँ ने एक दादरा की बंदिश गाई जिसमें कहा गया था—

मैं जमुना नीर भरन ना जइहौं!
जमुना किनारे बसत है दिल्ली
जहाँ बसैं बेइमान!
मैं जमुना नीर भरन ना जइहौं!
राजा मोरे राज करत हैं
खींचत मोरे प्रान!
मैं जमुना नीर भरन ना जइहौं!
बदलि गे राजा के नयनवा

अब कबूतर! दादरा क्या हुआ कि भीड़ तो वाह वाह और आह-आह करके पटापट लोटने लगी। चुल्हई ने पूछा कि—

'ए पब्लिक! क्या तू लछमिनियाँ को वोट देने को तैयार है?'

सो पब्लिक ने कहा कि 'हाँ हम वोट देने के लिए बिलकुल तैयार हैं!' बस फिर क्या था। चुनाव की तैयारी में लछमिनियाँ लग गई और जगह-जगह महफ़िल और मीटिंगों में यही गाना शुरू कर दिया।

ए मेहमान भाई! बिधिना का बिधान इसी को कह गया है कि लछ-मिनियाँ को चुनाव में मुकाबिला करना पड़ा उसी नेता भूषनदत्त से। भूषनदत्त घर बार बेंचकर चुनाव लड़ा लेकिन औरत से खुदा भी हारता है सो वह भी बुरी तरह हारा। उसकी ज़मानत ज़ब्त हो गई। दाढ़ी पर अस्तुरा चल गया। वह कहीं मुँह दिखाने लायक भी नहीं रह गया। इसी गम में भूषनदत्त ने ज़हर खाकर इस ज़िंदगी से एकदम छुट्टी ले ली।

अब तू यह देख कि दो चार छः दिन में लछमिनियाँ चुनाव जीतकर 'नीर भरन के लिए' अपनी खाली गगरी लेकर 'जमुना किनारे उस दिल्ली में जा पहुँची' 'जहाँ बेइमान बसते' थे! चुल्हई को बड़ी खुशी थी। वह समझता था कि जीत उसी की हुई है। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि भूषनदत्त को इस चुनाव के ज़रिए भगवान ने ऐसा हटा दिया था कि उसकी आँख का काँटा हमेशा के लिए दूर हो गया था!

लछमिनियाँ ने ज़माना देखा था। बड़े-बड़े नेताओं से उसकी एक दिन में दोस्ती होने लगी। उसने चुनाव के बाद एक लम्बी तकरीर ले जाकर पढ़ी जिसमें उसने कहा था कि—

'जनाब साहबान ! साथियो। न तो मैं कोई वैद्य हूँ, न नर्स और न कोई डाक्टर, न मैं कोई लम्बी चौड़ी तकरीर यहाँ फ़रमाने के लिए आई हूँ। हिन्दोस्तान की औरतों को भला लम्बी-लम्बी तकरीरें कहने का वक्त भी कहाँ है ? आज़ाद हिन्दोस्तन में कल्चर-कल्चर का नारा लागनेवालों से मैं यह कहना चाहती हूँ कि आखिर आप इसकी बेहतरी के लिए करना क्या चाहते हैं ? आख़िर उसकी असली कल्चर की परवरिश कैसे होगी ? मैं आपका ध्यान इसकी तरफ खींचना चाहती हूँ कि आखिर आप उसके लिये करना क्या चाहते हैं ? अगर आप भूलते नहीं हैं तो आपको याद होगा कि आपके यहाँ की 'कल्चर' में संगीत एकखास चीज़ है। इसलिये मैं आपसे अपील करती हूँ कि संगीत की बेहतरी के लिये आप एक खास कमेटी बनायें जो इस बात पर गौर करे कि महफ़िली गजलों का कैसे सुधार किया जाये कि वह हमारे नौजवानों का मन मोह ले। क्योंकि जबतक महफ़िलो—गजलों, दादरों और ठुमारियों में इसलाह नहीं की जाती तब तक अपने देश के नौजवानों का भविष्य नहीं बन सकता। ऐसी देश प्रेम की ठुमरियों का प्रचार हर आम और खास जगहों में किया-जाना चाहिये जिससे हर एक के लहू में उसके देश का प्रेम हिलोर मारने लगे। इसके बाद आप देखेंगे कि जब कभी हमारे आपके ऊपर मुसीबत आयेगी तो ये ठुमरियाँ रटने वाले नवजवान एक मिनट में देश के लिये मर मिटने के लिये जिस तरह तैयार हो जायेंगे ठीक उसी तरह जैसे रामायण महाभारत रट कर हमारे पुरखे मर मिटने के लिये तैयार रहते थे। ये ठुमरियाँ और ग़ज़लें हिन्दुस्तान के नौजवानों की दिलों की धड़कने हैं और सरकार को इन नौजवान धड़कनों का ख्याल करना चाहिये।'

ऐ मेरे सलोने कबूतर ! लछमिनियाँ को अपना काम अच्छी तरह से अदा करना आता था। जब उसने अपनी यह तकरीर एक नाटक के साथ अदा की तो सारी महफिल में सकतें का आलम छा गया। ओहदेदार नेताओं ने चाहे उसकी बात मानी या नमानी हो लेकिन उसकी ज़ुबान के वह कायल हो गये और लछमिनियाँ उनकी दोस्त हो गई।

नेताओं के दोस्त होते ही लछमिनियाँ ने अपने रिश्तेदारों को बुलवाकर

हर तरफ नौकरी दिलवानी शुरू की। ये रिश्तेदार और जान पहचानी बिना चुल्हई मिसिर से मिले घर के अन्दर नहीं जाने पाते थे। भीतर जाने का टिकट मिसिर के ही पास था। चुल्हई को रिश्तेदारों की यह भीड़ तनिक भी न सुहाती थी। उसके मन में बार बार यह आता था कि मेहनत उसने की थी लेकिन मज़ा काटने वाले दूसरे पैदा हो गये हैं। इसलिये उसको बड़ा खलता था। ऐ कबूतर! छोटा आदमी हमेशा छोटी बातों का ही ख्याल करता है!

चुल्हई मिसिर ने इस बीच कई बार कोशिश की कि वह कहीं से चुनाव लड़ जायें लेकिन ज़मानत ज़ब्त होने के डर से हिम्मत नहीं पड़ी। उसने सोचा कि चुनाव लड़कर अपनी इज्जत गँवाने से अच्छा तो यह है कि लछमिनियाँ से कहकर एक बढ़िया नौकरी हासिल की जाये और सारी जिन्दगी ऐश से काटी जाये। यही सब सोचते हुये उसने एक दिन हिम्मत बाँधकर लछमिनियाँ से कहा कि—

'ऐ लछमिनियाँ! मैंने जो तेरी इतनी खिदमत की है उसके बदले में मुझे कोई सरकारी गाने बजाने की नौकरी दिलवा दे जिसके ज़रिये मुझे महीने-महीने हजार बारह सौ की आमदनी हो जाया करे और मैं अपना हुनर किसी तरह से पालपोस सकूँ।'

लछमिनियाँ को चुल्हई की हिम्मत देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने उसको झिड़कते हुये कहा कि—

'ऐ बदजात चुल्हई। जब कि मैंने तेरे खाने-पीने का ठेका ले रक्खा है, तब तू मेरे पास से अलग हट कर सरकारी नौकरी की बात कैसे सोचता है? तुझे शर्म आनी चाहिये और नौकरी करने के पहले चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये।'

लछमिनियाँ की झिड़क सुनकर चुल्हई बहुत गमगीन हुआ। उसने यह समझ लिया कि अब उसकी किस्मत लछमिनियाँ के साथ बँध गई है। लछमिनियाँ अपने चलते चुल्हई को कभी नौकरी न पाने देगी। चुल्हई मिसिर ने यह सोचलिया कि लछमिनियाँ यह सोचती होगी कि जब चुल्हई मेरे पास से निकल कर दूसरे नौकरी करने लगेगा तो वह मेरे काम न आयेगा। इसलिये वह यह नहीं चाहती कि चुल्हई जैसा काम आने वाला आदमी उससे दूर हो जाय। लछमिनियाँ के इस मतलबी रूख पर उसे बहुत ताव आया और उसने तै किया कि ऐसी मतलबी औरत का साथ छोड़ देना ही अच्छा है। इस तरह

एक दिन किसी बात पर झगड़ कर चुल्हई मिसिर ने लछमिनियाँ का साथ छोड़ दिया और चुपचाप विचित्र पुरी वापस चला आया।

चुल्हई के ताव का वारपार न था। उसने लछमिनियाँ के बारे में उट-पटांग बकना शुरू कर दिया। उसने यह कहा कि वह औरत इसे अपना अर्दली बना कर रखना चाहती थी और उसके साथ रहने पर धीरे-धीरे उसके हुनर का खातमा हो रहा था। ऐ भाई! जैसा कि तुझे बता चुका हूँ आदमी पर जब होनी का चक्कर घूमता है तो वह यह भूल जाता है कि उसे क्या कहना चाहिये और क्या न कहना चाहिये। चुल्हई की भंग जारी थी। भंग की मौज में उसने एक दिन यहाँ तक कह दिया कि दर असल लछमिनियाँ और चुल्हई की कभी नहीं पटी और पट भी नहीं सकती क्योंकि वह औरत कसरत को बुरी चीज समझती थी और चुल्हई के लाख कहने पर भी उसने दंड मुगदर करने से इन्कार कर दिया था।

चुल्हई की इस तरह की बातें सुनकर लोगों ने अजीब रुख दिखाया। उससे सब लोग पहले से ही नाखुश थे। जब उसने इस तरह की बाते करनी शुरू कीं तो लोगों के बीच में उसकी थुड़ी मच गई। विचित्रपुरी में चुल्हई कहीं भी न बुलाया जाता। चुल्हई का हुनर मिटने लगा। किसी ने यह न पूछा कि अब लछमिनियाँ बिना चुल्हई मिसिर के तबले के, कैसा गाना गाती है? लछमिनियाँ लछमी ही बनी रही और चुल्हई मिसिर बन कर बिगड़ गये।

सो ऐ मेरे आसमानी कबूतर! इस तरह पंडित शर्मा ने मेरे मालिक को यह किस्सा सुनाया और उसको अपनी बात मनवाई। लेकिन ऐ भाई! यह बात तू देखकर मान ही गया होगा कि सच बात तो यह है कि आदमी की वल्दियत, उसके माँ बाप, उस पर बेहद असर डालते हैं। अगर माँ और बाप लायक होते हैं तो बेटा भी लायक निकलता है और अगर कहीं माँ बाप नालायक साबित हुये तो वही होता है जैसा कि मेढुका मिसिर के लड़के इस चुल्हई मिसिर का हाल हुआ'।

बुड्ढा काठ का उल्लू अपनी दास्तान खत्म करके धीरे से खाँसने लगा।

कबूतर ने उड़ती-उड़ती आँखों से रोशनदान के बाहर देखा। आसमान में रहने वाले पंछी ने पहचान लिया कि भोर होने में बहुत देर नहीं है और अब पौ फूटने ही वाली है।

सुबह की मस्तानी हवा भी चलने लगी थी।

●

कहानी का तानाबाना

कबूतर ने कहा कि—

ए मेरे मेज़बान ! यह सच है कि तू अपनी बात को पूरी तरह साबित करने में हर तरह से काबिल है और यह भी सच है कि तेरे पास दास्तानों की कमी नहीं है। लेकिन मैं तुझसे यह कहना चाहता हूँ कि मेरे पास भी इस तरह के किस्सों की कमी नहीं है और मैंने भी अपनी राय जो बनाई है वह इसी तरह से ज़िंदगी देख-देख कर ही बनाई है। लेकिन हाँ, मैं तुझसे एक बात जरूर कहता अगर कि मुझे अभी चल न देना होता !

काठ के उल्लू ने अपने मेहमान को समझाते हुए बताया कि वह उसे जब तक ठंड कम नहीं हो जाती, तब तक बाहर जाने देने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए उसे वह अभी जाने न देगा। काठ के उल्लू ने उससे पूछा कि वह कौन सी बात है जो उसके मन पर आन बैठी है और जिसे वह कहना चाहता है।

कबूतर उड़कर रोशनदान तक गया। बाहर की सर्दी देखकर उसका मन सचमुच काँप उठा। बाहर जाने की हिम्मत न पड़ी। फिर वह वापस आतशदान पर लौट आया और आकर अपने दोस्त उल्लू के पास आ पहुँचा। कबूतर बोला कि—

'अच्छा मेरे भाई ! चूँकि अभी पूरी तरह से सबेरा होने में देर है और मुझे तुझसे बेहद मुहब्बत भी हो गई है इसलिए मैं तुझे यह बात बताए देता हूँ कि तूने जो यह बताया है कि नालायक़ बाप के बेटे नालायक और लायक बाप के बेटे लायक़ होते हैं सो ऐसी बात नहीं है। यह एकदम गलत है।'

काठ के उल्लू को जैसे अंगारा छू गया है। उसे लगा कि कबूतर कोई बड़ी अजीब बात कह रहा है। चट बोला कि—

'ए मेहमान ! अपने बुजुर्गों के मुँह से सुनी हुई और इतनी आज़माई हुई पुरानी बात को आज तू किस मुँह से गलत साबित करने पर तुला हुआ है ?'

कबूतर ने कहा कि—

'ए भाई तू घबरा मत। बुजुर्गों के लिये मेरे मन में पूरी इज्जत है लेकिन जैसा कि मैं कह चुका हूँ मेरी बातों के पीछे हमेशा कोई न कोई सबूत रहता है। अगर मैं अपनी बातों को इस तरह न साबित करूँ तो मेरी बात तू ही

क्या, कोई भी मानने से इन्कार कर दे। ए मेरे खूबसूरत उल्लू! एक अक्ल को छोड़कर सिरजनहार ने तुझे क्या नहीं दिया ? लेकिन फिर भी तू बातों को पूरी तरह से समझ लेता है और उनमें दिलचस्पी रखता है इसलिये तुझे वह कहानी सुनाता हूँ जिससे तुझे यह पता चल जायगा कि मेरी बात झूठ नहीं है। ऐसा ही भरम एक बार सुरेमन चितेरे को हुआ था जिसे सोना कंजड़िन ने दूर किया था।'

उल्लू ने पूछा कि—

'ए मेहमान यह सुरेमन चितेरा कौन था और इसे कैसे भरम हुआ ? और मेरे दोस्त तू यह भी बता कि सोना कंजड़िन ने उस भरम को कैसे दूर किया ?'

कबूतर ने इधर-उधर, जैसे थकान मिटाने के लिए अपनी गर्दन घुमाई।

काठ का उल्लू बगुला भगत की तरह ध्यान लगाकर बैठ गया।

कबूतर ने कहना शुरू किया कि—

'ए मुर्दा लकड़ी की जान! अगर तू भूल नहीं गया होगा तो अभी-अभी तुझे मैं खालिकगंज के बटेरबाज़ मुहम्मद पीर की कहानी भी सुना चुका हूँ। ऐ बुज़ुर्ग उल्लू! उसी खालिक गंज शहर में सुरेमन नाम का नामी एक चितेरा हुआ जो तस्वीर बनाने के हुनर की वजह से बड़ा मशहूर हुआ। यह सुरेमन चितेरा तरह बेतरह की तस्वीरें बनाकर दिल को लुभा लेने के फ़न में बड़ा उस्ताद था। सो ऐसा हुआ कि उसी खालिक गंज नाम के शहर से थोड़ी ही दूर पर कंजड़ों की एक बस्ती थी जहाँ सोना नाम की एक औरत बसती थी। सोना कंजड़ी अपनी जवानी में सचमुच सोना रह चुकी थी और वह बहुत दुनिया-देखी हुई औरत मानी जाती थी। सोना के एक लड़की हुई जिसका बाप, सोना के ही बक़ौल, रंगून भाग गया था और लौट कर नहीं आया। सोना ने उस लड़की का नाम मूरत रखा। मूरत रूप रंग में अपनी माँ से कम न थी। पूरी तरह जवानी आने के पहले ही वह नौजवानों का मन अपनी ओर खींचने लगी। इस तरह की खींचातानी में एक दिन किस्मत के मारे सुरेमन चितेरे की निगाह इस लौंडिया पर पड़ी। ऐ उल्लू! चितेरे की निगाह बड़ी पैनी होती है सो इस चितेरे ने एक ही निगाह में उसकी खूबसूरती परख ली और उसके इश्क के जाल में बेइन्तिहा फँस गया। मूरत ने भी सुरेमन की मोटी जेब देखकर ऐसा जाल फेंका कि उसमें इस जैसी मछलियाँ क्या, बड़े-बड़े मगरमच्छ फँस जाते।

मूरत ने सुरेमन से अपनी रब्त-जब्त बढ़ाई और उसके घर में अपनी पैठ कर ली। धीरे-धीरे नतीजा यह हुआ कि सुरेमन मूरत पर दिलोजान से आशिक होकर बदहवास हो गया और आहें भर कर कहने लगा कि 'ऐ जानेमन! अगर तू न मिली तो जान तज दूँगा।' ऐ मेरे बुजुर्गवार! एक दिन मूरत ने सुरेमन चितेरे को अकेला पाकर कहा कि—

'ए सुरेमन! अगर तू मुझ पर इस क़दर दिलोजान से आशिक़ हो गया है तो मैं भी तुझे अपनी मोहब्बत दूँगी। तू मुझसे शादी कर ले और मुझे अपने घर बुला ले।'

सुरेमन ने जवाब में कहा कि—

'ए प्यारी, मैं भी यही चाहता हूँ। लेकिन मैं किस तरह तुझे अपने संग ब्याहूँ? तू तो सब तरह से काबिल है और इस फ़न की जानकार है इसलिये तू मुझे इसकी तरकीब बता।'

मूरत ने समझाते हुये कहा—

'ए चितेरे जब तक मेरी माँ तुझसे ब्याह करने के लिये इजाज़त नहीं देतीं तब तक मैं तेरे पास नहीं आ सकती। इसलिये मुझे ब्याहने के लिये तू मेरी माँ के पास जा और उनका पांव पकड़।'

मूरत के इस तरह सिखाने पढ़ाने पर सुरेमन के समझ में यह बात आ गई कि बिना मूरत की मां-सोना, से हुक्म हासिल किये हुये वह मूरत को नहीं पा सकता। अपने मन में बहुत डरता हुआ और हिम्मत बाँधता हुआ सुरेमन चितेरा एक दिन मूरत की मां सोना, के हुजूर में जा खड़ा हुआ।

ए मेरे समझदार उल्लू। तुझे पहले ही बता चुका हूँ कि सोना बहुत दुनियाँ देख चुकी थी। सुरेमन चितेरे को खाट पर बैठाते हुये उसने पूछा कि—

'क्यों सुरेमन चितेरे! ऐसा भी भला कौन सी बात सामने आई कि जिसके कारन तू आज मेरे दरवाज़े आन खड़ा हुआ?'

इस तरह की साफ़ बात सुनकर चितेरे सुरेमन की बंधी बधाई हिम्मत छूट गई कि वह कुछ कहे। उसकी घिग्घी बंध गई और गला भरभरा उठा। वह सोच रहा था कि बिना कुछ कहे ही वापस चला जाय लेकिन तब तक उसे मूरत की मूरत याद आ गई और कुछ कहने के लिये वह मजबूर हो गया। बोला—

'ए मूरत की माँ। मैं तेरी बड़ी क़दर करता हूँ। तू मुझे जानती होगी कि मैं इस शहर में चितेरे के हुनर की वजह से मशहूर हूँ। मेरा बाप हीरामन

भी पुश्तैनी चितेरा था और मुल्क के सभी तस्वीर ख़रीदने वाले उसे जानते थे। ए सोना! मेरे बाप की शादी के लिये बड़े-बड़े सेठ साहूकारों ने अपनी बेटियाँ देनी चाही थीं। आखिरकार, मेरे बाप ने मेरी माँ से शादी की जो राधा पुर के बड़े ठाकुर की बेटी थीं। मैं अपने ख़ानदान से आला दरजे का हूँ, इस बात को बताने की ज़रूरत नहीं है। ए सोना! तूने अपनी बेटी की जिस तरह परवरिश की है वैसे कोई माँ नहीं कर सकती। इसलिये मैं तुझसे आज यह कहने के लिये आया हूँ कि अगर तुझे कोई एतराज़ न हो और तेरे मन में कोई भरम न उठे और तेरा इंसाफ़ इस बात को मंजूर करे तो मूरत को मेरे संग ब्याह दे।'

बात जल्दी-जल्दी ख़त्म करके सुरेमन ने ऊपर की चढ़ी सांस नीचे खींची। इस हरकत में उसकी मटोल देह को ऐसी तकलीफ़ उठानी पड़ी कि उसकी वजह से उसकी गोल-गोल आँखों से आँसू के दो बूंद बुल्ल-बुल्ल चू पड़े।

सोना ने अपने बाल धूप में सफ़ेद नहीं किये थे। सुरेमन की सांसों की रफ्तार देख कर ही वह समझ गई थी कि हो-न-हो यह चितेरा मूरत के ही बारे में कुछ कहेगा। सुरेमन कोई बुरा आदमी न था—सोना कंजड़िन की जगह कोई दूसरी मां होती तो मूरत को सुरेमन के हाथ में सौंपकर चैन की सांस लेती और पार उतरती। लेकिन सोना कंजड़ों में अपने को पढ़ी लिखी लगाती थी। इसीलिये वह तमक कर बोली—

'सुरेमन चितेरे सही है कि जो कुछ तू कहता है वह झूठ नहीं है और तेरा खानदान आले दरजे का है। लेकिन मैं तुझे बताती हूँ कि तू चाहे कितने ही बड़े बाप का बेटा क्यों न हो, हमारे गोल में नहीं खप सकता इसलिये मैं मूरत को तेरे हाथों नहीं सौंप सकती'।

सुरेमन ने छाती पर पत्थर रख कर पूछा कि—

'ऐ सोना। ऐसा भी भला क्यों!'

सोना उर्फ़ मूरत की माँ ने जवाब दिया कि—

'ओ चितेरे, आदमी चाहे कितने बड़े खानदान का क्यों न हो उस पर जब काले जादू का चक्कर चलने लगता है तब वह नालायक साबित हो जाता है। मैं अपनी जादू की विद्या से बताती हूँ कि तेरे ऊपर काले जादू का चक्कर

चल रहा है और तू किसी कंजड़ की लड़की को खुश नहीं रख सकता। इस लिये मैं अपनी कन्या तेरे संग न ब्याहूँगी।'

चितेरे ने रुंधे गले को साफ करते हुये कहा कि—

'ए सोना ! यह काले जादू का चक्कर क्या है, और तू यह कैसे कह सकती है कि बड़े खान्दान का लड़का मैं सुरेमन, नालायक निकल जाऊँगा ?'

सोना इसके लिये तैयार बैठी थी। अपने नारियल के हुक्के में तम्बाकू की टिकिया रखते हुये उसने कहा कि—

'ए नौजवान नाराज न हो अगर तेरे पास वक्त है तो मैं तुझे एक दिलचस्प दास्तान सुनाऊँगी जिससे तुझे यह पता चलेगा कि लायक बापों के बेटे किस तरह नालायक हो जाते हैं और काले जादू के चक्कर में पड़कर अपने कुल की इज्जत गँवाते हैं।'

सुरेमन चितेरे ने जब उदास मन से कहानी सुनने के लिये हुँकारी भरी तो सोना ने हुक्के का एक कश लेते हुये उसे काले जादू की दास्तान सुनाई।

और ए मेरे काठ के उल्लू ! अब मैं तेरे रूबरू वही कहानी बयान करता हूँ जो सोना कंजड़िन ने सुरेमन चितेरे को सुनाई थी।

●

किस्सा काले सफेद जादू की लड़ाई

उर्फ

कपूत बेटे की दास्तान

ए उल्लू ! सोना ने अपनी बात यूँ शुरू की।

'ए चितेरे, सात समुन्दर पार की एक नगरी सुन्दर में बाटू नाम का एक जादूगर रहता था जिसने सफेद जादू सिद्ध कर लिया था और जो अपने मन्तर के बल से बड़े और लायक आदमियों के लड़कों को बड़ा और लायक बनाया करता था। इसलिए उसके पास सभी बड़े और लायक आदमी अपने लड़कों को लेकर पहुँचा करते थे ताकि उनके लड़के अपने बापों का नाम ऊँचा कर सकें। बाटू अपने जादू के इन करतबों की वजह से बड़ा मशहूर था।

अब तू यह सुन कि उसी जमीन पर एक ऐसी नगरी थी जिसको किसी साधू का श्राप था कि वहाँ के सब लोग —राजा और प्रजा—बुद्धू हुआ करेंगे। बुद्धू लोगों की नगरी में सफेद जादू की वजह से बड़ी बेचैनी रहती थी क्योंकि उनके लड़के भी उन्हीं के जैसे निकलते थे। दो तीन पुश्त बीत चली लेकिन उनका दुख न कटा। ए मेरे उल्लू ! परमात्मा की यह लीला देख कि इन बुद्धुओं की नगरी में एक और जादूगर पैदा हो गया जिसका नाम 'इन्चको' हुआ। इस इन्च-को नाम के जादूगर ने नामी काला जादू सिद्ध किया और सबका चुनौती दी कि वह अपने जादू के बल से अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा बना सकता है। उसने यह भी कहा कि वह नालायक बाप के बेटों को लायक बना सकता है और लायक बाप के बेटों को नालायक बना सकता है।

ए काठ के उल्लू ! जब उस नगरी के लोगों ने यह सुना कि इन्चको लायक बाप के बेटों को नालायक साबित कर सकता है तब वे खुश होकर नाचने लगे और उन्होंने सोचा कि अब सफेद जादूगर को नीचा दिखाकर वे सारी दुनिया को नालायक बना सकेंगे। इन्चको का बड़ा आदर सत्कार किया गया और उसको बड़े-बड़े इनाम दिये गये। बुद्धू नगरी के 'बुद्धू-पदक' और 'बुद्धिहीन चक्र' उसे दिए गए।

धीरे-धीरे यह खबर जब सफेद जादू के मालिक बाटू जादूगर के पास पहुँचा तो वह इन्चको का यह ढोंग देखकर बेहद नाराज हुआ और उसने काले जादू से लड़ने की चुनौती मंजूर कर ली। उसने यह कहा कि इन्चको को अपना काला जादू साबित करके दिखाना पड़ेगा।

बुद्धू लोगों की नगरी के काले जादूगर ने अपने संगी-साथियों के कहने

पर सफेद जादू को अपने मन्तर से काट कर काले जादू का तमाशा दिखलाना तै कर लिया। इस तरह दोनों ने चुनौती का बीड़ा उठा लिया और मैदान बद दिया गया।

जब यह सब तै हो गया तो एक जगह पर इधर से सफेद जादू का मालिक बाट्ट और उधर से कालेजादू का मालिक इन्चको अपने अपने हमदर्दों, नारेबाजों और दलबल वाले साथियों को लेकर आ धमके। चेले चपाटियों का मजमा गुल मचने लगा।

सफेद जादू के जादूगर बाट्ट ने कहा कि—

'ए इन्चको! अगर तुझे अपने काले जादू पर तनिक भी एतबार है तो तू लायक को नालायक साबित कर और दुनिया के सामने काले जादू की साख रख और अपने उस्ताद का नाम ऊँचा कर।'

काले जादू के मालिक ने आगे बढ़कर अपना झंडा दिखाते हुए चिल्ला कर कहा कि—

'ए बाट्ट! तुझसे जो कुछ बन पड़े तू अपने जादू का कमाल दिखला। अगर मैं काले जादू का सच्चा मालिक हूँ तो मैं तुझे बचन देता हूँ कि तू जो कुछ अपने सफेद जादू से दिखलायेगा, वह मैं अपने काले जादू से एक दिन में काट कर दिखा दूँगा।'

दोनों तरफ के लोगों ने मैदान मान लिया। सब ने अपने खीमे वहीं गाड़ दिये और जब तक लड़ाई चलती रही वे देखते रहे।

बीच मैदान में एक सफेद पर्दा लगाया गया। यह तै था कि सारा तमाशा उसी सफेद पर्दे पर दिखलाया जायगा और काले सफेद जादू की लड़ाई उसी पर होगी। उस पर्दे पर तस्वीरें आती जाती थीं।

पहले सफेद जादूगर की पारी थी। सफेद कपड़ों में लैस, सुफेद दाढ़ी में इत्र मले हुये, लहराते हुये सन ऐसे बालों को हवा में उड़ने के लिये छोड़ते हुये जब सफेद जादूगर ने मन्तर पढ़कर मुट्ठी भर चमेली के फूल जोर से पर्दे की तरफ फेंके तो जरा ही देर में समाँ बदल गया। भीनी-भीनी खुशबू वाली हवा डोलने लगी। चाँदनी रात छा गई। लोगों के मन हल्के हो गये। धीरे-धीरे पर्दे पर तस्वीरें उभर कर आने लगीं और लोगों को दिखाई पड़ने लगा—

हिन्दुस्तान देश के बीच तीन लोक से न्यारी एक नगरी है जिसका नाम चन्द्रचूड़ नगरी है। चन्द्रचूड़ नगरी बड़ी बहार वाली नगरी है जिसके सीने से

लगी गंगा नदी बहती है। लाखों आदमी रोज़ आता जाता है। सोने चाँदी का जड़ाऊ काम होता है। पोशाकें बन बन कर विलायत जाती है जिन्हें मेमें पहन-पहन कर टहलती हैं। नगरी में बड़े-बड़े गाने बजाने वाले बसते हैं जिनसे छटा और निखरती है। बड़ी नामवर और जगमग वह चन्द्रचूड़ नगरी है।

उसी नगरी में एक मोहल्ला है रामतलैया। उस रामतलैया मोहल्ला में एक मुन्शी जी रहते हैं जिनका नाम खुशबख्तराय है। मुन्शी खुशबख्तराय एक बड़े वकील रमापति लाल के यहाँ मुहर्रिर हैं। वकील साहब की वकालत धूम से चलती है। मुन्शी जी की वजह से बीस-पचीस असामी रोज़ आता है। मुन्शी जी ने जिसका जैसा मुक़दमा बना दिया, वकील साहब उसको वैसा ही चलाते और फ़तेह पाते हैं। इस तरह मुन्शी खुशबख्तराय का भी नाम वकील साहब के नाम की तरह रोशन होता जा रहा है। मुन्शी जी के लिखे जवाबदावे और अपील की अर्जियों की हर जगह चर्चा होती और लोग पूछते-पूछते मुन्शी जी के पास पहुँचते रहते हैं।

मुन्शी खुशबख्तराय काम ख़त्म करके घर जाने लगते तो पचासों आदमी उनसे रास्ते में दुआ सलाम करते। किसी से वह उसके घर का हाल पूछते, किसी से उसके बीमार लड़के का हाल पूछते,—किसी की लड़की की शादी के लिये सर-सामान जुटाते, किसी की दो चार रुपये जरूरत के हिसाब से मदद करते, और जब घर पहुँचते तो उनकी जेब बिल्कुल ख़ाली रहती। मुन्शी जी के घर का ख़र्च जैसे-तैसे चलता रहता। मुन्शी जी अपने पेट से ज्यादा दूसरे के पेट की परवाह करते। उन्होंने जिन्दगी में एक ही चीज़ सीखी थी वह यह कि दूसरों की जरूरत के सामने अपनी ज़रूरत को मिटा देना। बड़ी से बड़ी मुसीबतें, बीमारियाँ और पेट की भूख सब को हँस कर टाल जाने में मुन्शी खुशबख्तराय कमाल रखते।

ए काठ के उल्लू! मुंशी खुशबख्तराय के नाम का यह असर उन पर पड़ा था कि हर तरह वह खुश ही रहते। मुंशी जी अपनी खुशतबीयत की वजह से सारी चन्द्रचूड़ नगरी में मशहूर थे। मामूली कपड़े और मामूली खाने के सहारे ऊँची ज़िन्दगी बसर करने वाले लोगों के लिये वह एक नमूना थे। ए उल्लू, इसी वक्त दिखाई पड़ता है कि हिन्दुस्तान मुल्क में 'अपने देश में अपना राज' चाहने वाले नौनिहालों का एक हुजूम उमड़ा जिनको पकड़ कर मुक़दमा चलाया गया। ऐसे वक्त में मुंशी जी ने बड़ा काम किया और ऐसी अर्ज़ियाँ

और अपीलें अदालत में दाख़िल कीं जिससे वह नौनिहाल न सिर्फ़ छूट गये बल्कि उनका जोश और भी बढ़ता रहा।

ए चितेरे! तू देख रहा होगा कि सफेद जादूगर ने किस तरह कमाल दिखलाया। आगे बाद्दू का करतब और भी बढ़ा। ए सुरेमन! आगे पर्दे पर दिखाई पड़ता है कि मुंशी खुशबखतराय के दो लड़के होते हैं। दोनों चाँद और सूरज की जोड़ी के मानिन्द हसीन और नाज़ुक। दोनों की जोड़ी ऐसी कि देख कर राम लछमन की जोड़ी याद आने लगे। मुंशी जी दोनों का नाम रखते हैं चक्रधर और धरनीधर। बड़ा भाई चक्रधर छोटे भाई धरनीधर को इस क़दर प्यार और मुहब्बत से रखता कि लोग दाँतों तले उगली दबाते। चक्रधर को कोई चीज़ कहीं खाने के लिये मिलती तो वह थोड़ा सा हिस्सा बचाकर धरनी-धर के लिये ले आता। धरनीधर को बाहर कहीं खेलने जाना होता तो वह तब तक घर से पैर न निकालता जब तक चकधर से हुक्म न माँग लेता। दोनों बेटों की आपसी मुहब्बत देखकर लोग सही ही सोचने लगते थे कि मुंशी खुशबखत राय की तपस्या का फल उन्हें मिला है! मुंशी जी भी अपने उन दोनों बेटों को देखकर फूले न समाते!

ए लकड़ी के पंछी! इस तरह मुंशी जी उन दोनों लड़कों को स्कूल में दाख़िल कराते हैं। उनके मन में बड़ी साध है कि उनके दोनों बेटे आगे बढ़ कर वकील और बैरिस्टर बनें और अपने देश के काम आएँ। दोनों लड़के मन-चित लगाकर पढ़ते हैं और अपने दरजों में पहिले नम्बर पर आते हैं! मुन्शी जी की छाती फूल कर आठ हाथ की हो जाती है!

अपने दोनों साहबज़ादों को मुन्शी जी ने बड़ी-बड़ी अर्जियों की नकलें जबानी रख दी थीं। लड़कों के मुँह में जवाबदावे और कचहरी की जुबान बसी हुई थी। वकीलों के मजमों में दोनों लड़के अपने करतब दिखलाते तो लोग दाँतों तले उँगली दबा कर रह जाते। जब यह दोनों पारी-पारी बड़े-बड़े वकीलों के भी कान काटते हुए ज़बानी जवाबदावा सुनाते तो लोग मुन्शी जी की अक़्ल का लोहा मान जाते!

इधर यह हो रहा था, उधर मुन्शी जी ने अपनी मुहर्रिरी जारी रक्खी। बड़े-बड़े पेंच वाले मुकदमे जो हर वकील लेने से इन्कार कर देता मुन्शी जी की अक़्ल की बदौलत रमापतिलाल जीत कर दिखा देते! बड़े-बड़े जाबिर शैतान और चोर भी रमापतिलाल वकील के यहाँ जाते क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि मुंशी

जी जो अपील लिख देंगे, उसके सहारे वह जजों से छूट जायेंगे। मुंशी खुश-बख्तराय को इन चोर और शैतानों की अपील लिखने पर बड़ा एतराज़ होता लेकिन नौकरी के नाम पर कभी-कभी वह भी करना पड़ता! अपील लिख कर छुटवा लेते तो मुंशी जी घण्टों बैठकर समझाते कि चोरी करना बुरी बात है और इस काम को छोड़ देने में ही कल्यान है। वह उनका मन फेरने की कोशिश करते और दूसरी तरफ़ ले जाने का इंतिजाम करते! अपनी भर वह भरपूर करते लेकिन चोर नसीहत से नहीं मानता है, ऐसा कहा गया है।

इस तरह जब पर्दे पर इतना खेल हो चुका तो सफेद जादूगर बाद्वू ने खेल रोकते हुए कहा कि—

'ए काले जादूगर इंचको! इस तरह तूने देखा कि मैंने तेरे सामने सफ़ेद जादू का तमाशा खड़ा किया कि यह उजागिर नगरी चन्द्रचूड़ मुन्शी खुशबख्त राय के दोनों चाँद सूरज से और रौशन हो उठी! उनके जैसे लायक़ बेटे कम आदमियों के होते हैं! तू देख कि सारी नगरी में इनकी कैसी धूम बँधी हुई है। अब अगर तेरी बिद्या में कुछ भी दम हो और तू सोचता हो कि तेरा काला जादू मेरा कुछ भी बिगाड़ सकता है तो अपना जादू चला कर देख ले! और साबित कर कि इन लायक बेटों को तू कैसे गुमराह कर सकता है!'

काले जादू का मालिक इंचको यह सुनकर मुस्कुराया। तमाम भीड़ को तरफ़ देख कर वह फिर हँसा। ए चितेरे! अपने काले जादू के झंडे को लहराते हुए वह बोला कि—

'हाज़रीन! अब मैं आप सब के सामने सफ़ेद जादूगर की इस चुनौती को उठाता हूँ और इसी पर्दे पर आप को इस तस्वीर का दूसरा रुख़ दिखाता हूँ जिससे आप को यह पता चलेगा कि काले जादू में कितना दम है?'

इसके बाद उस काले जादूगर ने हाथों में काली राई एक मुट्ठी में भरी और मंतर पढ़ कर पर्दे पर मारी। पर्दे पर राई की बौछार होते ही एक बड़ा अजीब-सा बदलाव सारे मौसम में हो गया। एक दम धूल-उड़ाती हुई एक काली आँधी चलने लगी। सब तरफ़ अँधेरा सा छा गया। आँखों में धूल भरने लगी। तारे छिप गए। अजीब भयावनी आवाजें हवा में गूँजने लगीं। खड़े हुए लोग भी घबराने लगे। धीरे-धीरे काली आँधी का ज़ोर कम हुआ और लोग अपनी आँखों को मल मल कर साफ़ करने लगे। थोड़ी देर में लोगों को पर्दे पर फिर दिखाई पड़ने लगा—

कुछ अर्सा गुज़र चुका है। बाप खुशबख्त राय की उम्र थोड़ी बढ़ चुकी है। बेटे चक्रधर और धरनीधर जवान हो रहे हैं और सब तरफ़ उनका मानदान बढ़ रहा है। बाप की वजह से बेटों का भी हर जगह स्वागत सत्कार होता है बाप भी ऐसी हालत में खुश ही खुश दिखाई पड़ते। एकाएक बेटों के मन में मैल घुसता है। धरनीधर है तो छोटा लेकिन बड़े भाई चक्रधर को समझता है—

'भइया चक्रधर! क्या हम दोनों बराबर बाप के ही नाम के सहारे चलेंगे? क्या हम दोनों की अपनी कीमत या औक़ात कुछ है ही नहीं? अगर है तो वह सामने क्यूँ नहीं आती? आख़िर कब तक हमारे नाम से हमारे बाप का नाम चिपटा रहेगा?'

चक्रधर चुप रहता है। धरनीधर तब आगे समझाता है—

'तुम बोलते नहीं। इसका नतीजा यह होगा कि हम दोनों कौड़ी के कुछ नहीं रह जायँगे। अभी चेतने का अच्छा मौका है।'

चक्रधर इस बात पर बोलता है—

'तो ए छोट्ट भाई! तू भला क्या चाहता है! जब हम दोनों एक ऐसे बाप के बेटे हैं जिनका नाम सारी दुनियाँ में रौशन है तो भला ऐसा कैसे हो सकता है कि हमारा नाम जब लिया जाय तो बाप का नाम उसमें शामिल न किया जाय?'

धरनीधर फिर समझाता है कि—

'ए. चक्रधर! तुम यह नहीं समझते हो कि जब तक बाप का नाम हमारे साथ जुड़ा रहेगा तब तक हम किसी भी लायक न बन सकेंगे। हमारे नाम के साथ भी इसी तरह धीरे-धीरे मुन्शी चक्रधर और मुन्शी धरनीधर जुड़ जायगा, जिसे मैं सख्त नापसंद करता हूँ। न सिर्फ नाम बल्कि उनकी सारी बुरी आदतें—यानी राह चलते रुपिया बाँटने का हिसाब, घर की कोई फ़िक्र न रखना, और जिस तरह वह बिना मतलब दूसरों की घरेलू बातों में दख़ल रखते हैं, जिस तरह वह चोर डाकुओं को उनका पेशा छोड़ देने के लिए कहते रहते हैं ताकि वकीलों की आमदनी घट जाय, यह सब की सब हमारे अंदर आ बैठेंगी। और इन आदतों के घुसते ही हम मुँह दिखाने लायक़ भी न रह जायँगे। इस तरक्की करती हुई दुनियाँ में अब वक्त आ गया है कि हम लोग अपने बाप के नाम से अपने नाम को अलग कर लें!'

धरनीधर के इस ज़ोर दार भाषण पर चक्रधर, बड़ा भाई होकर भी हूँ हूँ करके ही रह जाता है। धरनीधर भाई को अपनी तरफ समझकर साफ़ कहता है कि वह अपने बाप से लाख गुने अच्छे जवाबदावे और न अपीलनामे लिख सकता है। यही नहीं उसने अपने बाप की अर्ज़ियों में गल्तियाँ भी निकालनी शुरू कर दीं। धरनीधर कहता कि चोर जो रोटी छीन ले जाता है, वह सही करता है क्योंकि आख़िर उसे भी जीने का हक़ है! और जिस तरह उसे जीने का हक़ है उसी तरह से उसके सहारे वकीलों को भी—उन चोरों के सहारे—जीने का पूरा हक़ हासिल है।

इस छोटे बेटे की ऐसी अजीब बातें सुनकर लोग ताज्जुब में पड़ जाते हैं और अक्सर बात मुन्शी जी के कानों तक पहुँचती है। मुन्शी जी हँसकर टालते जाते हैं और कहते हैं कि 'बच्चे हैं। वक्त आएगा तो समझ लेंगे। अभी दुनियाँ देखी नहीं है।'

ए गोल मुखी काठ के उल्लू! चक्रधर को इस तरह की बातें करने की और ज़ाहिर तौर पर बग़ावत का झंडा ऊँचा करने की जब हिम्मत नहीं पड़ी तो उसने बाप की सभी नसीहतें मानने से इन्कार कर दिया। उसने किसी तरह पैसा कमाने की सोची क्योंकि उसको यह ख्याल हुआ कि बिना पैसे के दुनियाँ में कुछ नहीं हो सकता! उसका मन धीरे-धीरे ब्यौपार की तरफ़ लग गया!

अब तू देख सुरेमन चितेरे! कि काले जादूगर के जादू से किस तरह पर्दे पर तमाशा बदलने लगा और सफेद जादूगर के बनाये हुये लायक़ लड़के किस तरह काम करने लगे।

काले जादूगर इंचको ने अपने जादू के खेल को ख़तम करते हुये कहा कि—

'ऐ सफ़ेद जादूगर! अब तू सच सच बता कि तुझे यकीन हुआ या नहीं कि तेरे बनाये हुये लायक बेटे, मेरे जादू के ज़ोर से कैसे बदल जाते हैं!'

सफ़ेद जादूगर ने अपनी सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुये हँसकर कहा कि—

'ऐ काले जादूगर! तूने यह क्या बच्चों का सा तमाशा दिखलाया है? मैं अभी-अभी एक मिनट में तेरा किया धरा साफ किये देता हूँ।'

इतना कह चुकने के बाद सफ़ेद जादूगर ने आँखें बंद की और चमेली के फूलों से फिर मुट्ठी भर कर मन्तर के साथ मारी। जैसे-जैसे सफ़ेद जादू का

मन्तर पढ़ा जा रहा था, वैसे वैसे काली आँधी का धुन्ध कम हो रहा था। लोगों की आँखों में भरी धूल हटने लगी। खुशबू फिर फैलने लगी। जादूगर बादू ने ज़ोर से मन्तर पढ़ कर सरसों के कुछ दाने जब मारे तो पर्दे पर धीरे-धीरे फिर खेल शुरू हुआ—

मुंशी खुशबख्तराय लड़कों को बड़ा बनाने का सपना देखते हैं और फिर कोशिश करते हैं कि उनके लड़के चक्रधर और धरनीधर को समझ आ जाय। चक्रधर को बाप से अलग होने की हिम्मत नहीं पड़ती। वह बाप का कहना मान लेता है और सादगी से रहने लगता है। बड़े भाई का यह रुख देखकर धरनी-धर की समझ में आता है कि अगर वह अपने बाप से अलग हो जायगा तो घर की सारी चीजें और सामान चक्रधर हथिया लेगा। इसलिए वह भी तय करता है कि बाप से अलग रहना वाजिब नहीं है। धरनीधर ने फिर बाप की तारीफ़ें करनी शुरू कीं और कहा कि किसी भी वकील के लिये ऐसे अच्छे मुहर्रिर की हमेशा जरूरत पड़ती है जैसे कि मुंशी खुशबख्तराय हैं।

धरनीधर बाप के कहने पर चलने लगता है। मुंशी जो समझते हैं कि शादी कर देने से लड़का हाथ से बेहाथ होने से बच जायगा। धरनीधर की शादी तय होती है और धरनीधर को अपनी रज़ामन्दी भी देनी पड़ती है। मुंशी खुशबख्तराय ने भी ऐसी गोटबन्दी की कि धरनीधर की शादी एक आला मशहूर घराने में तय की। उस घराने में धरनीधर के ससुर का नाम बड़ा ऊँचा था। धरनीधर जब यह देखता है कि शादी से माँ बाप भी खुश होंगे और लगे हाथों मशहूर ससुर से हमारा रिश्ता क़ायम हो जायगा तो वह शादी के लिये हुंकारी भर देता है। मुंशीजी धूमधाम से शादी करते हैं। धरनीधर के पास कमलिनी नाम की एक अच्छी और गुनी लड़की बीवी के तौर पर आ जाती है। आते ही वह घर संभाल लेती है और मुंशी जी को आंखों का तारा बन जाती है। धीरे-धीरे यह आलम होता है कि मुंशी जी उसी के इशारों पर चलते हैं और उसी के दम की सांस लेते हैं। धरनीधर को बड़ी राहत मिलती है और वह सोचता है कि बीबी ही वह चीज़ है जो अगर चाहे तो बड़ी आसानी से घर भर की सेवा का स्वांग रच कर अपना मतलब सिद्ध कर सकती है।

ऐ चितेरे सुरेमन ! देख कि सफेद जादू के जोर के गिरता हुआ धरनीधर कैसे एकाएक ठहर गया और काले जादूगर को फिर से चुनौती उठानी पड़ी।

सफ़ेद जादूगर ने काले जादूगर इब्बको से ललकार कर कहा कि—

'काले जादू के मालिक । तूने यह देख लिया होगा कि तेरा बिगाड़ा हुआ कैसे फिर सुधर जाता है । सिर्फ सफेद जादू से उसकी मति फेरने की ज़रूरत रहती है । इसलिये अब तू हारी मान और सबके सामने अपने जादू के डंडे को जलाकर राख कर ।'

काला जादूगर इंचको सफेद जादूगर की बातें सुनकर घबराया नहीं । उल्टे उसने कहा—

'ए बाट्टू ! जो तुझे अपने सफेद जादू का इतना गुमान है तो मैं अभी तुझे दिखाता हूँ कि तूने अपने जादू से कोई कमाल नहीं किया । अभी तो तमाशा पूरा हुआ ही नहीं । अब आँखे खोल कर देख कि आदमी के कैसे-कैसे दिन आते हैं और वह कैसे काम करता है ।'

ए उल्लू ! इसके बाद उसने जादू का डंडा घुमाया । सन्नाटे का आलम छा गया । लोग सोचने लगे कि अब आगे क्या होगा । ए लकड़ी के पंछी ! काले जादूगर ने इतनी ज़ोर से मन्तर खींच कर मारा कि सरसों के दाने हवा में बिखर गये । दो मिनट में बड़ी ज़बरदस्त और भयानक आवाज़ करनेवाली काली आँधी फिर चलने लगी । सब तरफ 'हू-हू' की आवाज़ सुनाई पड़ती थी । आँखों के आगे धुन्ध छा गया । आसमान से चिनगियों की तरह तारे टूटने लगे । लोग डरकर चिल्लाने लगे । जानवरों के रोने की आवाज़ आने लगी । काला जादूगर मन्तर पढ़ता रहा और डंडा घुमाता रहा । धीरे-धीरे काला जादू सब तरफ फैल गया । जादूगर के मन्तर पढ़ते रहने पर कुछ देर बाद कालिख का धुन्ध खत्म हो गया और जब जादूगर ने पर्दे के चारों ओर डंडा घुमाया तो खेल आगे शुरू हुआ —

धरनीधर के बाप मुन्शी खुशबख्तराय बीमार पड़ते हैं और उसी में स्वर्गवासी हो जाते हैं । धरनीधर को कुछ तकलीफ तो ज़रूर होती है लेकिन वह अपना भविष्य सोच कर चुप रहता है । खेल आगे बढ़ता है धरनीधर और चक्रधर की मुहब्बत एकदम खत्म हो चुकी रहती है और दोनों भाई-बाप के मरने पर बँटवारा करते हैं । बाप के पास था भी क्या ? लेकिन उनके लिखे दावे, जवाबदावे, अपीलें और अर्ज़ियों की जितनी नकलें उनके बक्स में थीं, वह कानून की निगाह में बेमिसाल थीं । दोनों ही उसका इस्तेमाल करना चाहते थे । आखिर बँटवारा ऐसे हुआ कि जो भी भाई चाहे उन कागजों, लेखों और

तहरीरों का इस्तेमाल अपने ढंग पर कर सकता है। बड़ी थुक्काफ़ज़ीहत के बाद भाई-भाई अलग हो गये।

ए चितेरे! बड़ा भाई चक्रधर इस बीच खानदान से बाहर चला गया और एक दूसरे कुनबे की बेटी लाकर बैठा लेता है। वह मुंशी जी के बनाये हुये जवाबदावे और अपीलों के नकशेनुमा फारम छाप-छाप कर बेचना शुरू कर देता है क्योंकि मैं तुझे बता चुकी हूँ कि चक्रधर को पैसे से मोहब्बत हो चुकी थी और उसके लिये सीधी तरकीब यही थी। इन तहरीरों की नकलों की बड़ी बिकी हुई क्योंकि तमाम कानूनगो लोगों ने उनको खरीद कर रखना शुरू कर दिया।

ऐ मेरे उल्लू दोस्त! अब तू दूसरे बेटे धरनीधर का बयान सुन।

उसने जब यह देखा कि बड़े भाई ने सारी तहरीरें छाप कर बेचनी शुरू कर दी हैं तो उसके लिये एक यही चारा रह गया कि वह खुद वकालत करे और बाप के इन गुनों का सही इस्तेमाल करे। वकालत के बाजार में ऐसे ही दूकानदारों की चलती है जो खास तरह का सामान रखते हैं। धरनीधर के दिमाग ने तब चैन लिया जब उसने यह सोच लिया कि वह मुल्क के चोरों और उचक्कों की खास वकालत करेगा और उन्हें सजा पाने से बचायेगा।

ऐ भाई! वह अपनी साली को अपना मुहर्रिर बनाता है और अपना धन्धा चालू करता है। उसके पास बाप की लिखी हुई वह सारी तहरीरें मौजूद थीं जो मुंशी जी बाबू रमापति लाल वकील को चोरों की तरह वकालत के लिये दिया करते थे। इसलिए इन चोरों का मामला उठाने में धरनीधर को दिक्कत महसूस न हुई। बाप के ही बल पर वह नाम कमाता चलता है। लेकिन वह कोशिश करता है कि बाप का कहीं जिक्र न आए। जाबिर बदमाशों के मुकदमें की बहस में वह कहता है कि जब तक हर घर से इनको रोज रोटियाँ नहीं मिलेंगी तब तक वह चोरी करते रहेंगे। इसके लिए वह कहता कि रोटी देने का काम अदालत का है।

ऐ मेरे दोस्त! इस तरह धरनीधर मशहूर होता जाता है। सारे चोर उसको अपना हमदर्द समझते हैं और अपनी कमाई में से उसको हिस्सा देते हैं। धरनीधर के पास पैसा जुड़ने लगता है। देखते-देखते मोटर, बँगला, नौकर चाकर सब ठाठ पूरा हो जाता है। बीच-बीच में वह बीबी को समझाता रहता है कि जितना इस धन्धे में फायदा है उतना किसी में भी नहीं। धरनीधर इतने से

ही चुप नहीं बैठता। वह चोरों की एक मजलिस बनाता है और वहाँ भाषण देते हुये कहता है कि जब तक वह एक होकर नहीं काम करेंगे, तब तक उनका दुनिया में रहना मुश्किल हो जायगा। चोरों से वह अपील करता है कि वह सब मिल जुल कर एक साथ अपना मोर्चा बनाएँ ताकि कोई आदमी और क़ानून उनके ऊपर उँगली न उठा सके। चोरों में नया दौर आता है और वह अपने को अब छिपाकर नहीं रखते बल्कि खुले आम सामने आकर कानूनी रवैया पकड़ कर अपनी हैसियत और अपने पेशे को समाज में मनवाने की हिम्मत करते हैं। धरनीधर अपनी इस कामयाबी पर फूला नहीं समाता और वह सोचता है कि वह अपने बाप से कहीं बड़ा है जो वह एक गिरोह का ऐसा नेता हो गया।

काले जादूगर इंचको ने ठट्ठा मार कर हँसते हुये कहा कि—

'ऐ मेरे सफेद जादूगर! अब बोल तेरा जादू क्या कहता है? क्या अब भी तू इस बात की जरूरत महसूस करता है कि मैं अपना जादू का डंडा जलाकर राख कर दूँ?...क्या अब भी तुझे इस बात का पूरा यकीन नहीं हुआ कि तेरे से कहे गये लायक आदमी को मैंने अपने जादू से कैसा पुतला बना दिया?'

ऐ चितेरे! काले जादूगर के चेले चपाटियों ने वह हंगामा मचाया कि चारों तरफ शोरगुल के अलावा और कुछ नहीं सुनाई पड़ता था। काले जादूगर की जै जैकार के नारे लगने शुरू हो गये। सफेद जादूगर के साथियों ने मुरझाई-मुरझाई आँखों से बाटू की तरफ देखा। उनकी उम्मीदें टूट रही थीं।

सफेद जादूगर बाटू ने एकबार फिर हिम्मत की और उसने मुँह खोला—

'ऐ काले जादूगर सच है कि तूने अपना मन चाहा पुतला बना लिया है, लेकिन एक बार मैं फिर कोशिश करना चाहता हूँ ताकि मेरे मन में कोई भरम न रह जाय।'

सफेद जादूगर के साथियों ने इस बार हिम्मत बाँध कर फिर शोर मचाया। सफेद जादूगर ने मुरझाई हुई जूही की कलियों को मुट्ठी में भर कर मन्तर के साथ फेंका लेकिन इस बार कालिख की धुन्ध एकदम मिटी नहीं। हवा में खुशबू भी नहीं आई। चाँदनी आई लेकिन उसमें वह चटकार न थी। लोगों की आँखों में धूल की किरकिरी अब भी बाकी थी। धीरे-धीरे पर्दे पर खेल फिर शुरू हुआ—

धरनीधर जो अपने बाप का जिक्र करना भी अपने लिये अपमान समझता था, वह एकाएक अपने बाप का नाम इज्जत से लेने लगता है। वह सबको

बतलाता है कि उसके बाप एक बहुत बड़े आदमी थे। और वह बड़े आदमी इसीलिये बने कि मुल्क के तमाम चोर और उचक्के उनके जवाबदावे और अपीलों से छूटते रहते थे। उनको मशहूर बनानेवाली जनता की यही असली जड़ थी। उसने यह कहा कि उसके बाप इस तबके या गिरोह के लोगों का ध्यान रखते थे और उनका ख्याल था कि दुनियाँ से इसे मिटाने के लिए फाँसी की जरूरत नहीं बल्कि दुनिया की जिन्दगी ही बदलने की असली जरूरत है ताकि इस तरह के तबके अपने आप मिट जाँय। धरनीधर ने वकीलों की बैठक में यही चर्चा की कि मुंशी खुशबख्तराय ने अपनी जिन्दगी में जितने मुकदमें लड़े और किये उनमें चोरों के हरसाल पचास और साठ की सैकड़े के ऊपर मुकदमें रहते थे। धरनीधर ने चोरों की मजलिस में कहा कि मुंशी खुशबख्तराय ने अपनी सारी जिन्दगी उन्हीं के लिये लगा दी थी और चूँकि उन्हें दुनियाँ के हालात की सही जानकारी न थी, इसलिये वह चोरों से पेशा छोड़ने के लिये कहा करते थे लेकिन अब चूँकि समाज ने काफी तरक्की कर ली है और साइन्स के जरिये वैज्ञानिक ढंग पर इसका हल निकाला जा सकता है, इसलिये हमको चोरी के फ़न को आगे बढ़ाने की जरूरत है।

ऐ उल्लू! सफेद जादूगर ने यह देखकर बार-बार मन्तर पढ़कर जूही के फूल मारे लेकिन धरनीधर टस से मस न हुआ। सफेद जादू के बल से उसने बाप की तारीफ जरूर की लेकिन मतलब अपना ही सिद्ध किया। सफेद जादूगर बाटू ने जब देखा कि वह अपने ही बनाये पुतले को अपने मनचाहे ढंग से बदल नहीं पा रहा है तो वह घबराने लगा। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उसकी आँखें जैसे फटी जा रही थीं। उसकी मेहनत पर पानी फिर गया और साख डूबने लगी। काले जादूगर के साथियों ने उसकी हार देखकर फिर शोर मचाना शुरू किया और बाटू के चेलों के मुँह एकाएक लटक गये।

ए सुरेमन! इसके बाद बाटू पसीने-पसीने हो गया। उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा। बुद्दू नगरी के लोग ज्यों-ज्यों चिल्लाते त्यों-त्यों उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे वह किसी काले समुन्दर में डूबा जा रहा है। हार कर उसने जादू का डंडा ज़मीन पर रख दिया। परदे पर से तमाशा ख़त्म हो गया। सफ़ेद जादूगर ने इंचको के सामने शर्म से गरदन झुकाकर कहा कि—

'ए काले जादूगर इंचको! मैं तेरे सामने अपना जादू का डंडा जमीन पर रखता हूँ और अपनी हार मानता हूँ। मैं इस बात को भी मंजूर करता हूँ कि

मेरे बनाये हुये पुतले को तू नालायक बना सकता है और यह भी सच है कि किसी लायक आदमी का बेटा जब काले जादू के चक्कर में पड़ जायगा, तो वह हमेशा नालायक साबित होगा। लेकिन, इंचको! मैं यह बात भी साफ़ कह देना चाहता हूँ कि अगर मेरा पुतला ख़राब संगत में न पड़ता तो उसे कभी यह दिन न देखना पड़ता जो आज देखना पड़ रहा है। जो कुछ भी हो, इस वक्त यह बात सच है कि मैं अपनी हार मानता हूँ और यह डंडा तेरे सामने हाज़िर करता हूँ।'

सफ़ेद जादूगर ने अपना डंडा काले जादूगर के सामने बढ़ा दिया। इंचको ने हँस कर सफ़ेद जादूगर बाटू का डंडा ज़ब्त कर लिया और कहा—

'ए बाटू! जब फिर तुझे अपने उस्ताद से ऐसा मन्तर मिले कि तू आकर अपने जादू का डंडा छुड़ा सके, तो आना और मुझसे छुड़ा ले जाना। लेकिन इस बीच भूलकर भी काले जादू से लड़ाई न ठानना।'

इस तरह कह कर काला जादूगर बाटू का जादूवाला डंडा लेकर वापस गया और सफ़ेद जादूगर अपने साथियों के साथ उदास होकर मुँह लटकाये हुये दूसरी तरफ़ चला गया। वह दिन था और आज का दिन है कि तब से अब तक सफ़ेद जादूगर अपना डंडा छुड़ाने के लिये नहीं आया।

ए सागौनी उल्लू। इस तरह सोना ने सुरेमन चितेरे को कहानी सुनाते हुये कहा कि—

'ए चितेरे! अब तूने यह बात अच्छी तरह जान ली होगी कि आजकल के ज़माने में ख़ानदान के ऊपर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि काला जादू वैसे ही सब को नालायक बनाता है जैसे कि उसने धरनीधर को बनाया। मैं अपनी विद्या से यह जानती हूँ कि तेरे ऊपर काला जादू चल रहा है। इसलिये मेरे नौजवान तू घर वापस लौट जा। मैं अपनी लड़की, मूरत तेरे साथ न ब्याहूँगी।'

सुरेमन चितेरा यह दास्तान सुन कर बहुत पिनपिनाया लेकिन मनमारे बाहर निकल आया।

'ऐ गोलमुखी दोस्त! तुझे बता देना ग़ैरमुनासिब न होगा कि आगे चल कर इसी कंजड़ की बेटी मूरत से ख़ालिकगंज के उस पुराने बटेरबाज़ मोहम्मद पीर का इश्क़ लड़ा और सोना कंजड़िन ने अपने फ़न से ऐसा जाल बिछाया कि चिड़ीमार मोहम्मद पीर खुद उसके जाल में बुरी तरह फँसा और जबरन उसे मूरत को ब्याहना पड़ा।'

क़बूतर ने किसी तरह अपनी यह आख़िरी कहानी ख़त्म की।

●

उपसंहार

उर्फ़

क़िस्सा ख़तम, पैसा हज़म!

अब आसमान में पूरी तरह से रोशनी फैल रही थी। सुबह फूटने ही वाली थी। बाहर की कुछ-कुछ चहल-पहल भी सुनाई पड़ने लगी थी। सड़क पर नहाने जाने वाले राम-राम करते निकलने लगे थे। कबूतर ने आंखें नचाकर रोशनदान से बाहर की दुनिया की झलक देखते हुए काठ के उल्लू से कहा कि—

'ए मेरी मनहूस रात को इतने दिलचस्प ढंग से काटने वाले मेज़बान! मैं तेरा शुक्रिया कैसे अदा करूँ जो तूने मेरी ख़ातिर इस क़दर आराम ला जुटाया और मेरी आवभगत में दिलोजान एक कर दी। ऐ भाई अब तू मुझे जाने की इजाज़त दे क्योंकि आसमान में धूप फैलने ही वाली है और मुझे भी बाहर निकल कर काम पर जाना है।'

काठ के उल्लू ने अपनी प्रकाशहीन आंखों से देखते हुये जवाब दिया कि—

'हाँ मेरे नौजवान मेहमान। तूने आज आकर इस घर को जो रौनक़ बख्शी है और मेरा सूनापन जो इस कदर घटाया है उसके लिये मैं कभी तुझसे उरिन नहीं हो सकता। तू मुझे नाहक शुक्रिया दे रहा है। मैं तो इस क़ाबिल भी नहीं हूँ। सच तो यह है कि मैं तेरी बीती हुई पीढ़ी हूँ। तू ही आने वाला ज़माना है। तूने जितनी कहानियाँ मुझे सुनाईं उन सब से मेरी अलग राय रही और मैं तुझे हमेशा जवाबी दास्तानें सुनाता रहा। मेरा कहा-सुना माफ़ करना और मेरी बातों का कुछ भी ख्याल न करना।'

कबूतर की आँखों में जैसे यह बात सुनकर कि चमक-सी आ गई और और उसने बड़े अंदाज़ के साथ कहा कि—

'ए मेरे ख़ूबसूरत बुजुर्ग! इस तरह की बातें सुना कर मुझे शरमिन्दा मत कर। यह सच है कि तूने अपनी बात बताने और समझाने के लिये दास्तान सुनाई और मैंने अपनी राय बताने के लिये तुझे तरह-बेतरह की कहानियाँ सुनाईं। लेकिन हम दोनों के दिलों में कहीं कोई रंजिश या मलाल नहीं आया। हम दोनों ने अपना वक़्त हँस खेल कर काट डाला। पता नहीं क्यों, आज की दुनिया में लोग अपनी बात कह कर उसे दूसरों से ज़बरदस्ती मनवाना चाहते हैं और लोगों के न मानने पर झगड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं। ए भाई, ऐसे लोग एक-दूसरे के ख़ून के प्यासे हो जाते हैं और सिर्फ़ बात मनवाने के

लिये एक-दूसरे पर तोप और बम चलाते हैं।' कबूतर ने बात आगे चलाते हुये कहा कि —

'इसके बजाय अगर लोग अपनी नमेल खानेवाली बातें, इसी तरह अंगूर के दानों का नाश्ता करते हुये, एक ही मेज़ पर बैठ कर हर सुबह शाम हँस कर कह डालें तो उन्हें अपने मन की हविस पूरी करने के लिये, लाठी के सहारे, अपनी बात न सीधी करनी पड़े। लेकिन ए पंछी! कौन किसे समझावे? सारे कुवें में ही परमात्मा ने भग घोल रखी है और तमाशा यह है कि जो बिना भंग पिये बोलने की कोशिश करता है, उसे बावला तक कह डालने में लोग नहीं चूकते।'

काठ के उल्लू ने जवाब में सर हिलाया और बोला कि —

'ऐ मेरे बिछुड़ने वाले नौजवान! तू सच ही कहता है। जब तक इंसान अपने अन्दर इस तरह के चटख़ारदार किस्से कहने का फ़न नहीं पैदा कर लेगा तब तक उसकी बातों में पैनापन नहीं आयेगा और वह लामुहाला तोप और बन्दूकों के सहारे ही ढूँढ़ता फिरेगा। उसे कभी यक़ीन नहीं होगा कि सिर्फ़ ज़बान से भी दुनिया पर असर डाला जा सकता है। तो ए नौजवान लक्का कबूतर! तू जहाँ कहीं भी जाना, इस बात को हमेशा याद रखना कि तू शान्ति के नाम पर उड़ाया गया है और वह अमन की देवी तोप बन्दूक के धड़ाकों से नहीं आती, बल्कि ऐसी ही मीठी बातों की डोर पकड़ कर ज़मीन पर उतरती है जिसके सहारे हम लोगों ने यह मनहूस लम्बी, कालीरात देखते-देखते काट डाली है।'

इस बीच आसमान में पूरी तरह से लाली छा गई। रामलाल हलवाई की दूकान की भट्ठी सुलगने पर धुआँ उठकर आसमान की ओर बढ़ने लगा। उसे सुबह सुबह ही जलेबियाँ बनाकर ग्राहकों के लिये तैयार करनी थीं। दीनदयाल की घड़ी का एलार्म बोल चुका था और वह उठकर फिर अपनी किताबों में ऊँघते-जागते मत्था पटक रहे थे। दूधवालों की सीटियाँ और बाल्टियों की खड़क सुनाई पड़ने लगी थी। खिड़की की दराज़ों से सुबह के ताजे अख़बार आ आ कर गिरने लगे थे।

सूरज आसमान में निकल आया था।

कबूतर ने काठ के उल्लू से कहा कि—

'अच्छा मेरे बुज़ुर्गवार। तूने जो कुछ नसीतें मुझे दी हैं उन्हें मैं हमेशा याद रखूँगा और अमल में लाऊँगा। मुझे अब जाने की इजाज़त दे, क्योंकि

आज के एक इश्तहार पर छपाने के लिये अपनी एक फ़ोटो मुझे खिंचवानी है, नहीं तो वह पर्चा कल तक छप न पायेगा।'

काठ के उल्लू ने कहा कि—

'ऐ भाई कबूतर! किस तरह तुझसे कहूँ कि तू जा! लेकिन तुझे जाना ही है और पर्चे पर तेरी फ़ोटू भी छपना भी ज़रूरी ही होगा, इसलिये तू जा और दुनिया की भलाई के लिये काम कर! मेरी याद हमेशा अपने मन में बनाये रखना।'

कबूतर ने 'अलविदा' कहा और फर्र से अपने पंख झाड़ता हुआ रोशनदान से बाहर निकल गया। काठ का उल्लू अपनी जड़ आँखों से उधर देखता रहा। कुछ देर तक आसमान में उसे धुयें की एक सफेद लकीर-सी उड़ती दिखाई पड़ती रही।

धीरे-धीरे काठ के उल्लू ने अपनी गरदन उस रोशनदान की तरफ से मोड़ ली और एक गहरी साँस लेकर वह उदास-मन से, सिर को फिर ज्यों-का-त्यों करके बैठ गया। काठ के पंछी की जड़ और प्रकाशहीन आँखें रात भर बसे बिदेसी-मेहमान की याद में एक बार जैसे पसीज उठीं।